भूमिका

वर्ष-1947 : भारत देश की आजादी के साथ ही इस मुल्क में एक भयंकर तूफान आया। वह तूफान था विभाजन का । भारत रूपी एक शरीर को दो हिस्सों में काट कर अलग-अलग कर दिया गया। एक तो रहा हिन्दुस्तान और दूसरे का नामकरण हुआ पाकिस्तान। इसी दौर में *साम्प्रदायिकता का विषैला भूचाल* आया ऐसा विशाल भूचाल कि पाकिस्तान में रहने वाले अल्पसंख्यक सिन्धी हिन्दूओं को बहुसंख्यक सिन्धी सम्प्रदाय वालो ने मारना, पीटना व हत्याएँ शुरू कर दी। इस कदर खून-खराबा होने लगा कि हिन्दू सिन्धी अपने ही देश से अलग हुए हिस्से हिन्दुस्तान मे आ गये और वे पेड़ के पत्तों की मानिन्द बिखर गये कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी व कच्छ से लेकर नागालैण्ड तक किसी को कुछ खबर नहीं थी कि वे अपना पैत्रिक घर छोड़कर किस गाडी से, किस शहर में, किस गाँव मे किस ढ़ाणी में या किस स्टेशन पर उतरे हैं।

भूख से तड़पते हुए बच्चों, बेबसी से रोटी-रोजी को निहारती नारियों के आंसूओं को देखते हुए सिन्धी समुदाय में एक आत्म-विश्वास जागा और उन्होंने सघर्ष का रास्ता अपनाया। सिन्ध के बड़े-बड़े अमीरो ने यहाँ आकर फुटपाथों पर सब्जियाँ बेची, अपने पास सैकडो नौकर-चाकर रखने वालो ने यहाँ आकर मामूली सी नौकरी की, और कदम-कदम पर बिछे काँटो को दूर करते हुए ऊबड़-खाबड रास्तो से चलते गए ... । चाहे तूफान हो, आधी हो, मूसलाधार वर्षा हो, या भीषण गर्मी, सिन्धी हारा नहीं बीच-बीच में टूटन जरूर आई, लेकिन फिर उनकी आत्मा से रह-रहकर आवाज आती रही अरे तुम "अमर वीर झूलेलाल" के वंशज के हो, उठो जागो और आगे बढ़ो ।

सिन्धी आगे बढ़ता गया विभाजन के 50- वर्षों के अन्तराल में इस समुदाय ने जिन्दगी की मजिले *तय की, गिर पडे, गिरकर उठे और उठकर चले, और अब तो वे चलते हो जा रहे हैं सम्पन्नता रूपी अशर्फियों* के थैले को हाथ में लिए अपनी भाषा सस्कृति रूपी विरासत के झोले को कधे पर लटकाकर शमशानों की ओर ।

शमशानों की ओर जाते सिन्धी समुदाय को देखते हुए मुझे कई वर्षों से एक पीडा सता रही थी कि सबकुछ पाकर भी आखिर सिन्धी समुदाय दिन-ब-दिन गरीब क्यो होता जा रहा है। कारण खोजते-खोजते मैं पहुँचा उस पत्रकारिता की दुनियाँ मे, जहाँ रहकर सिन्धी समुदाय ने बडे साहस से आजादी के लिए लड़ाई *लडी थी। सिन्ध के अखबार नवीजों मे वीरूमल बेगराज, तोलाराम मेघराज बालानी,* महाराज गोर्वधन शर्मा, चेटूमल हरीराम, जेठमल परसराम गुलराजाणी, महाराज लोकराम शर्मा, भाई विष्णु शर्मा, जयरामदास दौलतराम, घनश्याम शिवदासाणी, चौईथराम गिदवानी, चौईथ वलेछा, हीरानन्द करमचन्द आदि-आदि सिन्धी पत्रकारों ने जेलो की यातनाएं सही। आजादी के आन्दोलन में सिन्ध प्रवेश से निकलने वाली पत्र-पत्रिकाओं में सिन्ध सुधार, कराची एडवरटाईजर सिन्ध टाईम, सिन्धी, माता, सदा-ए-सिन्ध, हिन्दवासी, हिन्दू आदि अखबारों ने इसलिए लड़ाई नहीं लडी थी कि उन्हें अपने ही घर बेदखल कर दिया जाएगा और उन्हें वहाँ पहुँचा दिया जाएगा जहाँ उनके नाम की कोई जमीन भी नहीं होगी।

कदम-कदम पर कुर्बानियों के दौर से गुजरा सिन्धी समुदाय आसमान से गिरे अन्न के दानों की तरह आज भारत देश में बिखरा हुआ है, और वहीं पर वह अपने ही लोगों से अलग-थलग रहकर पोषित हो रहा है, टूट रहा है, जूझ रहा है या गल रहा है, वह उसे ही खबर है औरों को नहीं। अब वह अपने सम्प्रदाय वालो से एकत्रित हो भी नहीं सकता, जब तक उन्हें भारत देश मे एक अलग से "सिन्ध" प्रदेश नहीं मिल जाता। वह उन्हें मिल भी नहीं सकता क्योकि उनके पास कोई राजनैतिक संरक्षण नहीं है और न ही उनके पास अब वह साहस ही रहा है कि वे अपनी अलग से राजनैतिक पार्टी गठित कर लडाई लड सके, और

भारत के किसी एक भाग को हांसिल कर उसे सिन्ध प्रदेश कहकर यह कहें कि हम इस प्रदेश के रहने वाले हैं। हाँ कहने को कह सकते हैं कि विभाजन के उपरान्त उन्हें सिन्ध नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान मिला, और इसी हिन्दुस्तान के अलग-अलग प्रदेशों से वे अरबी एवं देवनागरी लिपि में सिन्धी पत्र-पत्रिकाएँ निकालकर उनके माध्यम से वे सिन्धी भाषा संस्कृति को जीवित रखने के लिए प्रयत्न तो कर रहे हैं, लेकिन मैं देख रहा हूँ सिन्धी भाषी अमीर तो हो गए हैं लेकिन उनकी भाषा गरीब होती जा रही है। इसी बात को मद्देनज़र रखते हुए मैंने आज से कोई आठ वर्ष पूर्व भारत में सिन्धी पत्रकारिता शीर्षक से पुस्तक लिखने का संकल्प लिया। जहाँ से जो भी सूचना मिलती गई एकत्रित करता गया। वर्ष 1993 में वे बीमार हो गया, फिर भी लड़ता रहा कि किसी तरह से यह पुस्तक पूरी करूंगा। वर्ष 1994 में मेरे बेटे संकल्प के साथ मैं दुर्घटनाग्रस्त हो गया। ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है वह बच गया, लेकिन मेरे दोनों पैर टूट गये।

महीनों बिस्तर पर पड़ा रहा। मेरी प्रेरणादायिनी पत्नी सुशीला ने मेरे हौसले को गिरने नहीं दिया। कुछ सगे भाई-बन्धु तक किनारा कर गये। संत अमरीक सिंह बेदी व सिद्धेश्वर मंदिर के भोलेनाथ के अलावा मित्रों में डा. जी.टी. भट्ट, हासानन्द जेठानी, आर. एल. गुप्ता, ओमप्रकाश बग्गा, महेन्द्र मिश्रा, मनोहरलाल शर्मा तथा डा. नारायण रूपानी ने मेरी हौसला अफज़ाई करने में कसर नहीं छोड़ी। वे मेरे गिरे मनोबल को पोषित करते रहे और देखते ही देखते मैंने यह पुस्तक तैयार करली। बिस्तर से उठा प्रकाशकों से सम्पर्क किया। एक प्रकाशक तैयार हुआ लेकिन बाद में उसने छपवाने से आनाकानी करना प्रारंभ कर दिया तो मैंने भी उसे छोड़ दिया और इस पुस्तक को स्वयं की बचत से ही छपवाने का विचार किया लेकिन पारिवारिक व आर्थिक उलझनों के रहते हुए वह काम नहीं कर सका, तो फिर यही सोचकर पुस्तक को छोड़ दिया कि जिस घड़ी ईश्वर चाहेगा तब ही यह पुस्तक छपेगी, लेकिन छपेगी जरूर।

लगभग चार वर्ष पूर्व दिल्ली से जयपुर आए मेरे एक सिन्धी भाषी साहित्यकार मित्र हीरो ठाकुर से इस पुस्तक की चर्चा की, उन्हें यह विषय व पुस्तक पसन्द आई, वह इसलिए कि इस विषय पर शायद विश्व में छपने वाली यह हिन्दी की पहली पुस्तक है। हीरो ने कहा कि इसके लिए दो शब्द मैं लिखूंगा। यह कहकर हीरो दिल्ली चला गया, फिर न तो उसने इस बारे में कोई चर्चा की और न ही कोई खत-खिताबत। बहरहाल वक्त बढ़ता गया कि कोई डेढ़ वर्ष पूर्व एक दिन मेरी मुलाकात यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा.लि. के मालिक चेतन जैन से हुई और इस पुस्तक पर चर्चा हुई। वे विषय देखकर इस पुस्तक को छापने के लिये तैयार हो गये। चेतनजी हरदम मुस्कराने वाले उस गम्भीर व्यक्तित्व वाले प्रकाशक का नाम है जिन्होंने अपने वायदे को पूरा करते हुए अन्ततः इस पुस्तक को छपवा ही दिया। उन्हें इस पुस्तक के बिकने पर कई आशंकाएँ है कि सम्भवतया मेरी यह पुस्तक बाज़ार में बहुत अधिक नहीं चल पाएगी, लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि यह पुस्तक चलेगी और खूब चलेगी। इस पुस्तक को मैं पहला नहीं तीसरा संस्करण मानता हूँ क्योंकि यह तैयार होकर भी इसके पूर्व दो बार छपते-छपते रह गई है ... यह भी ईश्वर की मर्जी से ही हुआ है, इसमें भी कुछ न कुछ अच्छाई ही होगी। खैर ... अब तो यह पुस्तक ईश्वर की झोली में है और वहाँ से लेकर आपने अपने हाथों में रखी हुई है ... आप इसे पढ़ रहे हैं, और जब इसे पढ़कर समाप्त कर लें तो मुझे अवश्य सूचित करें कि मेरा वह अदना सा प्रयास कैसा है ?

बहरहाल यदि यह पुस्तक आपको अच्छी लगी है तो उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। यदि अच्छी नहीं भी लगी है तो उसके लिए भी बहुत-बहुत धन्यवाद क्योंकि आपने अपने कीमती समय में से वक्त निकालकर इस पुस्तक को पढ़कर मनन करने में जो समय जायर किया है उसके लिए मेरी नज़रों में आप मेरी नजरों में धन्यवाद के पात्र तो हैं हीं।

कन्हैया अगनानी

413, आदर्श नगर, गीता भवन के पास ,
जयपुर-302004 ✆ 666743, 664470

विषय-सूची

अध्याय-1

संचार माध्यम और भूमिका

हमारा भारत देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है । भारत के संविधान में बोलने और अभिव्यक्ति की पूरी आजादी की गारंटी है । वास्तव में 'फोर्थ इस्टेट' अर्थात् पत्रकारिता सभी व्यवहारिक पहलुओ की नजर से उन चार खंभों में से एक है, जिन पर हिन्दुस्तान का लोकतांत्रिक ढांचा टिका हुआ है । यह भी सर्वमान्य सत्य है कि भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास के लिए लोगो को जानकारी और शिक्षित तथा प्रेरित करने में प्रचार के माध्यमो ने अहम् भूमिका निभाई है ।

हमारे इस देश में वर्ष 1987 के अंत तक प्रकाशित हो रहे समाचार पत्रों की संख्या 27,685 थी, जबकि 1986 मे 26,614 अखबार प्रकाशित हुए थे । इस प्रकार सिन्धी, हिन्दी, अग्रेजी आदि सभी भाषाओ के पत्रों की संख्या में कुल मिलाकर कोई चार प्रतिशत की वृद्धि हुई थी । अब भारत के समाचार पत्रो के पंजीयन की 40 वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रेस इन इडिया 1996 के अनुसार समाचार आधारित पत्र-पत्रिकाओ की संख्या अब बढ़कर 37 हजार 254 हो गई है। वर्तमान समय मे समाचार पत्रों की तीव्र गति से हो रही वृद्धि को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ से दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, पाक्षिक, सप्ताह में तीन बार या दो दिन में निकलने वाले समाचार-पत्रो व पत्रिकाओं की संख्या कोई चालीस हजार के आसपास अवश्य होगी । इनमें से इनी-गिनी पत्रिकाएँ सरकारी विभागो, सरकारी संगठनो आदि द्वारा निकाली जाती हैं, बाकी के अखबार निजी लोगों द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं।

सरकारी प्रचार माध्यमों में से पत्र सूचना कार्यालय सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और विभिन्न क्षेत्रों की उपलब्धियों के बारे में देश की सभी भाषाओ के अनुसार पत्रो व पत्रिकाओं को जानकारी देने वाली भारत सरकार की केन्द्रीय एजेन्सी है । यह कार्यालय प्रतिदिन अखबारों, समाचार एजेन्सियों, समाचार संबंधी पत्रिकाओं और आकाशवाणी

तथा दूरदर्शन को प्रेस विज्ञप्तियाँ भेजता है । इस विभाग के पास सारे देश में सूचनाएँ भेजने के लिए टेलीप्रिन्टर तथा प्रमुख स्थानों के लिए 'एयर बेग' की सुविधाएँ मौजूद हैं तथा देश के सभी शाखा कार्यालयों में फैक्स तथा कम्प्यूटर सेवाएँ भी उपलब्ध हैं। पत्र सूचना कार्यालय दस हजार से अधिक पत्र-पत्रिकाओं को विशेष लेख और फोटोग्राफ सहित प्रेस सामग्री भेजा करता है ।

पत्र सूचना कार्यालय का एक और दायित्व सरकार की नीतियों और गतिविधियों की व्याख्या करना तथा उन्हें सभी मंत्रालयों/विभागों के साथ सम्बद्ध है। ये अधिकारी अपने-अपने विभागों की नीतियों और कार्यक्रमों की व्याख्या करते हैं तथा समाचार पत्रों को तथ्यात्मक सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं । सिन्धी आदि अखबारों को सूचनाएँ पहुँचाने के लिये बाकायदा अनुवादक नियुक्त किए गए हैं ।

पत्र सूचना कार्यालय प्रेस विज्ञप्तियाँ, प्रेस नोट, हैंड आउट, संदर्भ सामग्री, विशेष लेख और फोटोग्राफ अखबारों को भेजा करता है । ये सामग्री अंग्रेजी, हिन्दी, सिन्धी, उर्दू तथा अन्य स्वीकृत सभी भाषाओं में जारी की जाती है । यह कार्यालय पत्रकार सम्मेलनों और ब्रीफिंग का आयोजन भी किया करता है ।

पत्र सूचना कार्यालय समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों को विकास परियोजनाओं, खासकर जनजातियों और पर्वतीय इलाकों के संवाददाताओं के दलों को देश के विकसित इलाकों में ले जाने का कार्य भी करता है । इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है ।

यह कार्यालय देश में सभी पत्र-पत्रिकाओं को सरकारी गतिविधियों से संबंधित चित्र (फोटोग्राफ्स) सप्लाई करता है । देश में क्षेत्रीय और शाखा कार्यालयों को फोटो भेजने के लिए यहाँ अत्याधुनिक उपकरण भी लगे हुए हैं ।

पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार के लिए प्रत्यायित संवादाताओं, छायाकारों और तकनीशियनों को, समाचार एकत्रित करने से संबंधित सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। थोड़े समय के लिए भारत आने वाले विदेशी संवाददाताओं और छायाकारों को अस्थाई रूप से प्रत्यायित करने की भी सुविधाएँ उपलब्ध कराता है । यह विभाग भारत सरकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारत देश के सिन्धी, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषाई पत्रकारों को विदेशों में भेजा करता है तथा विदेशी पत्रकारों को भारत बुलाया करता है ।

पत्र सूचना कार्यालय के बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और चंडीगढ़ में चार क्षेत्रीय कार्यालय हैं । इसके अलावा 27 शाखा कार्यालय तथा पांच शाखा कार्यालय-सह सूचना केन्द्र हैं। ये सभी कार्यालय मुख्यालय के साथ टेलीप्रिन्टर नेटवर्क से जुड़े हैं । आईजल और पोर्टब्लेयर में इसके दो सूचना केन्द्र भी हैं । अब पत्र सूचना कार्यालय में विभिन्न कामों के लिए कम्प्यूटर व फैक्स का भी इस्तेमाल किया जाने लगा है, ताकि समाचार-पत्रों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो तथा वक्त-दर-वक्त उन्हें तुरन्त प्रभाव से सामग्री उपलब्ध कराई जा सके ।

सभी विकसित देशों में समाचार पत्रों की मानिन्द प्रसारण माध्यम का भी बहुत अधिक महत्त्व है । भारत देश में पहला प्रसारण जुलाई 1927 में हुआ था, किन्तु आकाशवाणी के संगठन की स्थापना वर्ष 1936 में आजादी से पूर्व में हुई थी । आजादी के समय इस देश में आकाशवाणी के केवल छह केन्द्र थे, जो इस समय बढ़कर 95 को भी पार कर गए हैं । प्रसारण हेतु भारत में मीडियम वेव, शॉर्ट वेव और एफ.एम. के ट्रांसमीटर हैं ।

यहाँ का आकाशवाणी वर्तमान समय में विश्व में सबसे बड़े प्रसारण संगठनों में से एक है । इसके कार्यक्रम देश के लगभग 86 प्रतिशत क्षेत्रों में से 95 प्रतिशत जनसंख्या से भी अधिक लोगों द्वारा सुने जा सकते हैं । आकाशवाणी की विज्ञापन प्रसारण सेवा वर्ष 1957 में प्रारंभ हुई थी और इसके इस समय 30 से भी अधिक प्रसारण केन्द्र हैं ।

आकाशवाणी के कई कार्यक्रम विशेष वर्गों के लिए प्रसारित होते हैं । इनमें युवकों के लिए युववाणी, स्कूलों के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम, ग्रामीण कार्यक्रम, महिला कार्यक्रम और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि शामिल हैं । ये कार्यक्रम अन्य भाषाओं के अलावा सिन्धी में भी प्रसारित किए जाते हैं ।

आकाशवाणी का राष्ट्रीय चैनल मई 1988 में शुरू हुआ था । इसमें अच्छे स्तर के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं, जिनमें सूचना और मनोरंजन दोनो का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है ।

प्रचार माध्यमों में से भारत मे टेलीविजन की शुरूआत सितम्बर, 1959 में प्रायोगिक तौर पर प्रारंभ हुई थीं । वर्ष 1965 में दिल्ली में इसकी नियमित दैनिक सेवाएँ आरम्भ हो चुकी थी । बम्बई केन्द्र सन् 1972 मे चालू हुआ । एक जून, 1988 तक दूरदर्शन के 340 ट्रांसमीटर बन चुके थे, जिनमें से 53 उच्च शक्ति के, 237 कम शक्ति के, 49 बहुत कम शक्ति के ट्रांसमीटर और ट्रांसपोजर थे । इस समय दूरदर्शन के कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए उच्च, कम और बहुत कम शक्ति के ट्रासमीटरों संख्या में वृद्धि हो चुकी है तथा अब दूरदर्शन के कार्यक्रम भारत देश की अधिकांश आबादी द्वारा देखे जा सकते हैं ।

इस देश में रंगीन टेलीविजन की शुरूआत वर्ष 1982 में एशियाई खेलों के मौके पर प्रारंभ की गई थी । उसी वर्ष माइक्रोवेव सम्पर्क स्थापित किये गये थे । दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में दूरदर्शन का दूसरा चैनल आरम्भ किया जा चुका था। तब इन नगरों और आसपास के क्षेत्रों के दर्शकों की रुचि के कार्यक्रम दिखाए जाते थे, लेकिन अब इसका इस कदर विस्तार हो चुका है कि लगभग पूरा देश अपनी सुविधानुसार एवं इच्छानुसार विस्तृत चैनलों पर अपनी-अपनी पसन्द के कार्यक्रम देख सकते हैं । इनमें सिन्धी भाषा के कार्यक्रम भी दिखाए जाते हैं ।

दूरदर्शन द्वारा प्रतिदिन नियमित समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं । समाचारों के अलावा दिन भर कोई न कोई कार्यक्रम दूरदर्शन के अलग-अलग चैनलों पर दर्शाये जाते हैं तथा सिन्धी भाषा में नाटक, वार्ताएँ आदि भी दिखाई जाती हैं । इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर संसद अधिवेशन के दिनों में हिन्दी तथा अंग्रेजी में संसद समाचार भी प्रसारित किये जाते हैं ।

दूरदर्शन का दिल्ली केन्द्र समाचार इकट्ठे करने और उनके प्रसारण का मुख्य केन्द्र है, हालांकि अन्य केन्द्रों में भी अलग-अलग भाषाओं में समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं ।

दूरदर्शन से कुल प्रसारण समय से कोई तीन-चार प्रतिशत से भी कम समय में विज्ञापन प्रसारित किये जाते हैं । विज्ञापन प्रसारण के सम्बन्ध में एक संहिता बनी हुई है, जो आकाशवाणी और दूरदर्शन दोनों पर लागू होती है । दूरदर्शन पर विज्ञापन सेवा वर्ष 1976 में शुरू हुई थी । विज्ञापनों से होने वाली आय में लगातार वृद्धि हुई है तथा दिन-ब-दिन हो रही आय का हिसाब लगाया जाय तो वह कई करोड़ों रुपयों से भी अधिक होगी ।

प्रचार के इस माध्यम से प्रायोजित कार्यक्रम, फिल्मों तथा फिल्मों पर आधारित कार्यक्रमों के अलावा दूरदर्शन पर शैक्षणिक, ग्रामीण तथा खेल संबंधी कार्यक्रमों को भी समुचित समय दिया जाता है तथा अन्य भाषाओं को भी दूरदर्शन द्वारा समय दिया जाता रहा है । दूरदर्शन ने एक गैर-सरकारी संस्था, लोक सेवा संचार परिषद् को राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण, उपभोक्ता जागृति, नशीले पदार्थों के सेवन जैसे आम लोगों के हितों के विषयों पर छोटे विज्ञापन तथा लघु फिल्में तैयार करने के लिये प्रायोजित किया है ।

भारत देश की राजधानी दिल्ली में सीरीफोर्ट में केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केंद्र के अलावा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को निर्मित करने हेतु अन्य कई केन्द्र हैं, जिनमें पूर्ण विकसित स्टूडियो सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं ।

भारत सरकार के प्रचार माध्यमों में विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय भारत सरकार की केंद्रीय विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार एजेंसी है । यह निदेशालय विभिन्न मंत्रालयों विभागों की ओर से बहु-माध्यम प्रचार अभियान आयोजित करता है । सभी भाषाओं के समाचार पत्रों के लिए विज्ञापन तैयार किए जाते हैं और देश भर में सभी राष्ट्रीय भाषाओं में इन्हें जारी किया जाता है । इसके अलावा पोस्टर, पत्रक, इश्तहार, पुस्तिकाओं, कैलेण्डर आदि के रूप में मुद्रित सामग्री सभी भाषाओं चाहे वह हिन्दी भाषा हो या सिन्धी भाषा, में तैयार की जाती है । वह सामग्री कुछ निश्चित लोगों को नियमित रूप से मुफ्त वितरित की जाती है । यह निदेशालय बड़े बोर्डो, सिनेमा, स्लाइड, कियोस्क, वाल पेन्टिगों के अलावा बसों, ट्रामों, रेल डिब्बों पर लिखे संदेशों के माध्यम से हर

भाषा मे प्रचार करता है । आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए विज्ञापन तथा प्रायोजित कार्यक्रम भी इस निदेशालय द्वारा तैयार किए जाते हैं । यह विभिन्न मंत्रालयों/विभागो की ओर से रेडियोस्पाट, वीडियोस्पाट तथा लोगो को प्रेरणा देने वाले वृत्तचित्र तैयार कराता है और उसे निःशुल्क आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्रों को उपलब्ध करता है।

इस निदेशालय के पास डाक से सीधे सामग्री प्राप्त करने वालों की सबसे बडी सूची है। कम्प्यूटर की सहायता से सामग्री भेजने की इस व्यवस्था के अन्तर्गत वे लाखो की संख्या में उपलब्ध सूची वाले पतों पर सामग्री भेजने का कार्य करता है ।

इस निदेशालय में एक प्रदर्शनी विभाग भी है जिसकी समूचे देश में प्रदर्शनी इकाइयां हैं । इनकी ओर से राष्ट्रीय एकता तथा विकास सम्बन्धी गतिविधियों पर देश के विभिन्न भागो में फोटो प्रदर्शनियां लगाई जाती हैं ।

सूचना एव प्रसारण मत्रालय भारत सरकार के प्रचार माध्यमो में से क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, ग्रामीण क्षेत्रो में प्रचार करने का देश का सबसे बड़ा संगठन है । यह फिल्मों, गीत और नाटक कार्यक्रमो, परम्परागत कला शैलियो, मुद्रित सामग्री के वितरण, फोटो प्रदर्शनियो, विचार-विमर्श, गोष्ठियों, जन-सभाओं तथा व्यक्तिगत रूप से हर भाषा मे बातचीत के जरिए सरकार की बुनियादी नीतियो तथा कार्यक्रमो को निचले स्तर तक पहुँचाता है । इस निदेशालय के अधिकारी सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों के संबंध मे लोगों की प्रतिक्रिया का पता लगाते हैं और ये प्रतिक्रिया आवश्यक कार्यवाही के लिए संबधित विभागों तक पहुँचाई जाती है । भारत देश मे इसके लगभग 22 क्षेत्रीय कार्यालय हैं तथा कोई 257 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां हैं । प्रत्येक इकाई के पास फिल्म प्रदर्शन उपकरण वाहन, जेनरेटर, दृश्य-श्रव्य उपकरण तथा मुद्रित सामग्री उपलब्ध है।

प्रचार के माध्यमो में गीत और नाटक प्रभाग मनोरंजन कार्यक्रम के माध्यम से विकास की गतिविधियों की जानकारी लोगो तक पहुँचाया करता है । इसमे कठपुतली, नाटक, नृत्य, नाटक, हरिकथा और प्रकाश तथा ध्वनि कार्यक्रम जैसी परम्परागत और आधुनिक विधियां शामिल हैं । भारत सरकार के इस प्रभाग के पास इस समय कोई 40 विभागीय मंडलियां और लगभग 575 पजीकृत मडलियां हैं जो ग्रामीण क्षेत्रो मे नाटक, कठपुतली कार्यक्रम, नृत्य और हरिकथा जैसे कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं ।

इस विभाग का मुख्यालय दिल्ली में है । इसके कोई आठ केंद्र तथा नौ उपकेन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली तथा बंगलौर मे दो प्रकाश एव ध्वनि केंद्र तथा रांची में एक जनजातीय केद्र है । इन केद्रों तथा उपकेद्रों मे हिन्दी के अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर अन्य भाषाओ मे भी प्रचारात्मक कार्यक्रम तैयार किए जाते है ।

भारत सरकार का प्रकाशन विभाग नवीनतम् और सही सूचना देने के उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए राष्ट्रीय महत्त्व की पुस्तको तथा पत्रिकाओ का प्रकाशन, वितरण और बिक्री करता है । यह अंग्रेजी, हिन्दी, सिन्धी तथा अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओ

में पुस्तकें और पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है । इनमें बाल साहित्य से लेकर प्रमुख नेताओं और विद्वानों की रचनाएँ आदि भी शामिल हैं । विभाग अब तक हजारों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है । प्रकाशन विभाग ने सम्पूर्ण गांधी वाङ्गमय के कई खण्ड प्रकाशित किए हैं । यह अपनी तरह की विश्व की सबसे बड़ी प्रकाशन योजना है। विभाग की ओर से 'आधुनिक भारत के निर्माता' पुस्तकमाला के अन्तर्गत भारत के महापुरुषों की जीवनियां भी प्रकाशित की जाती हैं ।

यह विभाग पत्रकारिता, प्रचार, विज्ञापन, प्रसारण, दूरदर्शन, फिल्म, मुद्रण और प्रकाशन पर हर वर्ष भारतेन्दु हरिशचन्द्र पुरस्कार प्रदान करने के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित किया करता है । प्रविष्टियों में न केवल छपी हुई पुस्तकें ही बल्कि पांडुलिपियों को भी स्वीकार कर पुरस्कृत हुई पुस्तकों एवं पांडुलिपियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया करता है । कई बार पुरस्कृत पाण्डुलिपियों को स्वयं भी छपवाया करता है तथा लेखकों को उचित राशि प्रदान किया करता है ।

प्रचार माध्यमों में भारत सरकार का फिल्म प्रभाग वृत्त चित्र और समाचार चित्रों के निर्माण और वितरण करने वाली सबसे बड़ी राष्ट्रीय समिति है । वर्ष 1948 में स्थापित यह संस्था अब विश्व में लघु फिल्में बनाने की सबसे बड़ी संस्था हो गई है । फिल्म प्रभाग समाचार पत्रिका, वृत्तचित्र, क्षेत्रीय भाषाओं में ग्रामीण लोगों के लिए 16 एम.एम. के कथाचित्र, कार्टून फिल्में और कृषि रक्षा, परिवार कल्याण तथा भारत सरकार के अन्य अनेक कार्यक्रमों के बारे में शिक्षाप्रद फिल्में तैयार करता है । इसका उद्देश्य लोगों को नई जानकारी और विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना है । इन फिल्मों को देशभर के लगभग 13000 से अधिक सिनेमा घरों तथा फिल्म वाहनों द्वारा दिखाया जाता है ।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का फिल्म समारोह निदेशालय भारत में अन्तराष्ट्रीय फिल्म समारोह, राष्ट्रीय फिल्म समारोह और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न देशों के फिल्म सप्ताह आयोजित करने के साथ-साथ विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भाग लेता है । इसका उद्देश्य चाहे वह किसी भी भाषा में हों, अच्छी फिल्मों के निर्माण को प्रोत्साहन देना है ।

प्रचार माध्यमों में फोटो प्रभाग विभिन्न विकास परियोजनाओं तथा सरकार की अन्य गतिविधियों के बारे में प्रचार माध्यमों और अनेक विभागों की फोटो प्रतियाँ उपलब्ध कराता है । ये प्रभाग, पत्र सूचना कार्यालय की फोटो तथा टेलीफोटो सेवा इकाइयों से तालमेल रखता है । यह विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के प्रदर्शनी विभाग को भी फोटो सामग्री सप्लाई करता है। यह विभाग फोटो प्रतियोगिताएँ भी आयोजित किया करता है। इस विभाग द्वारा वर्ष 1997 में आज़ादी की स्वर्ण जयन्ती पर "आज़ादी के 50 वर्ष आज" विषय पर फोटो प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई थी जिसमें लगभग

4346 छायाकारों ने भाग लिया था। इस राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता मे रंगीन चित्र पर सिन्धी पत्र-पत्रिकाओ के जुड़े छायाकार जी. आर. आसनानी को प्रथम पुरस्कार हासिल हुआ जिन्हें नवम्बर 1997 में दिल्ली में विभाग द्वारा आयोजित विशेष समारोह में सूचना एवं प्रसारण विभाग के सचिव कमलाथन द्वारा 10,000 का नकद पुरस्कार, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। प्रतियोगिता में श्वेत श्याम चित्र पर दिल्ली के छायाकार वीरेन्द्र सिंह को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

भारत सरकार के प्रचार माध्यमों में से भारतीय जनसंचार संस्थान जन संचार की उच्च शिक्षा का केन्द्र है । इसमे प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा और गुट-निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेसी पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं । इसी तरह फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पूणे में फिल्म निर्माण के विभिन्न पहलुओ तथा दूरदर्शन के कर्मचारियो को प्रशिक्षण दिया जाता है । सरकार का ही अनुसंधान और संदर्भ प्रभाग सरकार की गतिविधियो तथा विकास परियोजनाओ के संबंध में पृष्ठभूमि सामग्री तैयार करता है । यह वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ 'भारत' की सामग्री भी जुटाता है ।

प्रचार माध्यमो मे भारत के समाचार पत्रो का पंजीयक देश भर मे प्रकाशित होने वाले सभी भाषाओं के समाचार पत्रो तथा पत्रिकाओ के पजीकरण का दायित्व निभाता है—यही नहीं देश के कोने-कोने से अलग-अलग भाषाओं मे निकल रहे हजारो पत्र-पत्रिकाओ की उनकी प्रसार-प्रचार सख्या के हिसाब से उन्हें अखबारी कागज के आवंटन की देखरेख भी यही कार्यालय करता है ।

हालांकि प्रचार के सभी माध्यमों की अपनी-अपनी विशिष्ठ भूमिका है तथा सभी माध्यम अपना-अपना दायित्व निभाते हुए जन-जन को सूचनाएँ, शिक्षा आदि देकर जागृत कर रहे है, लेकिन इनमे छपाई अर्थात् प्रिन्ट मीडिया की भूमिका एक तरह से स्थाई रूप से छप जाया करती है तथा रिकार्ड के रूप मे जमा रखी जाती है । प्रिन्ट मीडिया में समाचार-पत्र पत्रिकाओ ने भारत देश में 29 जनवरी, 1780 से एक अहम् भूमिका निभाई है, जिनमें सिन्धी भाषी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है यही नहीं सिन्धी भाषी समाचार पत्र-पत्रिकाओ ने विभाजन के बाद सिन्धी समुदाय को आजाद भारत में अन्य समुदायो के साथ जोड़ने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । जो आज तक जारी है ।

देश का पहला समाचार पत्र

भारत देश पर अंग्रेजों की हुकूमत के दौरान इस देश मे पहला समाचार पत्र 29 जनवरी, 1780 को जेम्स आगस्टन हिक्की ने 'बगाल गजट आव केलकटा जनरल एडवरटाईजर' नामक अखबार प्रकाशित कर भारत मे पत्र-पत्रिकाओ की नींव रखी थी। इस पत्र को 'बंगाल गजट' या 'हिक्की गजट' के नाम से भी जाना जाता है ।

हिक्की ने पत्र प्रकाशन से पहले ही सोच लिया था कि उसके इस कार्य का क्या परिणाम होने वाला है, सो उसने अपने पत्र के पहले ही अंक में लिखा था-मुझे अपने मन और आत्मा के लिए स्वतंत्रता मोल लेने की अपने शरीर का दास बनाने में प्रसन्नता होती है । परन्तु हिक्की ने यह कार्य अपने ही बलबूते पर किया था, क्योंकि अपने पत्र के नीचे उन्होंने छापा था कि-'राजनैतिक और व्यापारिक साप्ताहिक खुला तो सब पार्टियों के लिए है पर प्रभावित किसी से नहीं है ।'

'बंगाल गजट' दो पृष्ठों का साधारण सा अखबार था । यह 12 इंच लम्बा और 8 इंच चौड़ा तथा इसके दोनों और तीन कालम में छपाई होती थी । इस पत्र का विशेष स्तम्भ 'पोयटस कार्नर' था, जिसे हिक्की स्वयं लिखा करते थे । इस पत्र के अधिकांश: हिस्सों में विज्ञापन छपे रहते थे, जो इसे व्यापारिक पत्र सिद्ध किया करते थे और शेष में राजनैतिक टिप्पणियां रहने के कारण इसके राजनैतिक पत्र होने का कतई संदेह नहीं होता था ।

बंगाल गजट अखबार में हिक्की बंगाल के गर्वनर वारेन हेस्टिग्ज और उसी कौन्सिल के अन्य सदस्यों के बारे में तीव्र आलोचना किया करता था । लगातार अपमानजनक बातें छपते रहने के कारण हेस्टिग्ज ने इस अखबार के सम्पादक जेम्स आगस्टन हिक्की का हाथ तोड़ने का उपाय ढूंढा और उन दिनों समाचार पत्र सम्बन्धी नियमों के न रहने के कारण गर्वनर ने हिक्की को हर संभव परेशान करने का प्रयत्न किया ।

उस समय नियम यह था कि बिना टिकट लगाए समाचार-पत्र भेज दिया जाय और टिकट के दाम अखबार पाने वाले से वसूल किए जाएं, लेकिन वारेन हेस्टिग्ज ने 14 नवम्बर, 1780 को एक आदेश जारी किए कि इस प्रकार से 'बंगाल गजट' को डाक से कहीं भी न भेजा जाए । इस आदेश की कड़ी आलोचना हुई और हिक्की को जेल भेज दिया गया, परन्तु वह जेल में रहकर भी अपने अखबार को निकालता रहा ।

बंगाल गजट के सम्पादक जेम्स आगस्टन हिक्की को जेल में वन्द करने के उपरान्त भी इस अखबार को निकलता देखकर अप्रसन्न गर्वनर वारेन हेस्टिग्ज तथा उसकी कौंसिल के सदस्य तिलमिला उठे, परन्तु हिक्की ने सरकार का कोपभाजन बनना स्वीकार किया, लेकिन सरकार के खिलाफ लिखना बन्द नहीं किया ।

सरकार की इच्छा के विरूद्ध लिखावटयुक्त लगातार निकल रहे बंगाल गजट के प्रकाशक हिक्की को अब घाटा होने लगा था, लेकिन फिर भी हेस्टिग्ज ने हिक्की को क्षमा नहीं किया और जून 1781 में कारावास के साथ उसे पांच हजार रुपए से दंडित किया गया, परन्तु ये सब यातनाएँ निर्भीक पत्रकार हिक्की की कलम को रोक नहीं पाए और वह जब निरन्तर अपनी कलम से सरकार पर आक्रमण करता रहा तो मुख्य न्यायाधीश ने आदेश जारी कर सरकार से इस पत्रकार को पिटवाया । इस सबके बावजूद

भी जब हिक्की ने अपने विचारों मे परिवर्तन नहीं किया तो सरकार ने वर्ष 1782 में उसकी प्रेस जब्त कर उसे भारत देश से ही निकाल दिया था ।

इस तरह जेम्स आगस्टन हिक्की ने भारत से प्रथम समाचार पत्र 'बंगाल गजट' निकालकर भारतीयों में जो ज्ञान-ज्योति प्रज्जवलित की थी वह आंधी, तूफानों, आदि संघर्षों की परवाह किए बगैर स्वाधीनता सेनानियों के लिए प्रेरणा के रूप में जगमगाती रही-तब तक, जब तक अंग्रेज भारत छोड़कर नहीं चले गए, बल्कि आज तक भी जहाँ पत्रकारिता का नाम आता है तो आर्म आगस्टन हिक्की का नाम पत्रकारिता शब्द से पहले आता है। वह पत्रकारिता चाहे अंग्रेजी की हो, हिन्दी की हो, बंगाली की हो, पंजाबी की हो या सिन्धी भाषा की हो या अन्य किसी भी भाषा की हो, यह कहना गलत न होगा कि पत्रकारिता के साथ 'हिक्की' का नाम जुड़ा है तो हिक्की के साथ 'पत्रकारिता' का नाम जुड़ा है । दोनो एक दूसरे से इस कदर जुड़े हैं जैसे प्राणो के साथ शरीर । जिस तरह प्राणों को शरीर से जुदा नहीं किया जा सकता, उसी तरह हिक्की को पत्रकारिता से जुदा नहीं किया जा सकता अर्थात् दोनों एक दूसरे के पूरक ही नहीं बल्कि यदि यह कहा जाय कि दोनों मिलकर 'एक' हैं तो अनुचित न होगा।

आजादी से पूर्व भारतीय पत्रकारिता के उद्‌भव एवं विकास पर नजर डालने से हमें जानकारी मिलती है कि भारत में पहला समाचार पत्र निकालने वाला जेम्स आगस्टन हिक्की था, जिसने 29 जनवरी, 1780 को कलकत्ता से 'बगाल गजट या कलकत्ता जनरल एडवाईजर' नामक अखबार का प्रारंभ किया था, लेकिन हिन्दी का प्रथम पत्र जुगल किशोर शुक्ल के सम्पादन में 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई, 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था । इसी प्रकार यदि सिन्धी भाषा को लिया जाय तो वर्ष 1866 में कराची से सबसे पहले 'सिन्ध सुधार' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ था, लेकिन सिन्धी भाषी अखबारों की दुनियाँ में सबसे पहला समाचार पत्र वर्ष 1868 मे प्रकाशित हुआ था ।

भारतीय भाषाओं में निकलने वाले समाचार पत्रों के बारे में यदि इस बात को यूं लिया जाये कि भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि कही जाने वाली कलकत्ता से 'उदन्त मार्तण्ड' के उपरान्त वर्ष 1947 तक भारतीयों के हितो एवं परावलम्ब से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से अपनी अपनी नीतियों एवं विचारों के साथ अनेकानेक भाषाओं में अनगिनित पत्र एवं पत्रिकाएं निकली । इसके लिए हमें काल विभाजन करना ही होगा प्रारम्भयुग, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और गांधीयुग के रूप मे ।

अध्याय- 2

पत्रकारिता का विकास एवं प्रारम्भिक युग

प्रारंभकाल की कुल समयावधि है वर्ष 1826 से लेकर सन् 1867 तक की। इस अवधि में 'उदन्त मार्तण्ड' के उपरान्त 1845 में 'बनारस अखबार' निकला । इसके उपरान्त 11 जून, 1846 को कलकत्ता की इंडियन सन प्रेस से 'मार्तण्ड' नामक साप्ताहिक पत्र जो पांच भाषाओं में प्रकाशित हुआ था । यह पत्र दस पृष्ठों का हुआ करता था।

पत्र-पत्रिकाओं की विकास यात्रा दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ती गई और मध्य प्रदेश के इन्दौर से पंडित प्रेम नारायण ने सन् 1848 में आठ पृष्ठों वाला 'मालवा अखबार' निकालना प्रारम्भ कर दिया । सन् 1889 में कलकत्ता से ही 'जगदीप भास्कर' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ तो वर्ष 1850 में काशी बनारस से तारामोहन मैत्रेय नामक एक बंगाली सज्जन ने 'सुधाकर' नामक अखबार निकालना प्रारंभ कर दिया था ।

समाचार पत्रों की यात्रा में सन् 1852 में आगरा से एक अखबार निकला 'बुद्धिप्रकाश' इसके सम्पादक थे लाला जयसुखलाल । वर्ष 1853 में मध्यप्रदेश के ग्वालियर से 'ग्वालियर गजट' नामक अखबार प्रकाश में आया । इसके उपरान्त तो 1857 तक 'सर्वहितकारी', 'धर्मप्रकाश', तत्वबोधिनी' तथा 'सत्यदीपक' आदि-आदि अखबारों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विस्तार कर लिया और कलकत्ता के अलावा ग्वालियर, बरेली, अहमदाबाद, लाहौर, जम्मू-कश्मीर आदि नगरों से अखबारों का प्रकाशन होने लग गया ।

जिस बंगाल को हिन्दी का सर्वप्रथम साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' निकालने का गौरव प्राप्त हुआ, उसी बंगाल के कलकत्ता से प्रथम दैनिक 'सुधावर्षन' भी प्रकाशित हुआ । इस पत्र में अंग्रेजी सरकार को सचेत करने के अलावा समाज सुधार, रोचक तथा अखबारों में सभी प्रकार की सामग्री दी जाने लगी । बात 1857 की हैं दिल्ली से अजीमुल्ला खां ने हिन्दी और उर्दू भाषा में 'पयामे आज़ादी' का प्रकाशन करते हुए

जनता के दिलों में स्वतंत्रता की आग फूंक दी-और अब आता है वर्ष 1867 से 1900 तक का—

भारतेन्दु युग

इस युग को साहित्यिक एवं राजनैतिक समाचार पत्रों का मिश्रित युग कहा जाय तो अनुचित न होगा । इस सुनहरे दौर का प्रारंभ होता है 15 अगस्त, 1867 को काशी से भारतेन्दु हरिशचन्द्र द्वारा निकाली गई 'कवि सुधा वचन' पत्रिका से । इस पत्रिका के बारे में डॉ रामविसाल शर्मा का कहना था कि 'कवि सुधा वचन' का प्रकाशन करके भारतेन्दु ने वास्तव में एक नए युग का सूत्रपात किया है। इस पत्रिका का नाम सन् 1875 में 'सुधा' साप्ताहिक हो गया था । इस युग मे अलग-अलग समय पर निकली पत्रिकाओं आदि मे हरिशचन्द्र मेग्जीन, बालबोधिनी, धर्मामृत, जैन प्रकाश, हिन्दू प्रकाश, मित्र विलास, भारत मित्र, आनन्द कादम्बिनी, बिहारबंधु, ज्ञानचन्द, हिन्दी दीप्ती, प्रकाश, आर्यमित्र आदि पत्र-पत्रिकाओं के नाम गिनाए जा सकते हैं ।

भारतेन्दु युग में जहाँ पाठकों को पत्र-पत्रिकाओं में साहित्यिक, सामाजिक आदि रचनाएँ पढ़ने को मिला करती थीं तो वहीं उत्तर प्रदेश से 1885 में रामपाल भाटी द्वारा 'दैनिक हिन्दोस्तान' प्रकाशित किया गया । यह एक मर्यादित राष्ट्रवादी समाचार पत्र था जो जनभावनाओं को व्यक्त करने वाला विचारपूर्ण लेखो से भी सम्पन्न था तथा वर्ष 1890 में 'हिन्द बगवासी' पत्र निकला । इस काल में लोकमान्य तिलक का नारा 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगें' के उद्देश्य से निकले पत्रों में से 'केसरी' और 'मराठा' की भूमिका भी इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है ।

वर्ष 1867 से लेकर 1900 तक का पत्र-पत्रिकाओं का ऐसा दौर था, जिसमें सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनैतिक ही नहीं बल्कि जातीय एवं साम्प्रदायिक मतों का भी प्रचार करने वाली अनेकानेक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुई । अब आता है वर्ष 1900 से लेकर 1920 का—

द्विवेदी युग

इस युग का प्रारंभ किया था वर्ष 1900 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' का प्रकाशन करके । सरस्वती ने हिन्दी पत्रकारिता के स्तर को जहां ऊंचा उठाने में कसर न छोड़ी तो वहीं इसी काल में राजनैतिक संघर्षशील पत्रों ने भी अग्रेजों के खिलाफ झंडा नीचे नहीं होने दिया । भारतीयों मे राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले 1881 में पूना से प्रकाशित 'केसरी' के, वर्ष 1890 में जहां लोकमान्य तिलक पूर्ण सम्पादक बने थे तो वहीं इस युग में अन्य निकलने वाले पत्रो मे अम्बिका प्रसाद वाजपेयी द्वारा वर्ष 1907 में कलकत्ता से निकाला गया था-'नृसिंह' । शातिप्रसाद भटनागर के सम्पादन में निकाले गए 'स्वराज्य' इलाहाबाद से पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा प्रकाशित 'अभ्युदय'

तथा सन् 1909 में पंडित सुन्दरलाल ने 'कर्मयोगी' साप्ताहिक का शुभारम्भ किया था।

द्विवेदी युग में गणेश शंकर विद्यार्थी के 'प्रताप' तथा 'विश्वामित्र' आदि जुझारू राजनैतिक पत्रों के अतिरिक्त मासिक 'मर्यादा' जैसी साहित्यिक पत्रकाएँ ही प्रकाशित नहीं हुई थीं, बल्कि छायावादी काव्य आन्दोलन को मजबूत करने वाली 'इन्दू' जैसी पाक्षिक भी निकलना प्रारंभ हो गयी थी ।

भारत को आज़ादी मिलने से पहले पत्र-पत्रिकाओं की दुनिया में एक और युग का समावेश होता है यह कहलाया जाता है-सन् 1920 से लेकर 1947 तक का—

गांधी युग

इस युग में राष्ट्रीय आन्दोलन अपनी गति पकड़ चुका था तथा इस काल में हिन्दी के कई साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों का ही प्रकाशन नहीं हुआ था, बल्कि अन्य भाषाओं में सिन्धी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, अंग्रेजी एवं अन्य उर्दू आदि भाषाओं के पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ हो गया था । इस दौर में मोतीलाल नेहरू ने 'इंडिपेंडेंस' की स्थापना की तो महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया', 'हरिजन' एवं 'नवजीवन' आदि का प्रकाशन किया, उधर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'नेशनल हेरल्ड' की स्थापना की ।

वाराणसी से शिवप्रसाद गुप्त ने 'आज' का प्रकाशन शुरू किया। इसी दौर में माखनलाल चुतर्वेदी द्वारा निकाला गया पत्र 'कर्मवीर' अखबार तो था ही, साथ में यह था-साहित्यिक सामग्री में भी ओत-प्रोत समाचार पत्र।

इस काल में अन्य निकलने वाले पत्रों में अजमेर से 'राजस्थान केसरी', लाहौर से 'स्वयंसेवक' तथा किसानों की पैरवी करने वाला 'किसान' भी निकला । इस पत्र का कई वर्षों तक सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलनों से भी रहा । ज़बलपुर से 'तिलक' तथा मोठ जिला झांसी से गयाप्रसाद महोनियां ने 'नाई मित्र' नामक पाक्षिक का भी इसी गांधी युग में प्रकाशन प्रारंभ किया था । इस काल में चिकित्सा संबंधी भी दो अखबार निकले-एक मुज्जफरपुर से शिवचन्द्र मिश्र की सम्पादिकता में 'आयुर्वेद प्रदीप' तथा दिल्ली से निवारणचन्द्र भट्टाचार्य के सम्पादन में निकला था 'कविराज।' इसे आयुर्वेद कालेज तिब्बी प्रकाशित किया करता था ।

गांधीयुग में अनेकानेक प्रकार के निकलने वाले पत्रों में नवीन राजस्थान, नवभारत, संघर्ष, नवशक्ति तथा फिरोजदास मेहता द्वारा निकाले जा रहे, 'बाम्बे क्रानिकल' आदि हिन्दी की कई पत्रिकाएँ थीं जो राष्ट्रीय जागरण के राजनीतिक पक्ष पर विशेष बल दे रही थीं । गांधीजी पत्रकारिता को सत्य की विजय के लिए एक महत्त्वपूर्ण तथा अनिवार्य साधन मानते थे । अंग्रेजों के लिए आंखों की किरकिरी बने कई सम्पादकों को जेल में ठूस दिया गया था—इस युग में गांधीजी की नैतिक प्रेरणा और उनके स्वयं के प्रभाव से पत्रकारों ने अपने लिए आचार संहिता भी निर्धारित कर ली थी ।

स्वतंत्रता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है । कोई राज्य या देश ही नहीं बल्कि जीव जन्तु तक आजाद होने के लिए छटपटाते, संघर्ष करते हुए या तो दम तोड़ देते हैं या फिर आजाद होकर विचरण करते रहते हैं । हमारे देश में भारत को गुलामी की जंजीरो से मुक्त कराने में जहां स्वतंत्रता सैनानियों में भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, अमर शहीद हेमूं कालाणी, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि सैनानियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है तो वहीं समाचार पत्र पत्रिकाओं की दुनियां में प्रारंभिक युग हो या भारतेन्दु युग हो अथवा द्विवेदी युग हो या गांधी युग हो, इस दौर में निकलने वाले कई समाचार पत्र-पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को कदापि नहीं भुलाया जा सकता ।

उस दौर में समाचार-पत्रों का राष्ट्र हित के लिए कोई सकारात्मक उद्देश्य हुआ करता था । लोग किसी मिशन को लेकर अखबार या पत्रिका निकाला करते थे। अन्याय के खिलाफ समाज में से बुराइयो को दूर करने के उद्देश्य आदि जनहित में ही अखबार निकला करते थे । जुगल किशोर शुक्ल द्वारा 30 मई, 1826 को निकाले गये हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के पहले ही अंक में शुल्क जी ने घोषणा की थी कि- 'यह पत्र हिन्दुस्तानियो के हित हेतु प्रकाशित किया जा रहा है । दिल्ली से 1857 में अजीमुल्ला खां द्वारा निकाले गये पत्र 'पयामें आजादी' के मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था—

'आज शहीदो ने तुमको, अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी की जंजीरें, बरसाओ अंगारा
हिन्दू, मुस्लिम, सिख हमारा भाई प्यारा
यह है आज़ादी का झंडा, इसे सलाम हमारा'

यह वह समाचार पत्र है जिसमें बहादुर शाह जफर ने अपना यह ऐतिहासिक संदेश दिया था— ''हिन्दुस्तान के हिन्दुओ और मुसलमानों उठो, भाईयों उठो, खुदा ने इन्सान को जितनी भी बरकते अदा की हैं उनमें सबसे कीमती बरकत यदि कोई है तो वह है—आजादी।''

जहां आजादी के मिशन को लेकर अनेकानेक अखबारें निकला करती थी तो वहीं राजा राममोहनराय ने सतीप्रथा जैसी कुरीतियों के लिए अखबारों में आवाज उठाई तथा 1885 में राजा रामपाल सिंह द्वारा प्रारंभ किया गया 'हिन्दोस्तान' जो समाज सुधार संबंधी रचनाएँ प्रकाशित कर जन-जन की सेवा में जुटा रहा ।

मिशन को लेकर निकाले गये लगभग सभी समाचार पत्र-पत्रिकाअं
उस दौर में केवल अखबार निकालना ही देशभक्ति नहीं मानी जाती थी, ब
को पढ़ना तथा औरों को पढ़ाना भी देशभक्ति समझी जाती थी । कल
एक पैर जेल में रहता था तो एक पैर प्रेस में ।

पत्रकारिता में प्रवेश पूंजी का

वर्ष 1947 आज़ादी का बिगुल वजा । तिरंगा झंडा फहराया गया और साथ ही देश को आज़ादी दिलाने वाले पत्रकारिता के लक्ष्य भी बदल गये-मिशन को लेकर चलने वाले अखवार शनै: शनै: लगभग बन्द होते चले गए और पत्रकारिता में प्रवेश हो गया पूंजी का । जनसेवा का मिशन अब राष्ट्र विकास की वातें करने लग गया और सेवा का मिशन परिवर्तित हो गया एक व्यवसाय के रूप में । पत्रकारों को मालिक जब दबाने लगे तो अखबारों में पत्रकारों के लिए सेवाशर्तों के कानून बनना प्रारंभ हो गए तथा वक्त की बढ़ती तेज रफ्तार से नए-नए अखबारों ने जन्म लेना प्रारंभ कर दिया। इससे पत्रकार क्षुब्ध भी हुए तथा वक्त-दर-वक्त उन्होंने सार्वजनिक स्थलों पर विरोध भी प्रकट किया है। कई बार समाचार पत्रों के वाणिज्यकरण के खतरों से निपटने के लिए पत्रकारों ने काला दिवस भी मनाया है । ऐसा ही काला दिवस 20 नवम्बर, 1997 को जयपुर के स्टेचू सर्किल पर मनाया गया । जहाँ शहर के कई प्रवुद्ध पत्रकार बन्धु धरने पर भी बैठे थे ।

[illegible], इसी वर्ष इन्दौर से 'नई दुनिया', लखनऊ से 'स्वतंत्र भारत' तथा कानपुर से 'जागरण', पटना से 'प्रदीप' तो वर्ष 1948 से आगरा से 'अमर उजाला', वर्ष 1951 में जयपुर से 'राष्ट्रदूत', सन् 1956 में जयपुर से ही 'राजस्थान पत्रिका', 1966 में इन्दौर से 'स्वदेश' तथा मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में तेजी से बढ़ते अखबार "दैनिक भास्कर" के अतिरिक्त आज तक देश से निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में केवल हिन्दी के ही नहीं वल्कि सिन्धी, अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं में निकलने वाले कई पत्र एवं पत्रिकाएँ प्रसिद्ध हो चुकी हैं।

वर्ष 1987 के अंत तक स्वतंत्र भारत से प्रकाशित हो रहे समाचार पत्रों की संख्या 27,685 हो चुकी थी तथा उस समय देश से 2151 दैनिक पत्र और 22,478 अन्य पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती थीं । इसमें से 8123 मासिक, 2701 साप्ताहिक, 3366 पाक्षिक और 132 सप्ताह में तीन या दो बार निकलने वाली पत्र-पत्रिकाएँ थीं । इन आंकड़ों पर गौर करते हुए यह अनुमान लगाना बिल्कुल गलत न होगा कि दस वर्षों के भीतर यानी कि वर्ष 1997 के अंत तक भारत देश से सभी भाषाओं के मिले जुले अखबार वे चाहे मासिक हो, पाक्षिक हो, साप्ताहिक हो, दैनिक हो या त्रैमासिक अथवा वार्षिक हो कोई 40,000 से कम न होंगें। वर्ष 1987 में जहां जयपुर से केवल दस दैनिक (छोटे बड़े सभी मिलाकर) अखबार निकला करते थे, तो वहीं वर्ष 1997 के अन्त तक इनकी संख्या बढ़कर लगभग 40 हो चुकी है । इसी प्रकार अन्य चाहें वे मासिक हो, पाक्षिक हो या साप्ताहिक सभी की संख्या में वृद्धि हुई है तथा वक्त की बढ़ती तेज रफ्तार से दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । प्रमाण स्वरूप यूनिवार्ता संवाद समिति द्वारा जारी एक समाचार जो कि राजस्थान से सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका के 10 नवम्बर, 1997 के अंक में प्रकाशित हुआ था।

देश में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं व उनके पाठकों की संख्या अधिक

नई दिल्ली, 9 नवम्बर (वार्ता) देश में हिन्दी पत्र पत्रिकाए प्रकाशन सख्या और पाठकों की सख्या की दृष्टि से अब भी सबसे ऊपर बनी हुई हैं।

भारत के समाचार पत्रों के पजीयक की 40 वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रेस इन इडिया 1996 के अनुसार समाचार आधारित पत्र पत्रिकाओं की सख्या 35 हजार 601 से बढकर 37 हजार 254 हो गई है, जिसमें हिन्दी के प्रकाशनों का स्थान सर्वोपरि है। इन प्रकाशनों के कुल पाठकों की सख्या सात करोड तेइस लाख से बढकर सात करोड बानवे लाख हो गई है। इस तरह वर्ष 1995 में समाचार पत्रों और अन्य पत्र पत्रिकाओं के पजीकरण में कुल 9 65 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई और समाचार आधारित प्रिंट मीडिया में केवल 4 64 फीसदी वृद्धि हुई।

वर्ष 1995 में समाप्त हुए दशक में दैनिक समाचार पत्रों में 114 2 फीसदी का इजाफा हुआ है, 1995 में दैनिक पत्रों की सख्या 4 हजार 236 थी जबकि 1994 में चार हजार 43 थी इस तरह इनमें 4 77 फीसदी की बढोतरी हुई। लेकिन समाचार आधारित अन्य पत्र पत्रिकाओं की सख्या में कमी आई है। रिपोर्ट के अनुसार 1994 में इनकी सख्या 87 8 थी जो 1995 में घटकर 76 1 फीसदी रह गई। इसी तरह से इनकी प्रसार सख्या भी 56 1 फीसदी से घटकर 54 5 फीसदी हो गई है। 1995 में सौ भाषाओं और बोलियों में समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे थे जिनमें 19 मुख्य भाषाएं थीं। दिल्ली और महाराष्ट्र से सर्वाधिक सोलह भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इस वर्ष प्रिन्ट मीडिया के प्रकाशन और प्रसार सख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का स्थान सबसे ऊपर रहा।

अध्याय - 3

पत्रकारिता के दृष्टिकोण में बदलाव

आज़ादी के बाद से निकलने वाले अधिकांश: सभी भाषाओं के अखबारों का कोई उद्देश्य न होकर केवल व्यवसायिक दृष्टिकोण रहा है । मुख-पृष्ठों पर राजनैतिक समाचारों, अपराध समाचारों के अलावा जनहित या कुरीतियों आदि को दूर करने संबंधी कोई समाचार या लेख नहीं छापे जाते हैं। किसी विभाग में हो रही हेराफेरियों, गड़बड़ियों या भ्रष्टाचार करने के उपरान्त यदि उस विभाग से बड़े-बड़े विज्ञापन मिल जाते हैं तो उसी अखबार के समाचारों आदि में अधिकाशत: उस विभाग की कमियां समाप्त कर दी जाती हैं, और तारीफों के पुल बांध दिए जाते हैं उस विभाग के अधिकारियों आदि के, और उपलब्धियां जग-जाहिर कर दी जाती हैं ।

पेपर कोटा एवं विज्ञापनों पर जीवित रहने के अलावा पीत-पत्रकारिता पर भी जोर आ गया है । किसी संस्थान या व्यक्ति विशेष के बारे में गलत-सही खबरें आदि छापकर सौदे तय हो जाते हैं और फिर सत्यता पर पर्दा डाल देते हैं - अखबार । सुविधाभोगी पत्रकारों द्वारा प्रेस सम्मेलनों में की गई खातिरदारी के अनुपात में ही अधिकांशत: समाचार पत्रों में समाचारों को कम व ज्यादा स्थान मिलने लगा है ।

भ्रष्ट राजनैतिक दल अखबारों को खरीद लेते हैं। मिशन से बने व्यवसायिक पत्रकारिता में बड़े बड़े उद्योगपतियों का प्रवेश हो गया है । जहां पत्रकारिता के पेशे के साथ एक वायदा होता था कि सत्यता का पर्दाफाश करना, झूठ का भंडाफोड़ करना, समाज में सुधार लाना वहां उद्योगपतियों के भी इस पेशे में प्रवेश करने के बाद भी समाचार पत्रों ने हिम्मत नहीं जुटाई है-राष्ट्रसुधार की । यदि किसी पत्रकार ने कोशिश भी की है तो उसे हर प्रकार से दबाने का प्रयास किया जाता है, तथा उन्हें उस अखबार की नौकरी से हाथ धोने पड़े हैं उदाहरणस्वरूप-बोफोर्स कांड का पर्दाफाश करने वाले एन. राम और चित्रा सुब्रमण्यम को । यदि यह कहा जाये कि उद्योगपतियों का उद्देश्य

मात्र धन कमाने का रहा है और व्यवसाइयों का रुझान यदि पत्रकारिता की ओर आया भी है या आने लगा है तो वह भी मात्र व्यवसायिकता के रूप में, या सत्ता व राजनीति को अपना मोहरा बनाकर उससे हर प्रकार से लाभ उठाने की नियत से ।

समाचार पत्रों की आधुनिक प्रकृतियों से प्रभावित अखबारों में काम करने वाले पत्रकार सत्याग्रहियों की मानिन्द कई बार सत्य की खोज करने के उपरान्त भी वह व्यावसायिक दृष्टि से अखबारों को चलाने वाले अखबार मालिकों के दबाव में अपने परिश्रम को उसी अखबार में प्रकाशित करने से वंचित रह जाते हैं ।

वर्तमान समय में मिशन के स्थान पर व्यवसाय बनी पत्रकारिता के इस आधुनिक दौर में सच्चे पत्रकार आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सीमाओं के भीतर रहते हुए मात्र गुजारे के लिए घुटन-भरी नौकरी करते हैं-समाचार पत्र-पत्रिकाओं में, शक्तिशाली समझे जाने वाला कमजोर सुनहरी जामा ओढ़े 'पत्रकार' पद का ।

बहरहाल भारत विश्व के सामने बड़े देशों में से है, इसका क्षेत्रफल 3,287,263 वर्ग किलोमीटर हैं । भारत अपार दूरियां वाला देश है । उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई 3,214 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम तक 2,933 किलोमीटर है । देश की भू-सीमा बहुत लम्बी 15,200 किलोमीटर और तट-रेखा विस्तृत 7516.6 किलोमीटर है ।

अनेक जातियों एवं धर्मों वाले इस विशाल भारत देश की विविधता यहां के लोगों को न केवल एक सूत्र में ही बांधती है बल्कि उनमे एकजुटता की गहरी भावना भी पैदा करती है । वास्तव में यदि देखा जाये तो भारतीयों में अलग-अलग धर्मों जातियों आदि का होने के उपरान्त भी उनमें एकता की भावना आज ही नहीं बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही है ।

यह वह भारत देश है जहां साढ़े पांच लाख से अधिक गांव और 3,000 नगर है । कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई और मद्रास महानगर है । इनमे से हरेक की आबादी 50 लाख से अधिक मानी जाती है । इस देश की विशाल विविधता ज्यादातर इसके प्रमुख धर्मों-हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी में परिलक्षित होती है । हिन्दुओं की संख्या, आबादी का लगभग 83 प्रतिशत और मुसलमानों की संख्या 12 प्रतिशत के लगभग है । बाकी प्रतिशत मे अन्य मतावलम्बी आते हैं ।

इस देश में 870 से अधिक भाषाएं और प्रमुख बोलियां हैं । भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जिन राष्ट्रीय भाषाओं के नाम दर्ज है उनमें असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मराठी, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, संस्कृत, तमिल, तेलगु और उर्दू हैं । हिन्दी यहां की राजभाषा है, लेकिन आजादी के बाद भी आज तक भी अंग्रेजी वैकल्पिक राजभाषा बनी हुई है ।

इस देश से निकलने वाले सभी भाषाओं, लिपियो, बोलियों आदि के समाचार

पत्र-पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य जनता को भिन्न-भिन्न प्रकार की जानकारियों से अवगत कराना, जन-जन को जोड़कर उन्हें एकता के सूत्र में बांधना, लोगों का मनोरंजन करना तथा ज्ञान-विज्ञान के संसार में ले जाने आदि के अतिरिक्त सरकार को जनता की सभी प्रकार की समस्याओं की जानकारी देना तथा जनता को सरकार की नीतियों से अवगत कराने आदि का है ।

जनता एवं सरकार के बीच पुल का कार्य करने वाले ही नहीं अपितु जन-जन में सृजनात्मक आदि सभी प्रकार की जागृति पैदा करने वाले समाचार पत्रों के संसार में भारत देश में सिन्धी भाषा की पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है ।

भारत देश से सिन्धी भाषा में निकलने वाले समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने विभाजन के पश्चात् इस देश की केवल आर्थिक प्रगति के लिए ही ठोस कार्य नहीं किये हैं बल्कि जन-जन को बिना किसी भेदभाव के एकता के सूत्र में बांधने का भी प्रयास किया है । इस देश के प्रदेशों में चाहे वह महाराष्ट्र हो, गुजरात हो, राजस्थान हो, मध्यप्रदेश हो, उत्तर प्रदेश हो या अन्य कोई प्रदेश- सिन्धी भाषा के पत्रकार बन्धु आज भी पत्रकारिता को "मिशन" के रूप में चला रहें हैं । सिन्धी समाचार-पत्र-पत्रिकाएं छापकर वे कमाते कदापि नहीं बल्कि घर से पैसा लगा रहें हैं । उनमें से कई सिन्धी-भाषी पत्रकार ऐसे भी हैं जो अन्य धन्धों या नौकरियों से आय करके अखबारों में लगाते हैं या फिर चंदा एकत्रित करके अपना जीवन सिन्धी-भाषी पत्रकारिता को समर्पित किये हुए हैं ।

अध्याय - 4

सिन्धी भाषा और पत्रकारिता
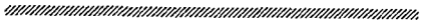
हिन्दी भाषा को वैसे तो भारत देश की राष्ट्रभाषा माना जाता है, साथ ही सिन्धी भाषा को हिन्दी की बिन्दी कहा जाता है । यह भी कहा जाता है कि यदि बिन्दी ठीक नहीं होगी तो हिन्दी का स्वरूप ही बिगड़ जाएगा । हमारे भारत देश मे आज़ादी के बाद अभी तक भी सिन्धी भाषा का समुचित रूप से विकास नहीं हो पा रहा है, हालांकि सिन्धी भाषा का पहला अखबार सन् 1868 मे निकला था, तथा आजादी की लड़ाई में भारत देश से निकलने वाले अनेकनेक सिन्धी-भाषी समाचार पत्र पत्रिकाओं ने अपनी अहम् भूमिका निभाई थी तथा कई पत्रकारों एव सम्पादको को जेल की सजा भुगतनी पड़ी थी ।

सिन्धी भाषा की पत्रकारिता पर दिल्ली विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषा से जुड़े एवं भारत देश के जाने माने लेखक डॉ मुरलीधर जेटली ने राजधानी दिल्ली में मानव संसाधन मंत्रालय के शिक्षा विभाग द्वारा अगस्त 1990 में पत्रकारिता पर मनाए गए 125-वें वर्ष के अवसर पर नवभारत टाईम्स अखबार के जरिए से जानकारी दी है कि-संविधान में स्वीकृत पन्द्रह भाषाओं में सिन्धी भाषा भी एक है । देश के विभाजन में पूरा सिन्ध प्रान्त भारत से कट गया । वह पाकिस्तान का हिस्सा बन गया । सिन्धी हिन्दू लाखों की संख्या में अपनी जन्मभूमि छोड़ने पर मजबूर हो गए । वे भारत के विभिन्न प्रान्तों में आकर बसे । अब स्वतंत्र भारत की भाषाओं में सिन्धी ही एक ऐसी भाषा है, जिसका अपना कोई प्रदेश नहीं है । पर सिन्धी के विकास के लिए सरकारी प्रयास होते रहते हैं।

अगस्त 1990 में सिन्धी पत्रकारिता ने एक सौ पच्चीसवें साल में प्रवेश किया था। इस उपलक्ष्य में मानव संसाधन मंत्रालय के शिक्षा विभाग द्वारा 'सिन्धी पत्रकारिता के एक सौ पच्चीस वर्ष 'विषय पर संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया था ।

'सिन्ध सुधार' पहली साप्ताहिक पत्रिका है, जो पूरी सिन्धी भाषा में प्रकाशित होती थी और पहली अगस्त, 1866 को कराची से जारी की गई । उन दिनों सिन्ध प्रदेश मुम्बई के अंतर्गत था । शिक्षा विभाग की ओर से सन् 1853 में सिन्धी भाषा की अलग अलग लिपियों में से अरबी पारसी लिपि को चुना गया और उसे मानक रूप देकर उसमें साहित्य सृष्टि को प्रोत्साहन दिया गया । शक नहीं कि सरकारी प्रयत्नों के बावजूद सिन्धी भाषा के लिए देनवागरी, गुरूमुखी और सिन्धी नागरी से मिलती जुलती शिरो रेखा हीन सिन्धी भाषा की विशेष लिपि/लिपियों का इस्तेमाल भी लगातार होता रहा है । सिन्ध सुधार नामक पत्रिका भी मानकीकृत अरबी-फारसी लिपि में छपती थी। उसके पहले नारायण जगन्नाथ वैद्य, जो महाराष्ट्रीय विद्वान और शिक्षाविद् थे । वे शिक्षा में निरीक्षक पद पर नियुक्त थे । उन्होंने सिन्ध में रहकर सिन्धी भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन किया । सिन्धी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण कार्य और साहित्य संवर्धन में उनका योगदान हमेशा याद रहेगा । 'सिन्ध सुधार' पत्रिका का आरम्भ चाहे सिन्धी शिक्षण की दृष्टि से हुआ-था, परन्तु कुछ ही वर्षों के बाद उसका संचालन एक निजी संस्था को सौंपा गया । तब वह अपने जमाने की उच्च स्तर की साहित्यिक पत्रिकाओं के रूप में उभर उठी ।

वैसे देखा जाय तो 'सिन्ध सुधार' से पहले ही सिन्ध में समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं का जन्म हो चुका था, परन्तु वे अंग्रेजी या फारसी भाषाओं में छपते थे। सिन्ध में प्रकाशित होने वाला पहला अखबार था 'कराची एडवर्टाइज़र ।' सिन्ध पर विजय पाने वाले फौजी कमान्डर सर चार्ल्स नेपियर ने यह अंग्रेजी अखबार 1844 में कराची से शुरू किया था । दोनो पत्रिकाओं में फारसी के साथ-साथ कुछ पृष्ठ अथवा स्तम्भ सिन्धी भाषा में भी होते थे । सन् 1884 में जब साधु हीरानन्द आडवाणी ने 'सिन्ध सुधार' और 'सिन्ध टाइम' अंग्रेजी का सम्पादन कार्य हाथ में लिया, तब सिन्धी पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर गूंजने लगे । साधु हीरानन्द ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लिखने के साथ-साथ अंग्रेजी सरकार की भी आलोचना शुरू कर दी । अपने संपादकीय लेख में एक जगह उन्होंने लिखा है कि 'नादिरशाह ने तो भारत को एक बार लूटा, पर अंग्रेज सरकार हर साल उससे कई गुना ज्यादा धन इस देश से लूटकर बाहर भेज रही है ।' एक साल बाद, सन् 1885 में जब कांग्रेस का जन्म हुआ, तब से लेकर सिन्धी पत्रिकाओं में राष्ट्रीय चेतना और राजनैतिक जागृति के स्वर और भी मुखरित हो उठे । उन्नीसवीं सदी के अंत तक लगभग बीस पत्रिकाएँ सिन्धी भाषा में प्रकाशित होने लगी । उनमें सरस्वती 1890, प्रभात 1891 और ज्योति 1896 का नाम साहित्यिक दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। अंग्रेजी सरकार की कटु आलोचना करने में 'प्रभात' समाचार पत्र सबसे आगे था ।[1]

बीसवीं सदी का पूर्वाध सिन्धी पत्रकारिता का स्वर्ग युग माना जाता है । सन् 1947 तक सिन्धी भाषा में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों तथा साहित्यिक पत्रिकाओं की

संख्या दो सौ से भी ज्यादा हो गई । वर्तमान सदी का आरम्भ होने के कुछ वर्ष बाद ही अंग्रेज सरकार ने सन् 1905 में बंगाल का विभाजन किया, जिससे राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की लहर सारे देश में फैली । इसका प्रभाव सिन्ध पर भी बहुत पड़ा। वर्ष 1905 में सिन्ध प्रदेश के सक्खर जिले के वीरुमल बेगराज ने 'सिन्धी' नामक अपनी पत्रिका के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओ को अपनाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का प्रचार आरम्भ कर दिया । उन्हीं दिनो में तोलाराम मेघराज बालानी ने भी 'माता' और 'सदा-ए-सिन्ध' पत्र शुरू कर, राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया । दोनों आपत्तिजनक लेख और गीत छापने के कारण गिरफ्तार कर लिए गये । इनके साथी महाराज गोवर्धन शर्मा और चेटूमल हरीराम भी सरकार की क्रोधाग्नि से नहीं बच सके। वर्तमान सदी के प्रथम दशक में सिन्ध में राजनैतिक गतिविधियों के कारण गिरफ्तार होने वाले ये पहले कैदी थे ।

अप्रैल, 1919 मे अमृतसर के जलियांवाला बाग के हत्याकांड से आन्दोलन की लहरें सारे देश में तीव्र गति से फैलीं । जेठमल परसराम गुलराजाणी ने 1917 में आरम्भ किए अपने साप्ताहिक पत्र 'हिन्दवासी' में उस हत्याकांड की कटु आलोचना की। उसने सिन्ध के प्रसिद्ध सूफी कवि शाह अब्दुल लतीफ के काव्य से एक पद लेकर लिखा- 'कलाल के हटि कुसण जो कोय वहे' यानी कि "कलाल की हाट पर कत्ल की कहर जारी है।" इस सम्पादकीय लेख के कारण जेठमल को गिरफ्तार कर लिया गया । सोरले नामक एक अंग्रेज न्यायाधीश की कचहरी में मुकदमा चला । लतीफ के पद्य के इस एक काव्य को लेकर काफी बहस हुई। हर कोई इसका अलग-अलग अर्थ समझने लगा। जेठमल को दो साल की कैद हुई और उसे पुणे की 'यरवदा' जेल में रखा गया। दूसरी ओर सोरले के मन पर इस केस का यह असर हुआ कि वह शाह लतीफ की काव्य अच्छी तरह पढ़ने और समझने के लिए सिन्धी सीखने लगा। बाद मे उसने उस सूफी कवि के जीवन और काव्य पर अंग्रेजी मे एक अनुसंधानक ग्रन्थ लिखा। शाह लतीफ के काव्य पर लिखे ग्रन्थों में इसका मूर्धन्य स्थान है।

जेठमल परसराम वर्ष 1920 मे जब कारागार से निकले तो हैदराबाद सिन्ध में उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने अपना पूरा जीवन पत्रकारिता और साहित्य सेवा को अर्पित कर दिया। सिन्ध में ऐसा कोई आन्दोलन शायद ही हुआ हो जिसमें पत्रकार जेठमल ने सक्रिय रूप से हिस्सा न लिया हो।

राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना मे 'हिन्दू' पत्रिका का अनुपम योगदान रहा है। इसकी स्थापना सन् 1916 मे हैदराबाद सिन्ध के महाराज लोकराम शर्मा और उसके छोटे भाई विष्णु शर्मा ने की। विष्णु शर्मा इसके पहले सम्पादक थे। हिन्दू पत्रिका आरम्भ में लगभग एक वर्ष तक सिन्धी भाषा और नागरी लिपि में छपती रही। बाद में यह अरबी-फारसी लिपि में प्रकाशित होने लगी। सन् 1921-22 के असहयोग आन्दोलन में 'हिन्दू' ने अंग्रेज सरकार की कटु आलोचना की। अतः उसके सम्पादक को गिरफ्तार

किया गया। एक संपादक पकड़ा जाता, तो उसके स्थान पर तत्काल दूसरा नियुक्त किया जाता। एक मुद्रणालय को सरकार जब्त करती, तो तुरन्त दूसरे छापेखाने से अखबार का प्रकाशन जारी रखा जाता था। इस आन्दोलन के दौरान ''हिन्दू' के सात सम्पादक लगातार जेलों में ठूस दिए गये थे। वे थे-विष्णु शर्मा (तीन साल कैद), जयरामदास दौलतराम (दो साल कैद), घनश्याम शिवदासाणी (दो साल कैद), चोइथराम गिदवानी (एक साल कैद), लोकराम शर्मा (डेढ़ साल कैद), चोइथ वलेछा (एक साल कैद) और हीरानन्द करमचन्द (एक साल कैद)।

सन् 1926 में 'हिन्दू' पत्र के संचालक का भार 'सिन्ध स्वराज्य आश्रम' को सौंपा गया। इसी संस्था को सन् 1928 में देश सेना मंडल का नाम देकर एक ट्रस्ट का रूप दिया गया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान भी 'हिन्दू' समाचार पत्र के तीन संपादक एक दूसरे के पीछे गिरफ्तार हुए, जिनके नाम थे, हीरानन्द करमचन्द, किशनदास शिवदासाणी और हासोमल ईसरदास। सरकार ने मुद्रणालय जब्त कर लिया, तो यह अखबार साईक्लोस्टाईल रीति से निकाला जाने लगा। कभी-कभी तो यह नौबत आई कि अखबार अलग-अलग नामों से प्रकाशित किया जाता था। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के दौरान काँग्रेस के आदेशानुसार यह समाचार पत्र कुछ महीनों के लिए प्रकाशित न हो सका था। फिर नवम्बर, 1943 में उसका पुनः प्रकाशन प्रारंभ हुआ। काँग्रेस के कुछ नेताओं के आदेश पर 'हिन्दू' का नाम एक अगस्त, 1946 से बदलकर 'हिन्दुस्तान' रखा गया। उसका रविवार का साप्ताहिक अंक 'हिन्दवासी' के नाम से प्रकाशित होने लगा। सन् 1947 में जब पाकिस्तान का जन्म हुआ तो उसके बाद भी ये पत्र कुछ महीनों तक कराची से प्रकाशित होते रहे। तत्पश्चात् लाखों की संख्या में सिन्धी हिन्दुओं के सिन्ध छोड़ने के कारण सन् 1948 में इनका मुद्रण कराची से बन्द करना पड़ा। उसी साल ही ये दोनों पत्र नए रंग-ढंग से मुम्बई से जारी किये गए और आज तक नियमित रूप से वहाँ से प्रकाशित होते रहते हैं। सिन्धी के समाचार पत्रों की दुनियाँ में इन दोनों पत्रों का अग्रहणीय स्थान है।

'हिन्दू' और 'हिन्दवासी' की तरह कई अन्य समाचार पत्रों ने भी अंग्रेजी सरकार से जमकर मुकाबला किया। जिनमें 'हिन्दू जाति', 'स्वराज्य आजाद', 'नवभारत' और 'जयभारत' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

आज़ादी के बाद सिन्धी पत्रकारिता सिन्ध (पाकिस्तान) और भारत में दो अलग-अलग धाराओं में बह रही है। पाकिस्तान में फौजी हुकूमत के समय, सिन्धी पत्रकारों पर सतत् अंकुश रहा और वे लगातार अपने अधिकारों के प्रति संघर्षशील रहे हैं। दूसरी ओर भारत में सिन्धी पत्रकार मुख्यतः राष्ट्रीय धारा के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु भारत में विषम परिस्थितियों के कारण सिन्धी की नई पौध प्रायः अलग-अलग प्रान्तों में स्थानीय भाषाओं और अंग्रेजी को अपनाने की वजह से

अपनी मातृभाषा में शिक्षण प्राप्त नहीं कर रही है। अतः दिन-ब-दिन सिन्धी भाषा का पाठक वर्ग ह्रासोन्मुख होता जा रहा है। इस हालत में भारत में प्रदेशहीन और अल्पसंख्यक सिन्धी भाषा की पत्रकारिता के भविष्य का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

भारत देश में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी एवं कच्छ से लेकर नागालैंड तक सभी प्रदेशों में से कई ऐसे भी प्रदेश हैं जहाँ लाखो की संख्या में सिन्धी भाषी लोग रहा करते हैं, लेकिन वहाँ से सिन्धी भाषा का कोई भी समाचार पत्र-पत्रिका नहीं निकलता।

आज़ादी के बाद से भारत से निकलने वाले पूर्णतः सिन्धी भाषी, अरबी, देवनागरी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिले-जुले निकलने वाले समाचार पत्र-पत्रिकाओं की ओर देखा जाय तो वर्ष 1985 में भारत के समाचार पत्रो के पंजीयन के 19-वे प्रतिवेदन के भाग-2 के अनुसार यहाँ जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अलावा अन्य खोजपूर्ण जानकारी हासिल करने पर ज्ञात होता है कि किस प्रदेश से कौन-कौन से पत्र एवं पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थी। पुस्तक में छापे गए समस्त पत्र-पत्रिकाओ मे अभी भी कई पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही होंगी। कुछ समाचार-पत्र, पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति के विषय में प्रयास करने पर भी लेखक को पता नहीं लग पाया कि वे पत्र-पत्रिकाएँ वर्तमान में प्रकाशन में हैं अथवा नहीं। इसके लिए खेद है। एवं पाठकगण लेखक की विवशता को समझने का प्रयास करेगे। ऐसी विनम्र आशा है।

अध्याय - 5

प्रादेशिक पत्र-पत्रिकायें: आंकलन

आन्ध्रप्रदेश

आन्ध्रप्रदेश से वर्ष 1969 में 'सिन्धी यूथ' नामक समाचार पत्र का निकलना प्रारंभ हुआ था। हैदराबाद शहर के सिदिम्बर बाज़ार के पतंगी बिल्डिंग के मकान नं. 15-1595/12 से निकलने वाले पाक्षिक 'सिन्धी यूथ' अखबार के सम्पादक एवं मालिक थे—जवाहरलाल जे.पी.।

आन्ध्रप्रदेश हैदराबाद के अज़ीज प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस अखबार के प्रकाशक एवं मुद्रक थे डा. राष्ट्रवेदी। इस समाचार पत्र की कुल प्रचार संख्या 250 प्रतियां थीं, जिसमें से 240 अखबार बिका करते थे तथा इस पत्र में समाचारों के अलावा सामयिक विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती थी।

असम

असम प्रदेश से कोई भी सिन्धी भाषी समाचार पत्र या पत्रिका प्रकाशित नहीं होती है।

बिहार

बिहार प्रदेश में हालाँकि काफी संख्या में सिन्धी भाषी लोग रहा करते हैं, लेकिन इस प्रदेश से भी कोई सिन्धी भाषी समाचार पत्र या पत्रिका प्रकाशित नहीं हुआ करती है।

गुजरात

भारत के गुजरात प्रदेश से वर्ष 1956 में अहमदाबाद के एन. जे. प्रिन्टर्स देवलाली बाजार, कुबेर नगर डाकखाना सरदार शहर अहमदाबाद से 'प्रकाश' नामक एक साप्ताहिक

पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। समाचार एवं सामयिक विषयों पर सामग्री को प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—ज्ञान ऋषि लीलाशाह तथा यह अखबार मात्र आठ पैसे में बिका करता था।

सन् 1956 में ही न्यूशाप एच. 16 गांधीधाम कच्छ से 'गांधीधाम गाइड' नामक पाक्षिक का प्रारंभ हुआ। इस समाचार-पत्र के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—एन. जी. अनवानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर छपने वाला यह समाचार पत्र गांधीधाम गुजरात के कमल प्रिंटिंग प्रेस में छपकर मात्र साठ पैसे प्रति कापी के हिसाब से बिका करता था।

इसी प्रदेश के आदीपुर कच्छ से वर्ष 1965 में चार भाषाओं—क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती एवं सिन्धी भाषा में 'गांधीधाम समाचार' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस अखबार के प्रकाशक मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे एच. दुखायल। सर्वोदय प्रिंटिंग प्रेस त्रादिपुर में छपने वाले इस अखबार की कीमत थी मात्र पन्द्रह पैसे। समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर छपने वाले इस अखबार का पता—डी ए. जेड.-96, आदीपुर-कच्छ गुजरात था।

गुजरात के कोचिंग कुबेर नगर अहमदाबाद से वर्ष 1966 मे अंग्रेजी एवं सिन्धी भाषा में एक द्विभाषी साप्ताहिक अखबार का निकलना प्रारंभ हुआ। 'झूलेलाल' शीर्षक से निकले इस पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक एल. डी रामचन्दा थे। इस पत्र की कीमत मात्र बीस पैसे थी। राज प्रिंटिंग प्रेस, अहमदाबाद से छपने वाले इस अखबार की प्रसार संख्या 1600 थी जिनमें से 1500 प्रतियाँ बेची जाती थीं। बाकी 100 प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित कर दी जाती थीं। यह समाचार पत्र समाचारों एवं सामयिक विषयों को प्रकाशित किया करता था। वर्तमान समय मे 'झूलेलाल' अखबार के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डी एल मोटवानी हैं। इसकी कीमत एक रुपया प्रति कापी कर दी गई है। जाकरिया पोल के निकट रिलीफ रोड, अहमदाबाद से छपने वाली इस अखबार की मालकिन का नाम है—पुष्पा डी. मोटवानी। इसका वार्षिक चन्दा है 50 रुपया।

गुजरात प्रदेश के बड़ौदा से सन् 1966 में फिल्म विषयक 'संगीता' नामक एक मासिक पत्रिका निकली। चेतना इलेक्ट्रिक कम्पनी, मंडरी बड़ौदा से निकलने वाली यह पत्रिका तोलानी प्रिंटर्स बडौदा से छपा करती थी। इस पत्रिका के मालिक थे—जे.

सी. टहलरामाणी तथा प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक का नाम था—ए. सी. टहलरामानी। मासिक 'संगीता' की कुल 535 प्रतियाँ छपा करती थीं—जिनमें से 440 प्रतियाँ विक्री के लिए थीं तथा 95 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं। इस पत्रिका का वार्पिक शुल्क 50 रुपया था तथा आजीवन पत्रिका मंगाने वालों के लिए 400 रुपया शुल्क था।

इसी तरह अहमदावाद के एफ.-19 कुवेर नगर से 1967 में 'मारई' नामक एक मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था। एक रुपये वीस पैसे में एक प्रति विकने वाला यह अखवार एन. जे. प्रिंटर्स में छपा करता था तथा इस समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक का नाम था—श्रीमती आर. एच. पंजावी।
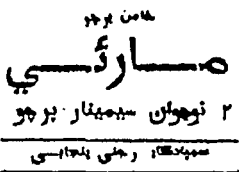
गुजरात के नडियाड नामक स्थान से वर्ष 1976 में एक त्रिभापीय 'चैंतीचंद' नामक अखवार का निकलना प्रारंभ हुआ। सिन्धी गुजराती एवं अंग्रेजी भापा में प्रकाशित होने वाला यह साप्ताहिक अखवार झूलेलाल प्रिंटिंग प्रेस संतराम रोड़, नडियाड से छपा करता था। इस अखवार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक जी. लखियानी नामक व्यक्ति थे। तीस पैसे प्रति कापी की दर से विकने वाले इस समाचार पत्र की कुल प्रसार संख्या 1300 प्रतियाँ थीं, जिनमें से 1200 प्रतियों की विक्री हुआ करती थी। वाकी प्रतियाँ मुफ्त वांटी जाती थीं अथवा जरूरी विभागों को भेज दी जाती थीं।

अहमदावाद गुजरात से वर्ष 1968 में ''कली'' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, मालिक एवं प्रधान संपादक साहित्यकार जेठो लालवानी नामक पत्रकार रहे हैं। फिल्म एवं साहित्य विपयक यह पत्रिका अहमदावाद के न्यू राजप्रिंटिंग प्रेस कुवेर नगर से छपा करती थी। इस पत्रिका का सम्पादकीय कार्यालय 31/1-न्यू जी.वार्ड कुवेर नगर, अहमदावाद है। इस पत्रिका की वार्पिक कीमत 15 रुपए है तथा कली पत्रिका के अंक की एक प्रति एक रुपए 50 पैसे में विका करती हैं।

अहमदावाद गुजरात से वर्ष 1976 में ''स्टेज'' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के प्रधान संपादक प्रसिद्ध नाटककार एवं साहित्यकार जेठो लालवानी हैं। सिन्धी साहित्य में नाटक एवं रंगमंच विपयक भारत में यह एक मात्र प्रतिनिधि पत्रिका है। इस पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक जगदीश शहदादपुरी हैं। यह

पत्रिका ममता प्रिन्टर्स कुबेर नगर अहमदाबाद से छपा करती है। इस पत्रिका का सम्पादकीय कार्यालय 31/1, न्यू जी वार्ड कुबेर नगर, अहमदाबाद- 382340 है। इस पत्रिका को वार्षिक कीमत 25 रुपए है तथा यह पत्रिका 10 रूपया प्रति कापी की कीमत से बिका करती है।

नाटक एवं रंगमंच विषय पर निकलने वाली इस पत्रिका के न केवल भारत में ही पाठक हैं, बल्कि यह पत्रिका सिन्ध प्रदेश में भी पढ़ी जाती है। सिन्ध प्रदेश में "स्टेज" पत्रिका को केवल पढ़ा ही नहीं जाता है बल्कि कई बार उसकी सामग्री को सिन्ध की पत्रिकाओं में भी प्रकाशित किया जाता है।

वर्ष 1977 में अहमदाबाद के कुबेर नगर से सिन्धु विद्या भवन द्वारा 'आकाशवाणी' नामक सिन्धी अखबार निकाला गया। इस अखबार के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—एल. डी. रूपचंदाणी। यह समाचार पत्र अहमदाबाद के ही मीना प्रिंटिंग प्रेस, गरीबदास रोड़, कुबेर नगर में छपा करता था तथा इसकी कीमत 25 पैसे प्रति कापी हुआ करती थी।

गुजरात राज्य की राजधानी अहमदाबाद से सन् 1977 मे 'वरदा' नामक एक मासिक का निकलना प्रारंभ हुआ। मोहन मोतिहारी पंजवानी नामक व्यक्ति के सम्पादन, प्रकाशन, मुद्रण एवं मालिकाना हकों तले निकलने वाला यह अखबार 26/3, न्यू जी वार्ड, कुबेर नगर से निकला करता था। वहीं की मीना प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाले इस अखबार की कीमत केवल पचास पैसे प्रति कापी थी।

अहमदाबाद कुबेर नगर, डी.-5 से वर्ष 1978 में 'भरवी' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। अहमदाबाद के गुरुदेव प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस अखबार की मुद्रक, मालिक, प्रकाशक एवं सम्पादिका थी—श्रीमती कविता ए. भम्भाणी।

इस प्रदेश के अहमदाबाद से ही वर्ष 1979 मे एक साप्ताहिक पत्र निकला—'समाज सुधा'। केवल पच्चीस पैसे में बिकने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे दामोदरलाल टी. मरजानी। कुबेर नगर डाकखाना, सरदार नगर कं. सी.—115 से निकलने वाला यह अखबार अहमदाबाद के गुरुदेव प्रिंटिंग प्रेस मे छपा करता था तथा समाचारों एवं सामयिक विषयों से सबंधित सामग्री को प्रकाशित किया करता था।

भारत देश के गुजरात प्रदेश से वर्ष 1983 में 'हिन्दू' नामक सिन्धी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। अहमदाबाद के आनन्द

इण्डस्ट्रीयल स्टेट के दिनेश प्रिन्टर्स से छपने वाले इस समाचार पत्र के

सम्पादक किशनचन्द वरियाणी हैं, तथा मुद्रक हैं आसन वरियाणी। समाचारों एवं धर्म के अलावा अन्य सभी प्रकार की सामग्री से ओतप्रोत इस अखबार की कीमत मात्र चालीस पैसे प्रति कापी रखी गयी थी।

इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सिन्धलाजी आदीपुर कच्छ से 'रचना' नामक त्रैमासिक सिंधी पत्रिका निकलना प्रारंभ हुई। लखमी खिलानी द्वारा सम्पादित की जाने वाली यह त्रैमासिक भारत प्रिंटिंग प्रेस अहमदाबाद से छपा करती है। बारह रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाली यह साहित्यिक पत्रिका टी.एच.एक्स.-1 आदीपुर से छपवाकर देशभर में पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। इस पत्रिका की वार्षिक कीमत 50 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 500 रुपए रखा गया है।

गुजरात की राजधानी अहमदाबाद से सिंधी भाषा में साप्ताहिक 'जिन्दगी' निकलना शुरू हुई। कविता भवन शाजीपुर बोगा अहमदाबाद से छपने वाला यह साप्ताहिक पत्र एक रुपये प्रति कापी की दर से बिका करता है। इस अखबार का सालाना शुल्क 100 रुपया है। आजीवन सदस्यों से 500 रुपये लिया जाता है। लेखों आदि को छापने वाले इस अखबार के सम्पादक हैं—श्याम रामरिख्याणी। इस अखबार में सिंधी भाषा के साथ-साथ कई बार गुजराती भाषा में भी सामग्री प्रकाशित की जाती है।

गुजरात के अहदाबाद नगर से सिंधी भाषा की कला संस्कृति एवं साहित्य से जुड़ी त्रैमासिक पत्रिका 'नजरानों' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। डी-11, पंचवटी अपार्टमेन्ट एलिसब्रिज अहमदाबाद से निकलने वाली इस त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—बी.एच.आडवानी। तीन रुपये में बिकने वाली यह पत्रिका गुरूदेव प्रिंटिंग प्रेस, देवलाली बाजार, कुबेर नगर, अहमदाबाद से छपा करती है। इस पत्रिका में कविताएँ, कहानियों के अलावा सिंधी समुदाय की कला संस्कृति तथा साहित्य से जुड़ी सामग्री प्रकाशित की जाती है।

गुजरात प्रदेश की राजधानी अहमदाबाद से साप्ताहिक 'चिणगूं' नामक एक अखबार का प्रकाशन हुआ। नेहरू चिल्ड्रन पार्क के सामने एफ-1, अर्जुन काम्लेक्स, कुबेर नगर, अहमदाबाद से गत कोई डेढ़ दशक से निकलने वाली 'चिणगूं' नामक समाचार पत्र के सम्पादक हैं—महेश हंसराज पंजाबी। सिंधी समाचारों आदि से ओतप्रोत इस पत्र का 50 रुपया वार्षिक चंदा है तथा यह अखबार देश के अलग-अलग हिस्सों में सिंधी

पाठकों को पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। चिणगूं सिधी समाचार पत्र मे कई बार गुजराती भाषा में भी सामग्री प्रकाशित की जाती है।

गुजरात के अहमदाबाद के कुबेरनगर क्षेत्र से एक साप्ताहिक पत्र 'सच्चाई' सिंधी वीकली निकलना शुरू हुआ। इस समाचार पत्र के संरक्षक दिल्ली की शोभा मोटवानी है। पत्र के कानूनी सलाहकार गोविन्दराम जे असरानी हैं तथा सच्चाई पत्र के सम्पादक हैं परसराम जी बोदानी 'पारस'।

इस अखबार के मुद्रक एव प्रकाशक भी परसराम जी बोदानी 'पारस' हैं। यह समाचार पत्र न्यू जी. वाई के निकट 15, आनन्द पार्क सोसायटी, कुबेर नगर अहमदाबाद से निकला करता है। यह पत्र पारस प्रिन्टर्स, 15/9, न्यू जी. वार्ड के निकट कुबेरनगर अहमदाबाद से छपा करता है। सिंधी समुदाय से जुडे समाचारों आदि को प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र का वार्षिक चन्दा 50 रुपया है। आजीवन के लिए 300 रुपया शुल्क लिया जाता है।

सिन्धी समाचार पत्रो की दुनियाँ में अहमदाबाद से ही सिंधी साप्ताहिक 'राष्ट्रीय प्रेम' नामक अखबार निकलना प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के सम्पादक एवं प्रकाशक मोतीराम टी. रामचन्दानी नामक पत्रकार हैं। गुरूदेव प्रिंटिंग प्रेस देवलाली बाजार, कुबेर नगर, अहमदाबाद से प्रकाशित होने वाला यह समाचार पत्र 14/1 ए वार्ड न्यू बैंग्लो एरिया, शाहीपुर बोधा अहमदाबाद से निकला करता है। सिंधी

समाचार पत्र 'राष्ट्रीय प्रेम' सिंधी अरबी लिपि के अलावा आवश्यकतानुसार कई बार

गुजराती भाषा में भी सामग्री प्रकाशित किया करता है। इस समाचार की वार्षिक कीमत 60 रुपए तथा आजीवन के लिए 500 रुपए शुल्क रखा गया है।

कुबेर नगर अहमदाबाद से सिंधी साप्ताहिक समाचार पत्र 'चन्द्र प्रकाश' का प्रकाशन शुरू हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक हैं—ताराचंद रामचन्द भोजवानी नामक अखबारनवीज़। यह पत्र 224 ओल्ड जी. वार्ड कुबेर नगर, अहमदाबाद से छपा करता है। सवा रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह समाचार पत्र सिंधी भाषा के अलावा आवश्यकता पड़ने पर गुजराती भाषा का भी प्रयोग किया करता है।

अहमदाबाद के कुबेर नगर क्षेत्र से साप्ताहिक 'सिंधी सम्राट' का छपना शुरू हुआ। सी-151, कुबेर नगर, अहमदाबाद से निकलने वाले इस समाचार पत्र के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक चौइथराम जे. लालचन्दाणी नामक पत्रकार हैं। ममता प्रिन्टिर्स, शाप नं.-104, पोस्ट ऑफिस रोड़, न्यू जी. वार्ड, कुबेर नगर, अहमदाबाद से छपने वाले इस समाचार पत्र में सिंधी भाषा के अलावा गुजराती भाषा में भी विज्ञापन आदि प्रकाशित किये जाते हैं। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 60 रुपया है तथा समाचार पत्र आजीवन मंगाने के लिए 500 रुपया शुल्क लिया जाता है।

गुजरात की राजधानी अहमदाबाद से साप्ताहिक समाचार पत्र 'सिंधी कारवां' निकलना शुरू हुआ। इस समाचार पत्र के सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक हैं—कोडूमल वाधवानी 'जानिब'। यह अखबार ममता प्रिन्टर्स, 104, न्यू जी. वार्ड कुबेर नगर, अहमदाबाद से निकला करता है। सिंधी भाषी समाचारों तथा सिन्धी समुदाय से जुड़ी सामग्री को प्रकाशित करने वाला यह पत्र गुजरात प्रदेश के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में भी भेजा जाता है। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 50 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 500 रुपया है।

अहमदाबाद से 'सिंधु भारती' नामक एक द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका लक्ष्मण दुबे नामक व्यक्ति द्वारा प्रकाशित की जाती थी। द्विमासिक

यह सिंधी पत्रिका सर्किल चौक, जूनागढ़ से निकलती हुई मान्टो प्रिन्टरी कुबेर नगर अहमदाबाद से छपा करती थी। साठ पैसे मे एक प्रति बिकने वाली 'सिंधु भारती' पत्रिका से जुड़े अन्य व्यक्ति थे—अर्जुन सचाणी, राजकुमारी बचाणी, नामदेव ताराचन्दानी, जयन्त रेलवाणी, नारायण जान्याणी और रमेश पारदासाणी।

गुजरात के ही सिंधु भारती प्रकाशन द्वारा मासिक 'सिंधु साहित्य' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। सिंधु भारती प्रकाशन की यह पत्रिका कमल प्रिंटिंग प्रेस, कुबेर नगर, अहमदाबाद से छपा करती थी। लक्ष्मण दुबे नामक व्यक्ति द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका गोर्धन वर बेदी नाका राजकोट से निकला करती थी। सिंधु साहित्य संगम, 7,— जंक्शन प्लाट, राजकोट की इस पत्रिका के मानद सम्पादक थे—प्रसिद्ध साहित्यकार जयन्त रेलवाणी। सिंधी भाषा में छपने वाली यह पत्रिका सिंधी साहित्य कला व संस्कृति आदि से संबंधित सामग्री प्रकाशित किया करती थी।
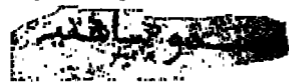
अहमदाबाद के दयालदास एल. मोटवानी के द्वारा 'चौदस' नामक सिंधी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। रिलीफ रोड़ स्थित कालुपुर पुलिस स्टेशन के सामने राज प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली इस द्विमासिक पत्रिका के सम्पादक थे—दयालदास मोटवानी। यह पत्रिका सिंधी भाषा में साहित्यक आदि सामग्री प्रकाशित किया करती थी।

गुजरात के बड़ौदा शहर से सिंधु समाज द्वारा 'सभ्यता' नामक एक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। सिंधी साहित्य आदि से जुड़ी इस पत्रिका के मुख्य सम्पादक थे—डॉक्टर 'प्रेम' *तथा उनके सहयोगी थे—लेखराज परियानी* एवं हरी कुकरेजा नामक व्यक्ति। इस पत्रिका के मुद्रक एवं प्रकाशक थे—डॉ. लखन्देव 'प्रेम'। यह पत्रिका रणजीत प्रिंटिंग प्रेस, देव... बाजार, कुबेर नगर से छपा करती थी

गुजरात प्रदेश राजकोट से वर्ष 1997 में सिन्धी पाक्षिक "गुर्जर सिन्धु" नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। शिवम् कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, 5 दीपमंदिर काम्लेक्स, एम. जी. रोड, जूनागढ़ सहित आनंद प्रिन्टर्स, 14-जगनाथ प्लाट, राजकोट से छपने वाले 'सिन्धु गुर्जर' समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक जयन्त रेलवानी नामक साहित्यकार एवं पत्रकार हैं। इस समाचार पत्र का सम्पादकीय कार्यालय 7/12-ए जंक्शन प्लाट, राजकोट-360001 (गुजरात) है। यह समाचार पत्र सिन्धी समुदाय की सभी प्रकार की गतिविधियों को प्रकाशित किया करता है। इस समाचार पत्र की एक प्रति का मूल्य 1.50 पैसा है एवं वार्षिक कीमत 30 रुपए रखी गई है।
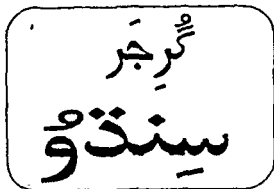
गुजरात प्रदेश के अहमदबाद नगर से साप्ताहिक "सिन्धी टाइम्स" समाचार पत्र निकला करता है। समाचारों एवं सिन्धी समुदाय से जुड़ी सामग्री को प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र की वार्षिक कीमत 80 रुपए है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 500 रुपए है।

हरियाणा

हरियाणा प्रदेश से सिन्धी भाषा का कोई भी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है, जबकि हरियाणा में काफी संख्या में सिन्धी लोग रहा करते हैं।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश में सिन्धी भाषी भी रहा करते हैं, इसके उपरान्त भी वहाँ से कोई भी सिन्धी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है।

जम्मू और क़श्मीर

जम्मू और कश्मीर प्रदेश से सिन्धी भाषा में कोई भी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है।

कर्नाटक

कर्नाटक प्रदेश के बैंगलोर शहर से सिन्धी देवनागरी लिपि में मासिक समाचार पत्र "सुजाग सिन्धी" प्रकाशित होता है। सिन्धी बोली, साहित्य, संस्कृति व सभ्यता से जुड़े सभी प्रकार के लेख, साहित्यक रचनाएं एवं समाचार आदि प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र की कीमत 30 रुपया प्रतिवर्ष है। तीन वर्षो के लिए 85 रुपया शुल्क लिया जाता है। इस अखबार को आजीवन खरीदने वाले ग्राहकों को 500 रुपया देना होता है।

"सुजाग सिन्धी" मासिक पत्र के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक श्रीचन्द नैनाणी (सिन्धी) हैं। यह अखबार सुजाग सिन्धी कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स 72, दूसरा माला, मामुलपेट, बैंगलौर-560053 (कर्नाटक) में छपा करता है तथा इस समाचार पत्र का सम्पादकीय कार्यालय-78, सैकंड फ्लोर, मामुलपेट, बैंगलोर-560053 (कर्नाटक) है। बंगलौर का एक अखबार भी है।

कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर से "सरिता संगम" पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ। सिन्धी समुदाय से जुड़े सभी प्रकार के समाचारों लेखों आदि को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र की वार्षिक कीमत 50 रुपए है तथा वर्षिक शुल्क 1100 रुपए रखा गया है।

केरल

केरल प्रदेश से सिन्धी भाषा में कोई भी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है।

कुछ प्रदेशों से कोई भी सिन्धी भाषी पत्र का न निकलना सचमुच आश्चर्यपूर्ण बात है, क्योंकि इन प्रदेशों में बहुसंख्या में तो नहीं कहे जा सकते, लेकिन काफी संख्या में सिन्धी भाषी लोग रहा करते हैं और वहाँ नौकरियाँ तथा व्यवसाय किया करते हैं। वहाँ से सिन्धी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का न निकलना सिन्धी समाज की उदासीनता का प्रमाण है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में सिन्धी भाषा की पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास के क्षेत्र को यदि हम देखें तो हमें जानकारी मिलती है कि मध्यप्रदेश के श्री [illegible] नगर जिला गुना में वर्ष 1953 में सिन्धी भाषा में 'आनन्द सन्देश' नामक मासिक पत्रिका का छपना प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के मालिक थे श्री परमानन्द सन्त अद्वैत एवं प्रकाशक थे—महात्मा [illegible]। आनन्द सन्देश के मुद्रक थे [illegible]। धर्म एवं दर्शन विषयक इस पत्रिका की कीमत मात्र 25 पैसे हुआ करती थी।

आनन्द सन्देश

इस प्रदेश के 21, सिक्ख मोहल्ला, इन्दौर से वर्ष [illegible] में "[illegible]" नामक [illegible] साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। [illegible] इन्दौर से निकलने वाले इस समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, मालिक एवं सम्पादक हैं [illegible]। इन्दौर के कार्यालय [illegible] प्रेस में छपने वाले इस अखबार की कीमत 25 पैसे [illegible] थी।

इन्दौर शहर के ही 134 पंडरीनाथ पद अदा बाजार से वर्ष 1963 में फिल्म विषयक 'शकुन्तला' नामक मासिक का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक मुद्रक सम्पादक एवं मालिक थे—दीपक कोडनानी। मातृभूमि प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली यह पत्रिका 60 पैसे में बिका करती थी।

मध्यप्रदेश से ही वर्ष 1969 में 'हिन्दभूमि' नामक सिन्धी अखबार का निकलना प्रारंभ हुआ। हिन्दूभूमि कार्यालय 134 पंडरीनाथ पथ, इन्दौर से निकले वाले 'हिन्दुभूमि' समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक और सम्पादक थे दीपक एस. कोडनानी। मातृभूमि प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस समाचार पत्र की मालकिन थी—श्रीमती अन्जना ईसरानी तथा समाचार एवं सामयिक विषयों पर छपने वाले इस पत्र की कीमत थी मात्र पन्द्रह पैसे प्रति कापी।

इस प्रदेश की राजधानी भोपाल से सन् 1964 में 'चैलेन्ज' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ। भोपाल के केसवानी भवन से निकलने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—लक्षमण दास केसवानी। ओम प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस अखबार की 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से

1900 प्रतियाँ बिक्री के लिए थीं एवं 100 प्रतियाँ मित्रों, विभागों आदि को नि:शुल्क वितरित की जाती थीं। समाचार एवं सामयिक विषयक इस अखबार की कीमत मात्र दस पैसे प्रति कापी थी।

भोपाल से ही वर्ष 1970 में 452- सिन्धी कॉलोनी भोपाल से सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में एक द्विभाषीय समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 'फर्ज' नामक यह अखबार ओम प्रिन्टिंग प्रेस में छपा करता था। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर छपने वाले इस

अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—राजेश उधवानी गाइड नामक एक पत्रकार। मात्र दस पैसे में बिकने वाले इस समाचार पत्र की कुल 5500 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 5144 प्रतियों की बिक्री होती थीं तथा बाकी बची 356 प्रतियाँ विभागों आदि को मुफ्त वितरित की जाती थीं।

वर्ष 1972 में भोपाल बैरागढ़ के मैन रोड से 'हंस... एक साप्ताहिक

समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। इस पत्र के मालिक, सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक थे—डा. मेघराज किसूमल। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर सामग्री को प्रकाशित करने वाला यह समाचार पत्र सुनील प्रिंटिंग प्रेस में छपा करता था तथा इस अखबार की कीमत थी मात्र दस पैसे प्रति कापी।

मध्य प्रदेश के ए-32 न्यू क्वाटर्स, बैरागढ़ भोपाल से वर्ष 1971 में 'सिन्धी मशाल' नामक त्रैमासिक निकलना प्रारंभ हुआ। साहित्यक एवं सांस्कृतिक विषयक इस त्रैमासिक के प्रकाशक एवं मुद्रक थे—दयाराम के दरियाणी तथा सम्पादक एवं मालिक का नाम था—शुभचन्द पागल। ओम प्रिंटिंग प्रेस मे छपने वाली यह पत्रिका प्रति कापी 60 पैसे की दर से बिका करती थी।

भोपाल से ही सन् 1973 में हिन्दी एवं सिन्धी भाषी 'काम दो' नामक पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। दादा ट्रेडर, गुरुद्वारा रोड, शहाजहाँबाद, भोपाल से निकलने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—भगवानदास हरचन्दाणी। समाचार एवं सामयिक विषयों पर छपने वाला यह अखबार सुनील प्रिंटिंग प्रेस में छपकर 12 पैसे में एक प्रति की दर से बिका करता था।

मध्यप्रदेश के रायपुर से वर्ष 1974 में फव्वारे के निकट, साथी बाजार से 'सिन्धुड़ी' नामक एक द्विभाषीय साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। पन्द्रह पैसे में हिन्दी एवं सिन्धी भाषा में बिकने वाले इस अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक थे—मुमनदास मुसाफिर। रायपुर के लक्ष्मी प्रेस मे छपने वाला यह समाचार पत्र ताजी खबरो एवं ताजे विषयो संबंधी सामग्री प्रकाशित किया करता था।

इस प्रदेश के जबलपुर नामक शहर से सन् 1975 मे 'आसान राह' नाम से एक सिन्धी एवं हिन्दी में द्विभाषी मासिक पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के मुद्रक थे सहायदूत हुस्सैन कुरेशी। आसान राह के प्रकाशक एवं मालिक थे मालीराम मधियानी तथा सम्पादक थे कन्हैयालाल ईसरानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर आधारित स्टार प्रिंटिंग प्रेस मे छपने वाली इस पत्रिका की कीमत छह रुपये वार्षिक थी।

भोपाल के यादवपुरा शाहजहाँबाद से वर्ष 1983 में हिन्दी एवं सिन्धी (द्विभाषी) में 'जोत जगन्दी रहे' नामक मासिक पत्रिका का प्रारंभ हुआ था। चैलेन्ज प्रिन्टिर्स में छपने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—लखू पहलवानी। विषयक यह पत्रिका एक रुपया प्रति कापी की दर से बिका करती थी।

इन्दौर शहर के ही 134 पंडरीनाथ पद अदा बाजार से वर्ष 1963 में फिल्म विषयक 'शकुन्तला' नामक मासिक का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक मुद्रक सम्पादक एवं मालिक थे—दीपक कोडनानी। मातृभूमि प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली यह पत्रिका 60 पैसे में बिका करती थी।

मध्यप्रदेश से ही वर्ष 1969 में 'हिन्दभूमि' नामक सिन्धी अखबार का निकलना प्रारंभ हुआ। हिन्दूभूमि कार्यालय 134 पंडरीनाथ पथ, इन्दौर से निकले वाले 'हिन्दुभूमि' समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक और सम्पादक थे दीपक एस. कोडनानी। मातृभूमि प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस समाचार पत्र की मालकिन थी—श्रीमती अन्जना ईसरानी तथा समाचार एवं सामयिक विषयों पर छपने वाले इस पत्र की कीमत थी मात्र पन्द्रह पैसे प्रति कापी।

इस प्रदेश की राजधानी भोपाल से सन् 1964 में 'चैलेन्ज' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ। भोपाल के केसवानी भवन से निकलने वाले इस अखवार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—लक्षमण दास केसवानी। ओम प्रिंटिंग प्रेस से छपने वाले इस अखबार की 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से

1900 प्रतियाँ बिक्री के लिए थीं एवं 100 प्रतियाँ मित्रों, विभागों आदि को निःशुल्क वितरित की जाती थीं। समाचार एवं सामयिक विषयक इस अखवार की कीमत मात्र दस पैसे प्रति कापी थी।

भोपाल से ही वर्ष 1970 में 452- सिन्धी कॉलोनी भोपाल से सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में एक द्विभाषीय समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 'फर्ज' नामक यह अखवार ओम प्रिन्टिंग प्रेस में छपा करता था। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर छपने वाले इस

अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—राजेश उधवानी गाइड नामक एक पत्रकार। मात्र दस पैसे में बिकने वाले इस समाचार पत्र की कुल 5500 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 5144 प्रतियों की बिक्री होती थीं तथा बाकी बची 356 प्रतियाँ विभागों आदि को मुफ्त वितरित की जाती थीं।

वर्ष 1972 में भोपाल बैरागढ़ के मैन रोड से 'हंसानन्द' नामक एक साप्ताहिक

समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। इस पत्र के मालिक, सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक थे—डा. मेघराज किसूमल। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर सामग्री को प्रकाशित करने वाला यह समाचार पत्र सुनील प्रिंटिंग प्रेस में छपा करता था तथा इस अखबार की कीमत थी मात्र दस पैसे प्रति कापी।

मध्य प्रदेश के ए-32 न्यू क्वाटर्स, बैरागढ़ भोपाल से वर्ष 1971 में 'सिन्धी मशाल' नामक त्रैमासिक निकलना प्रारंभ हुआ। साहित्यक एवं सांस्कृतिक विषयक इस त्रैमासिक के प्रकाशक एवं मुद्रक थे—दयाराम के. दरियाणी तथा सम्पादक एवं मालिक का नाम था—शुभचन्द पागल। ओम प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली यह पत्रिका प्रति कापी 60 पैसे की दर से बिका करती थी।

भोपाल से ही सन् 1973 में हिन्दी एवं सिन्धी भाषी 'काम दो' नामक पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। दादा ट्रेडर, गुरुद्वारा रोड, शहाजहाँबाद, भोपाल से निकलने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—भगवानदास हरचन्दाणी। समाचार एवं सामयिक विषयों पर छपने वाला यह अखबार सुनील प्रिंटिंग प्रेस में छपकर 12 पैसे में एक प्रति की दर से बिका करता था।

मध्यप्रदेश के रायपुर से वर्ष 1974 में फव्वारे के निकट, साथी बाजार से 'सिन्धुड़ी' नामक एक द्विभाषीय साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। पन्द्रह पैसे में हिन्दी एवं सिन्धी भाषा में बिकने वाले इस अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक थे—भुमनदास मुसाफिर। रायपुर के लक्ष्मी प्रेस मे छपने वाला यह समाचार पत्र ताजी खबरों एवं ताजे विषयों संबंधी सामग्री प्रकाशित किया करता था।

इस प्रदेश के जबलपुर नामक शहर से सन् 1975 मे 'आसान राह' नाम से एक सिन्धी एवं हिन्दी मे द्विभाषी मासिक पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के मुद्रक थे सहायदूत हुस्सैन कुरेशी। आसान राह के प्रकाशक एवं मालिक थे मालीराम मधियानी तथा सम्पादक थे कन्हैयालाल ईसरानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर आधारित स्टार प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली इस पत्रिका की कीमत छह रुपये वार्षिक थी।

भोपाल के यादवपुरा शाहजहाँबाद से वर्ष 1983 मे हिन्दी एवं सिन्धी (द्विभाषी) में 'जोत जगन्दी रहे' नामक मासिक पत्रिका का प्रारभ हुआ था। चैलैन्ज प्रिन्टिर्स मे छपने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—लखू पहलवानी तथा धर्म विषयक यह पत्रिका एक रुपया प्रति कापी की दर से बिका करती थी।

मध्यप्रदेश से सिन्धुड़ी सेवा समिति सिन्धी धर्मशाला, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 से हर वर्ष चेटी-चांद के अवसर पर वार्षिक पत्रिका 'सिन्धुड़ी' का प्रकाशन कई वर्षों से किया जाता रहा है। यह पत्रिका हिन्दी, सिन्धी एवं देवनागरी लिपि में विशेष लेख,

लघु कथाएँ, प्रेरक प्रसंग, कविताएँ आदि सिन्ध प्रदेश से जुड़ी कला एवं संस्कृति का बोध करती हुई भारत देश में रहने वाले समस्त सिन्धी एवं अन्य भाषी लोगों, बुद्धिजीवियों, व्यापारियों, कलाकारों, लेखकों, साहित्यकारों आदि हर तबके के व्यक्तियों से जुड़ी हुई है तथा देश भर में पहुँचाई जाने का प्रयास किया जाता है।

मध्यप्रदेश से ही वर्ष 1984 के आसपास 'सिन्धु भारती' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ है। यह पत्रिका संत कंवरराम सिन्धु नवयुवक मण्डल द्वारा निकाली

सिन्धुभारती

जाती रही है। मध्यप्रदेश के सागर शहर से प्रकाशित होने वाली यह वार्षिक पत्रिका सुन्दर प्रेस सागर में छपा करती थी। सिन्धी समुदाय के बारे में लेख, रचनाएँ ही नहीं बल्कि यह पत्रिका सिंधी भाषा आदि के उत्थान के लिए सिन्धी देवनागरी लिपि में एवं हिन्दी में प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका के सम्पादक मूलचन्द सहदेव नामक पत्रकार हैं तथा उसके सह-संपादक संतोष माधवानी हैं। इस वार्षिक पत्रिका के अन्य पत्रकारों में अशोक मनवानी, सुरेश जसवानी, घनश्याम चन्दानी, नानक खूबचन्दानी मुख्यत: हैं। यह पत्रिका पूर्णत: नि:शुल्क वितरित की जाती रही है।

मध्यप्रदेश के सागर से ही वर्ष 1993 में 'सिन्धु सागर' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। सिन्धी की देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा में प्रकाशित की

जाने वाली यह वार्षिक पत्रिका सिन्धु युवा संस्थान संत कंवरराम वार्ड, सागर से प्रकाशित होती थी। नि:शुल्क वितरित होने वाली इस पत्रिका के प्रधान संपादक गुरुडिनो नागवानी नामक पत्रकार थे तथा इसके संपादक मण्डल में दयाराम चन्दानी, लालचंद नागवानी,

हरीश नागवानी, अशोक जसवानी, सुनील मनवानी, विजय खियानी मुख्य रूप से हैं तथा इसके प्रकाशक सिन्धु युवा संस्थान सागर है। प्रकाश प्रिन्टर्स 17/33, परेड मन्दिर, सदर बाजार, सागर मध्यप्रदेश से प्रकाशित होने वाली यह वार्षिक पत्रिका सिन्धी समुदाय की संस्कृति, रीति-रिवाजों, उपलब्धियों, विशेष विभूतियों, महापुरुषों आदि से संबंधित सामग्री प्रकाशित किया करती है।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से सिंधी देवनागरी लिपि में 'अखण्ड सिंधु संसार' नामक मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। सिंधी सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक समाचारों वाला यह मासिक पत्र ज-185, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, नारियल खेड़ा, भोपाल

से प्रकाशित होता है। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क तीस रुपये है तथा इसके प्रधान संपादक ज्ञानचंद लालवानी नामक पत्रकार हैं। इस समाचार पत्र की मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादिका हैं—अनुराधा लालवानी। भोपाल के आलोक प्रेस तलैया से मुद्रित होने वाला यह अखबार देवनागरी सिंधी में समाचार आदि प्रकाशित करने के अतिरिक्त आवश्यकता पडने पर कभी कभार हिन्दी भाषा में भी सामग्री प्रकाशित किया करता है तथा इस अखबार ने कई बार सिंधी समुदाय के विशेष व्यक्तियों को 'शख्सियत' कालम में प्रमुखता देकर उन्हें उभारा है। इस अखबार के मालिक इस समाचार पत्र को मध्यप्रदेश के अलावा भारत देश के अन्य भागों में भी पहुँचाने का प्रयास करते हैं। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 30 रुपया है तथा आजीवन शुल्क 500 रुपया है।

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर से ही सिंधी भाषी 'अमन-ए-हिन्द' नामक समाचार पत्र का निकलना प्रारंभ हुआ। श्री देव झूरानी नामक पत्रकार द्वारा निकाले जा रहे इस समाचार पत्र की कीमत 50 रुपया वार्षिक है। इस समाचार पत्र के सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री देव झूरानी हैं। यह अखबार काली मंदिर के निकट कालूराम मिस्त्री भवन नं. 16 भोपाल से निकला करता है। रमेश प्रिन्टर्स इस्लामी गेट, शाहजहाँबाद भोपाल से ह

AMAN-E-HIND अमन-ए-हिन्द

समाचार पत्र समाचारों के अलावा सिंधी समुदाय से जुड़ी अन्य गतिविधियों को भी प्रकाशित किया करता है।

मध्यप्रदेश के सिंधी साहित्यकार संघ द्वारा 'सिन्धु धारा' नामक त्रैमासिक पत्रिका निकाली गई। द्विभाषी हिन्दी एवं सिन्धी देवनागरी में निकलने वाली इस पत्रिका के सम्पादक विजय थावानी हैं, जो कि थावानी भवन, शास्त्री नगर रीवा में रहा करते हैं। इस पत्रिका के प्रधान सम्पादक घनश्यामदास बेलानी 'गुलाब' हैं। प्रधान सम्पादक

बेलानी, 79 शांति नगर, कटनी में रहा करते हैं। सिंधु धारा त्रैमासिक का वार्षिक शुल्क 25 रुपये रखा गया है। यह पत्रिका आकाश प्रिन्टर्स कला मंदिर रीवा मध्यप्रदेश से छपा करता है। मध्यप्रदेश के हर शहर में पत्रिका अपना शाखा कार्यालय खोलने का उद्देश्य रखती है, ताकि यह पत्रिका अधिक से अधिक सिंधी भाषियों के हाथों में पहुँच सके तथा सिन्धी साहित्य, सिंधी शिक्षा आदि का विकास हो सके।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर से सिन्धी देवनागरी लिपि में ''सिन्धूक्रांति'' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सिंधी समुदाय से जुड़ी एवं अन्य सभी प्रकार की जानकारियाँ देने वाले इस समाचार पत्र की कीमत एक रुपया प्रति कापी है तथा

सालाना शुल्क 50 रुपये है। यह अखबार के. एल. वासवानी द्वारा चन्दा प्रिन्टर्स, कम्पू रोड, ग्वालियर से प्रकाशित होता है। शहर के जामदार खाना माधोगंज ग्वालियर-1 से प्रकाशित होने वाले इस समाचार पत्र के संस्थापक वैद्य दीपचन्द दुसेजा है। इस समय इस समाचार पत्र के सम्पादक डा. सुरेश कुमार दुसेजा तथा सह-सम्पादक डा. सन्तोष दुसेजा नामक पत्रकार हैं। पत्र का सम्पादकीय कार्यालय जामदार खाना, माधवगंज, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश) है। इस पत्र का आजीवन शुल्क 500 रुपए है।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर से ही आध्यात्मिक सामयिक पत्रिका ''प्रेम प्रकाश संदेश'' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के संस्थापक स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

आध्यात्मिक सामाजिक पत्रिका

थे। इस पत्रिका का प्रकाशन स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश) द्वारा किया जाता है। पत्रिका के प्रकाशक श्रीचन्द पंजवानी हैं। हरितवाल प्रिन्टर्स कदम सा. बाड़ा लश्कर से मुद्रित होने वाली इस पत्रिका के सम्पादक हरिओम श्रीचन्द पंजवानी हैं। सिन्धी समुदाय के संतों महात्माओं के अलावा अन्य सभी प्रकार की आध्यात्मिक एवं सामाजिक उपयोगी रचनाएँ प्रकाशित करने वाली पत्रिका ''प्रेम प्रकाश संदेश'' का सम्पादकीय कार्यालय-स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, गाढ़वे की गोठ, ग्वालियर-474001(मध्यप्रदेश) है। हिन्दी एव सिन्धी भाषा में प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के हिन्दी सस्करण का वार्षिक मूल्य 15 रुपए रखा गया है तथा सिन्धी सस्करण का भी 15 रुपए सालाना शुल्क रखा गया है। भारत देश में इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150 रुपया है तथा विदेशो मे भेजने पर इस पत्रिका का 400 रुपये शुल्क है।

मध्य-प्रदेश के गोरखपुर (जबलपुर) से वर्ष 1996 मे त्रैमासिक 'सिन्धु [illegible] नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। सिन्धी देवनागरी लिपि मे प्रकाशित ''सिन्धु [illegible] देवनगरी लिपि में केवल सिन्धी समुदाय से जुड़ी रचनाएँ ही प्रकाशित नहीं [illegible] बल्कि सिन्धी भाषा में ही स्वास्थय, नारी जगत, बाल जगत आदि अन्य [illegible] आदि पर भी सामग्री प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका मे [illegible] एव ज्ञानवर्द्धक सामग्री भी प्रकाशित की जाती है। पत्रिका के सम्पादक [illegible] सुनील अम्बवाणी तथा सलाहकार साजन दास कुन्दनानी [illegible] हैं। सिन्धु कलम सम्पादकीय कार्यालय-- 1079, [illegible] (म. प्र) 482001 हैं। सी--बेस कम्प्यूटर्स मे [illegible] पत्रिका के सम्पादक एव प्रकाशक सुनील अम्बवाणी [illegible] इस पत्रिका के प्रति अक की एक [illegible]

मध्य प्रदेश से वर्ष 1997 मे सिन्धी देवनागरी लिपि मे ''सिन्ध [illegible] नामक एक पाक्षिक का निकलना प्रारम्भ हुआ [illegible] शहर से [illegible] से निकलने वाले इस अखबार के सम्पादक प्रकाशक एवं मुद्रक [illegible] यह पत्र दुर्गानन्द ऑफसेट प्रिन्टर्स एव पब्लिशर्स, नीमच से छापा जाता।

की सभी प्रकार की समस्याओं को प्रकाश में लाने वाले इस समाचार पत्र की वार्षिक कीमत 100 रुपया है। इस पत्र के मुख्य पृष्ठ पर यह स्लोगन "पढ़ो ऐं पढ़ायो-सिन्धियत

जी जोत जगायो" छापकर सिन्धी समुदाय को अपनी भाषा के प्रति जागरुक किया जाता है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र प्रदेश से वर्ष 1936 में 44, अंगियारी लेन, बाजार गेट के सामने स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई-400001 से त्रिभाषी 'फिल्म न्यूज" नामक मासिक पत्रिका का प्रारंभ हुआ। फिल्म विषयक यह पत्रिका सिन्धी, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में छपा करती थी। इस फिल्मी पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे-परेश के. भागचन्दाणी तथा मालिक का नाम था—बलदेव टी. गाजरा। युगान्तर प्रिन्टर्स, मुंबई में छपने वाली यह पत्रिका 50 पैसे में बिका करती थी।

वर्ष 1938 में महाराष्ट्र के पूना नगर से सैंट मीरा हाई स्कूल, 10-कनाट रोड़, पूना से 'श्याम' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका की सम्पादिका थी—सती बी. थधाणी तथा प्रकाशक एवं मुद्रक थे—एच.एस. सहारी। इस पत्रिका की मालकिन थी—कुमारी एस. बी. थधाणी। सात रुपये वार्षिक कीमत में बिकने वाली यह पत्रिका धर्म एवं दर्शन विषयक थी तथा हुकम प्रेस पूना में छपा करती थी।

महाराष्ट्र से वर्ष 1949 में 11/31 नवजीवन हाऊसिंग सोसायटी, लेमिंग्टन रोड़, मुंबई-400008 से 'राज फिल्मिस्तान' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका की प्रकाशक, मुद्रक, मालिक एवं सम्पादिका थी—श्रीमती एस. जे. लालवानी। भारत जीवन प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई में छपने वाली यह पत्रिका एक रुपये पच्चीस पैसे प्रति कापी की दर से बिका करती थी। इस पत्रिका की कुल 1833 प्रतियां छपा करती थीं, फिल्म विषयक इस पत्रिका की 1710 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा 123 प्रतियाँ सरकारी विभागों आदि को निःशुल्क वितरित की जाती थीं अथवा डाक से भेज दी जाती थीं।

महाराष्ट्र के पूना नगर से वर्ष 1951 में लेबरेटी प्रिंटिंग प्रेस, 661 टेबट एस. टी.

पूना से 'नरगिस' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—पारवन तेज। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका 50 पैसे प्रति कापी की दर से बिका करती थी।

वर्ष 1953 में महाराष्ट्र की राजधानी बम्बई के 19-20 अम्बालाल देसी, स्टेशन फोर्ट, बम्बई से 'हिन्दुस्तान' नामक सिन्धी दैनिक का निकलना प्रारंभ हुआ था। इस अखबार के प्रकाशक मुद्रक टी. सब्बारी थे। सिन्धी भाषी इस दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक मनसोमल ईश्वरदास थे। वार्षिक शुल्क

هندستان

700 रुपए में बिकने वाला यह अखबार दि बम्बई प्रिन्टर्स लि. बम्बई में छपा करता है। समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर कुल 10470 प्रतियाँ छपने वाले इस अखबार की 10184 प्रतियों की बिकी हुआ करती थी तथा 286 प्रतियाँ नि:शुल्क वितरण हेतु प्रकाशित की जाती थी।

बम्बई के 23—हमाम स्ट्रीट फोर्ट नामक स्थल से वर्ष 1953 मे 'हिन्दवासी' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का निकलना आरंभ हुआ। इस अखबार के सम्पादक थे—जैरामदास दौलतराम तथा प्रकाशक मुद्रक थे जी.आर.शर्मा। बम्बई प्रिन्टर्स लि. बम्बई मे 16,616 प्रतियाँ छपने वाले इस अखबार की कीमत थी मात्र 35 पैसे। समाचारो

هندواسي

एवं सामयिक विषयक इस अखबार की 16,245 प्रतियों की बिक्री हुआ करती थी तथा 371 प्रतियाँ मुफ्त वितरित की जाती थीं। वर्तमान मे इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 220 रुपए है।

बम्बई महाराष्ट्र से सन् 1955 मे साधु वासवानी मिशन के मालिकाना हकों तले 'जागो' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—के सी. शिवदासानी। यह पत्रिका 13, गीताजली, विहल्ड रैडज्म कोलाबा, बम्बई-400005 से निकला करती थी। तीन रुपये में एक प्रति
यह मासिक पत्रिका क्राउन प्रिन्टर्स बम्बई से छपता था। इस पत्रिका
प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमे से 2900 प्रतियाँ बेच दी जाती थीं
100 प्रतियाँ सरकारी विभागो, महत्वपूर्ण लोगो, मिशन से
को नि:शुल्क दी जाती थीं। यह पत्रिका धर्म एवं दर्शन

वर्ष 1956 में गुड्स सुप्रिन्टेन्डेन्ट ऑफिस, बाड़ी बन्दर गुड्स डिपो, मोंजगांव बम्बई-10 से वार्षिकी 'मूमल' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस जर्नल के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—टी.ए. दिनानी तथा इसके मालिकाना हक थे—सेन्ट्रल रेल्वे सिन्धी सभा बम्बई के पास। यह जर्नल अमृत प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर-3 में छपा करता था तथा यह पत्रिका पूर्णरूप से नि:शुल्क वितरण के लिए थी।

महाराष्ट्र के पूना जिले के 661 ताबूत स्ट्रीट से सन् 1959 में 'इन्कार' नामक साप्ताहिक अंखवार शुरू किया गया। इस समाचार पत्र के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—पी.टी.गोपालदास। लिबर्टी प्रेस पूना में छपने वाले पचास पैसे प्रति अंक की कीमत वाले इस अखबार की नीति धर्म एवं शास्त्रों संबंधी सामग्री प्रकाशित करने का थी।

वर्ष 1960 में 4—ग्रेट वेस्टर्न बिल्डिंग दूसरी मंजिल पर स्थित कमरा नं. 4, अपोलो स्ट्रीट बम्बई-400001 से सिन्धी मासिक 'कूंज' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—श्री पी.एच.मोटवानी तथा मालिक थे—हरि मोटवानी। केवल साठ पैसे में बिकने वाली यह पत्रिका इन्कलाब प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपा करती है तथा

इसमें साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों को लेकर सामग्री छापी जाती है। इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क 60 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 500 रुपए लगा करता है।

वर्ष 1962 में दि भारत प्रिंटिंग प्रेस 1/11 नवजीवन को-ओपरेटिव हाऊसिंग सोसाईटी लेमिंग्टन रोड़, बम्बई से साप्ताहिक 'भारत जीवन' शुरू हुआ। समाचार एवं सामयिक विषयक इस अखबार की सम्पादिका श्रीमती सरोज सी. मालिनी थी तथा प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—जे.बी. लालवानी तथा 20 पैसे में बिकने वाले इस अखबार की 16000 प्रतियाँ छपा करती थीं।

वर्ष 1962 में 57—अंगियारी लेन, फोर्ट बम्बई स्थित सिन्धी टाइम पब्लिकेशन द्वारा 'सिन्धी टाइम्स' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह पत्र अशोक प्रेस उल्लासनगर में छपा करता था तथा 15 पैसे में बिकने वाले इस अखबार के सम्पादक,

प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—सुरेश पी. परियानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर छपने वाले इस सिन्धी टाइम्स की 6000 प्रतियाँ छापी जाती थीं, जिनमें से 4800

प्रतियों की बिक्री हुआ करती थी तथा 1200 प्रतियाँ मुफ्त वितरित की जाती थीं।

सन् 1963 में 7—कृष्णा कुटीर, कृपाली रोड़, बम्बई-52 से 'फ्रीहा फ्रूटी' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—लाल राजवानी। दो रुपये कीमत वाली यह पत्रिका सिन्धु आर्ट प्रिन्टर्स बम्बई से छपा करती थी तथा यह पत्रिका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक थी।

वर्ष 1964 में 141/253 नालन्दा कालोनी, बम्बई-32 से प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक अशोक वी. किशोरानी ने मासिक 'आनन्द मार्ग' का प्रकाशन प्रारंभ किया। वर्तमान घटनाओं पर आधारित यह पत्रिका जगदीश प्रिन्टर्स स्टेशन रोड़, उल्लासनगर-3 से छपा करती थी तथा इसकी कीमत मात्र दस रुपये प्रति कापी थी।

महाराष्ट्र बम्बई के 260/1 साने गुरुजी रोड़, हैरिसन प्रिन्टर्स से वर्ष 1965 में 'प्रेम प्रचारक' नामक अखबार का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। धर्म और दर्शन विषयक इस अखबार

پريم پرچارڪ

PREM PRACHARAK Weekly

के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—नरसिंह मोटूमल तथा यह पत्र 25 पैसे प्रति दर की कीमत से बिका करता था।

महाराष्ट्र के 302—ध्वनि पेठ पूना-2 से वर्ष 1965 में द्विभाषी सिन्धी एवं अग्रेजी में 'फाकड़ फाड़' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ था। समाचारों एवं सामयिक विषयों वाले इस अखबार के प्रकाशक सम्पादक एवं मालिक थे—एल.एच. किशनानी।

पूना से ही सन् 1965 में द्विभाषी सिन्धी और अंग्रेजी मे 'सिन्धी न्यूज' नामक साप्ताहिक का निकलना प्रारंभ हुआ। यह समाचार पत्र 1998-आर.एस.केदारी रोड़, पूना-1 से निकलता था। मिनकी प्रिंटिंग प्रेस पूना मे छपने वाले इस अखबार की कीमत मात्र 10 पैसे हुआ करती थी। विविध समुदाय विषयक इस पत्र के मालिक प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—टी जी सबनानी।

वर्ष 1968 में जगदीश बुक डिपो उल्लासनगर-2 (बम्बई) से 'फिल्म फैशन्स' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—इन्द्र लालवानी। फिल्म विषयक यह पत्रिका 40 पैसे मे बिका करती थी तथा महेश प्रिंटिंग उल्लासनगर-4 में छपा करती थी।

वर्ष 1968 में कमला हाई स्कूल खार बम्बई द्वारा वार्षिकी स्कूल पत्रिका 'विद्या' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक मोती निर्मलदास थे तथा मुद्रक थे एच.एम.गुरूबक्शानी। इस वार्षिक पत्रिका की सम्पादिका थी—कुमारी सीर
प्रभु प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में छपने वाली इस पत्रिका के मालिकाना हक

स्कूल खार बम्बई के पास थे। इस पत्रिका की 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं तथा इसकी सभी प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

जयहिन्द स्कूल पिपरी कालोनी पूना द्वारा वर्ष 1969 में सिन्धी, अंग्रेजी, हिन्दी व मराठी अर्थात् चार भाषाओं वाली 'विद्यालय पत्रिका' का वार्षिक प्रकाशन प्रारंभ किया गया। मुफ्त वितरित की जाने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—अर्जुन थावंडस भंडारी। इस पत्रिका के मालिकाना हक जयहिन्द हाई स्कूल के पास थे तथा यह हुकुम प्रिंटिंग प्रेस पूना से छपा करती थी।

जरीपकटा नागपुर से वर्ष 1970 में जे. के. मोहिनानी के प्रकाशन, मुद्रण एवं मालिकाना हकों तले 'रोशनी' नामक अखबार का प्रकाशन हुआ। सिन्धी प्रिन्टर्स में छप रहे इस समाचार पत्र की कीमत मात्र 15 पैसे थी। इस अखबार के सम्पादक थे—एम.एच. आसूदानी।

महाराष्ट्र बम्बई से वर्ष 1970 में 280 लोकमान्य तिलक रोड, 2, रामचन्द्र भवन, बम्बई-2 से 'वीर भारत' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर यह अखबार जानकी प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई में छपा करता था। केवल पच्चीस पैसे में बिकने वाले 'वीर भारत' नामक इस समाचार पत्र के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—हरी आत्माराम समताणी।

बम्बई के ए-28490 बजाज निवास उल्लासनगर-1 क्षेत्र से सन् 1970 में 'युगधारा' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के मालिक, प्रकाशक, सम्पादक तथा मुद्रक थे—कृष्णलाल एस.बजाज। चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस एवं एक अन्य प्रेस में छपने वाली यह पत्रिका 40 पैसे कापी प्रति की दर से बिका करती थी तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषयक सामग्री को प्रकाशित किया करती थी।

महाराष्ट्र के बम्बई नगर से वर्ष 1971 में 12/411 चैम्बूर कॉलोनी, बम्बई-34 से 'सिन्धु मिलाप' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। समाचारों एवं सामयिक विषयों वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—अमर आर. असराणी तथा मालकिन थी—शोभा वी. असरानी। हरिसन्स प्रिन्टर्स बम्बई में छपने वाला यह अखबार केवल पन्द्रह पैसे में बिका करता था।

महाराष्ट्र के पूना से सन् 1971 में हिन्दी एवं सिन्धी द्विभाषी 'हलचल' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह समाचार पत्र 30/6, पी.डब्ल्यू.डी. पिम्परी कॉलोनी, पूना-17 से निकलता है। साप्ताहिक हलचल के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक अजीत एन. किशरे थे।

इस समाचार पत्र की प्रसार संख्या 2000 थी, जिसमें से 1800 प्रतियाँ बिका करती

थीं बाकी 200 प्रतियाँ आवश्यक सरकारी विभागों आदि को मुफ्त भेज दी जाती थीं। इस अखबार की नीति समाचार एवं सामयिक विषयक थी। इस पत्र का वार्षिक कीमत 100 रुपया है तथा आजीवन शुल्क 1000 रुपया है।

बम्बई के 71—बी. कामगार नगर, कुरला नगर, बम्बई-24 से वर्ष 1971 में 'वारियल' नामक सिन्धी और अंग्रेजी में द्विभाषी पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सामयिक विषयों पर आधारित इस पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—एन.पी.के. सोनी। लाल प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर-3 में छपने वाली इस पत्रिका की कीमत मात्र एक रुपया प्रति कापी थी ।

महाराष्ट्र बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सन् 1971 में 'उल्लास आवाज' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह सिन्धी एवं अंग्रेजी भाषा में छपा करता था । कमरा नं. 5-6, एच.के.नं. 322 ए. उल्लासनगर-2 से निकलने वाला यह पत्र 20 पैसे में बिकता था । चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाले इस पत्र के प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक एव मालिक थे—बी.जी.दानी।

महाराष्ट्र से वर्ष 1971 में जी-3, जवाहर अपार्टमेन्ट अग्रवाल कालेज पूना-2 से द्विभाषी अंग्रेजी और सिन्धी भाषा में 'जननी' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सामयिक विषयों वाला यह अखबार फाईन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस पूना में छपता था । केवल दस पैसे में बिकने वाले इस पत्र में मालिक, प्रकाशन, सम्पादक थे—एच. एम पारवानी ।

पूना नगर से ही सन् 1971 में 'कोयल' नामक सिन्धी पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ था । यह पत्रिका बी. ब्लाक, 14-15 प्रेमपुरी, पूना-17 से छपा करती थी । इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—रेनों गुमानमल एच.नेवहानी तथा मालिक का नाम था-मनोहर एच. नेवहानी । यह पत्रिका मानू प्रिंटिंग प्रेस पूना में छपा करता था। दस पैसे प्रति कापी की कीमत वाली यह पत्रिका सांस्कृतिक, साहित्यिक विषयों पर सामग्री छापा करती थी ।

वर्ष 1971 में तीसरा रोड खार बम्बई-52 से द्विभाषी ''निर्मल जोत'' मासिक पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एव सम्पादक थे-सी एन गुश्रबियानी । निर्मल जोत पब्लिकेशन बम्बई द्वारा निकाली जा रही मासिक 'निर्मल जोत' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक पत्रिका थी तथा सिन्धी तथा अंग्रेजी भाषा में छपा करती थी ।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सन् 1972 मे सिन्धी, हिन्दी, अंग्रेजी एवं मराठी चार भाषाओं वाले साप्ताहिक पत्र 'लीडर ऑफ उल्लासनगर' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। लाल प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर-3 मे छपने वाले इस पत्र के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक डी.सी. गोस्वामी थे । समाचारों एवं सामाजिक विषयक इस पत्र की कुल एक हजार प्रतियाँ छपा करती थीं, जिसमे से 800 प्रतियाँ बेची जाती थीं तथ 200 कापियाँ मुफ्त वितरित की जाती थीं ।

स्कूल खार बम्बई के पास थे। इस पत्रिका की 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं तथा इसकी सभी प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

जयहिन्द स्कूल पिपरी कालोनी पूना द्वारा वर्ष 1969 में सिन्धी, अंग्रेजी, हिन्दी व मराठी अर्थात् चार भाषाओं वाली 'विद्यालय पत्रिका' का वार्षिक प्रकाशन प्रारंभ किया गया। मुफ्त वितरित की जाने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—अर्जुन थावंडस भंडारी। इस पत्रिका के मालिकाना हक जयहिन्द हाई स्कूल के पास थे तथा यह हुकुम प्रिंटिंग प्रेस पूना से छपा करती थी।

जरीपकटा नागपुर से वर्ष 1970 में जे. के. मोहिनानी के प्रकाशन, मुद्रण एवं मालिकाना हकों तले 'रोशनी' नामक अखबार का प्रकाशन हुआ। सिन्धी प्रिन्टर्स में छप रहे इस समाचार पत्र की कीमत मात्र 15 पैसे थी। इस अखबार के सम्पादक थे—एम.एच. आसूदानी।

महाराष्ट्र बम्बई से वर्ष 1970 में 280 लोकमान्य तिलक रोड, 2, रामचन्द्र भवन, बम्बई-2 से 'वीर भारत' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर यह अखबार जानकी प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई में छपा करता था। केवल पच्चीस पैसे में बिकने वाले 'वीर भारत' नामक इस समाचार पत्र के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे—हरी आत्माराम समताणी।

बम्बई के ए-28490 बजाज निवास उल्लासनगर-1 क्षेत्र से सन् 1970 में 'युगधारा' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के मालिक, प्रकाशक, सम्पादक तथा मुद्रक थे—कृष्णलाल एस.बजाज। चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस एवं एक अन्य प्रेस में छपने वाली यह पत्रिका 40 पैसे कापी प्रति की दर से बिका करती थी तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषयक सामग्री को प्रकाशित किया करती थी।

महाराष्ट्र के बम्बई नगर से वर्ष 1971 में 12/411 चैम्बूर कॉलोनी, बम्बई-34 से 'सिन्धु मिलाप' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। समाचारों एवं सामयिक विषयों वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक थे—अमर आर. असराणी तथा मालकिन थी—शोभा वी. असरानी। हरिसन्स प्रिन्टर्स बम्बई में छपने वाला यह अखबार केवल पन्द्रह पैसे में बिका करता था।

महाराष्ट्र के पूना से सन् 1971 में हिन्दी एवं सिन्धी द्विभाषी 'हलचल' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह समाचार पत्र 30/6, पी.डब्ल्यू.डी. पिम्परी कॉलोनी, पूना-17 से निकलता है। साप्ताहिक हलचल के सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक अजीत एन. किशरे थे।

इस समाचार पत्र की प्रसार संख्या 2000 थी, जिसमें बिका करती

थे—पी.एन.मनचन्दा तथा सम्पादक थे—प्रीतम एच शहानी । इस धार्मिक पत्रिका की कीमत मात्र एक रुपया थी तथा इसकी कुल 1750 प्रतियाँ हर माह छपा करती थी । यह पत्रिका हुकुम प्रेस पूना-1 में छपा करती है ।

महाराष्ट्र बम्बई के 20/19 आशीर्वाद वाडला बम्बई-31 से सन् 1977 में 'सनातन सारथी' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । धर्म विषयक इस पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक थे—दीवानदास कोडूमल किशनानी तथा सम्पादक थे जगत अडवानी । सिन्धु आर्ट, 7-बी बम्बई 400 008 से छपने वाली इस पत्रिका के मालिक थे-श्री सत्य बोर्ड एजूकेशन और पब्लिकेशन महाराष्ट्र स्टेट बम्बई । केवल सात रुपये में बिकने वाली इस पत्रिका की 2176 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 2160 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी 16 प्रतियाँ मुफ्त बाँटी जाती हैं।

लाल प्रिंटिंग प्रेस अमरनाथ रोड, उल्लासनगर-3 से सन् 1978 में प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक तथा मालिक आर.वी. रामचन्दाणी ने 'भारत टाइम्स' का प्रकाशन आरंभ किया। वर्तमान घटनाओं को लेकर छपने वाले इस अखबार की कीमत 20 पैसे प्रति कापी थी तथा इस पत्र की 1400 प्रतियाँ छपा करती थी । मासिक "भारत टाइम्स" की छपने वाली 1400 प्रतियो मे से 1300 प्रतियाँ बेची जाती थीं तथा 100 प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित की जाती थीं।

वर्ष 1978 में 837—शास्त्री कालोनी उल्लासनगर से मालिक, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक मनोहर के जेसवानी ने 'देशभक्त' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया । यह अखबार 12 पैसे में बिका करता था तथा जगदीश प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड, उल्लासनगर-3 मे छपा करता था । इस पत्र में वर्तमान घटनाएँ छापी जाती थीं ।

सन् 1979 में अमूल निकास, शास्त्री कालोनी उल्लासनगर-3 से मासिक 'सिन्धुवाणी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सिन्धुवाणी के सम्पादक, मुद्रक तथा मालिक थे-मोहन ए.

वर्ष 1974 में 399 उल्लासनगर-1 से द्विभाषी सिन्धी तथा अंग्रेजी में 'सिन्धी एक्सप्रेस' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सामायिक विषयों पर छपने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—एन.पी.भारती तथा कीमत थी पांच रुपये वार्षिक । यह पत्रिका चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर से छपा करती थी ।

महाराष्ट्र बम्बई से सन् 1974 में 7—निर्मल आनन्द नवरंग सिनेमा के सामने, जे.पी.रोड अन्धेरी बम्बई से 'शक्तिधारा' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। त्रिभाषी सिन्धी अंग्रेजी और हिन्दी में निकलने वाले इस पत्र के प्रकाशक एवं मुद्रक थे-भगवानदास । पत्र के सम्पादक का नाम पुरुषोत्तम सी.भगवती था । पत्र की मालिक अखिल भारतीय पूजावन हाल पंचायत थी । सामयिक विषयों पर डीलक्स प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपने वाली मासिक शक्ति की कुल 500 प्रतियाँ छपा करती थीं ।

वर्ष 1975 में 135/ए, सिंगल ब्लाक जाटी पक्ष, नागपुर-10 से 'लाईट-मोर-लाईट' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक थे-चन्दनलाल के. हेमराजानी । इस पत्र के सम्पादक थे-नरेन्द्र आसूदानी । रामा प्रिन्टर्स प्रेस नागपुर में छपने वाला यह अखबार केवल 50 पैसे प्रति कापी की दर से बिका करता था ।

महाराष्ट्र के 75-ए, पहली मंजिल लक्ष्मी मार्केट उल्लासनगर-3 से वर्ष 1975 में मासिक पत्रिका 'सझरो' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे-गोर्धन डी. तनवानी । महेश प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर से छपने वाली यह पत्रिका तीस पैसे में बिका करती थी । यह पत्रिका साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विषयक सामग्री प्रकाशित किया करती थी ।

बम्बई के 141/253 सरस्वती चौक मुलन्द कालोनी बम्बई 400082 से सन् 1976 में 'आर्यमार्ग' नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रारंभ हुआ था । हरिसन्स प्रिन्टर्स में छपने वाली यह पत्रिका एक रुपये में बिका करती थी । धर्म एवं दर्शन विषयक इस पत्रिका की 1000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 277 प्रतियां बेची जाती थी एवं बाकी की 723 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं । इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक अशोक वी. किशोराणी थे ।

वर्ष 1976 में बी-6-ए राखी बिल्डिंग एम.जी.रोड, खाण्डी वाली, बम्बई-67 से 'रूह रिहाण' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । साहित्यिक एवं सास्कृतिक विषयक इस मासिक पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे—गोविन्द माल्ही। सिन्धु आर्ट प्रिंटिंग प्रेस बम्बई में छपने वाली इस पत्रिका की कीमत मात्र एक रुपया प्रति कापी थी ।

वर्ष 1976 में 5/20 साधु वासवानी कुंज, 3— एस.वी.रोड, पूना-1 से मासिक 'सन्त साहित्य' का प्रकाशन आरंभ हुआ । इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक

थे—पी.एन.मनचन्दा तथा सम्पादक थे—प्रीतम एच शहानी । इस धार्मिक पत्रिका की कीमत मात्र एक रुपया थी तथा इसकी कुल 1750 प्रतियाँ हर माह छपा करती थी । यह पत्रिका हुकुम प्रेस पूना-1 में छपा करती है ।

महाराष्ट्र बम्बई के 20/19 आशीर्वाद याडला बम्बई-31 से सन् 1977 में 'सनातन सारथी' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । धर्म विषयक इस पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक थे—दीवानदास कोड्मल किशनानी तथा सम्पादक थे जगत अडवानी । सिन्धु आर्ट, 7-बी बम्बई 400 008 से छपने वाली इस पत्रिका के मालिक थे-श्री सत्य बोर्ड एजूकेशन और पब्लिकेशन महाराष्ट्र स्टेट बम्बई । केवल सात रुपये में बिकने वाली इस पत्रिका की 2176 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 2160 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी 16 प्रतियाँ मुफ्त बाँटी जाती हैं।

लाल प्रिंटिंग प्रेस अमरनाथ रोड, उल्लासनगर-3 से सन् 1978 में प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक तथा मालिक आर.वी. रामचन्दाणी ने 'भारत टाइम्स' का प्रकाशन आरंभ किया। वर्तमान घटनाओ को लेकर छपने वाले इस अखबार की कीमत 20 पैसे प्रति कापी थी तथा इस पत्र की 1400 प्रतियाँ छपा करती थी । मासिक "भारत टाइम्स" की छपने वाली 1400 प्रतियों मे से 1300 प्रतियाँ बेची जाती थीं तथा 100 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं।

वर्ष 1978 में 837—शास्त्री कालोनी उल्लासनगर से मालिक, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक मनोहर के. जेसवानी ने 'देशभक्त' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया । यह अखबार 12 पैसे में बिका करता था तथा जगदीश प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड, उल्लासनगर-3 में छपा करता था । इस पत्र में वर्तमान घटनाएँ छापी जाती थीं ।

सन् 1979 में अमूल निकास, शास्त्री कालोनी उल्लासनगर-3 से मासिक 'सिन्धुवाणी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सिन्धुवाणी के सम्पादक, मुद्रक तथा मालिक थे-मोहन ए.

पटनानी । बाल प्रिंटिंग प्रेस, उल्लासनगर-3 में छपने वाली इस पत्रिका की कीमत थी मात्र 25 पैसे प्रति अंक । सामयिक विषयों पर छपने वाली इस पत्रिका की 1000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 800 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी बची 200 प्रतियां निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

बम्बई शहर के उल्लासनगर-4 से सन् 1980 में बी.के.—1482/1, सी-30/बी, उल्लासनगर जिला थाणे से मासिक 'संदेश भारत' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । इस पत्र के मुद्रक, सम्पादक, मालिक तथा प्रकाशक थे- नरेन्द्र रजनी। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका राजू प्रिंटिंग प्रेस में छपा करती थी। इस पत्र की वार्षिक कीमत 150 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 750 रुपए लिया जाता है।

वर्ष 1983 में महाराष्ट्र के उल्लासनगर से 'नगर न्यूज' नामक दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । चित्रकला प्रेस, इम्पायर मार्केट के समीप उल्लासनगर से छपने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे-बी.पी. पंजवानी तथा 30 पैसे में बिकने वाला यह समाचार पत्र समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर छापा जाता है ।

सन् 1983 में 270 सिन्ध सोसाईटी, गणेश खण्ड पूना-7 से दो भाषाओं वाली त्रैमासिक 'रोशन सिन्धु' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । समाज कल्याण विषयक इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक श्री लोचन मूलचन्द खूबचन्दाणी थे । मुफ्त बंटने वाली यह पत्रिका सिन्धु प्रोमोटर्स काउंसिल द्वारा विकास प्रिन्टर्स पूना में छपवाई जाती है ।

बम्बई के 128/3 उल्लासनगर-1 से 'देशवासी' नामक सिन्धी एवं अग्रेजी में द्विभाषी पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सामयिक विषयों पर निकलने वाला यह पत्र चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपा करता है । इस पत्र का मालिक सिन्धु नगर जनता मंडल था । मात्र 25 पैसे में बिकने वाले इस पाक्षिक के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे—पी. जे. मूलचन्दानी ।

महाराष्ट्र बम्बई के पास बी.के.—681, महात्मा गांधी नगर, उल्लासनगर-3 से 'गुलाबी गुवार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे-किशोर पूजा । यह अखबार गणेश प्रिन्टर्स उल्लासनगर-3 में छपा करता था । तीस पैसे प्रति अंक की दर से बिकने वाला यह पत्र बच्चों के लिए छापा जाता था ।

महाराष्ट्र के अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य 1-5 सरस्वती सोसाइटी 819-ए, भवानी पेठ पूना 411042 द्वारा वर्ष 1988 में सिन्धी भाषा में साहित्य इतिहास और

* सिंधी सूंहों *

(सिंधी भाषा में साहित्य, इतिहास ऐं भाषा जो खोजनात्मक हिकुई मखज़िन)

भाषा संबंधी खोजनात्मक पत्रिका 'सिन्धी सूहों' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह पत्रिका हिन्दी एवं सिन्धी द्विभाषा में निकला करती थी। यह पत्रिका नोवेल प्रिन्टर्स प्रा. लिमिटेड पूना में छपा करती थी। इस खोजपूर्ण पत्रिका के सम्पादक पंडित किशनचन्द टोपणलाल जेतली थे तथा प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक थी-अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य विद्व परिषद् पूना ।

वर्ष 1993 में सिन्धी परिवारों के लिए सिन्धी समुदाय से संबंधित समाचार लेख आदि प्रकाशित करने वाली 'देशप्रेमी' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह पत्रिका सिन्धी समाज की सभी प्रकार की गतिविधियों से समाज को अवगत कराती हुई 12 शिवधाम 16वां रास्ता, रामकृष्ण मिशन मार्ग, सांताक्रुज बम्बई-400 054 से निकला करती है ।

इस पत्रिका के संपादक अशोक वरियानी तथा व्यवस्थापक दिनेश वरियानी नामक पत्रकार हैं । सिन्धी समुदाय को फैशन, राजनीति, वैवाहिक सूचनाएँ तथा अन्य लगभग सभी विषयों की जानकारी देने वाली यह पत्रिका ममता प्रिन्टर्स, 208, अमीर इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, मनमिल कम्पाउण्ड, लोअर परेल बम्बई-400013 से छपा करती है तथा इसकी प्रति अंक कीमत पाँच रुपया एक कापी है।

महाराष्ट्र बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से बच्चों की पत्रिका 'गुलदस्तो' निकालना प्रारंभ हुई। इस पत्रिका की प्रकाशक श्रीमती प्रमिला पब्लिकेशन सिंधु नगर है। बाल पत्रिका 'गुलदस्तो' अशोक प्रेस उल्लासनगर में छपा करती है। इस पत्रिका के सम्पादक हरो तनवाणी निमाणों हैं तथा पत्रिका की कुल एक हजार प्रतियाँ छपा करती हैं। पत्रिका में बच्चों से जुड़ी कहानियाँ कविताएँ गीत आदि प्रकाशित होते हैं।

पटनानी । बाल प्रिंटिंग प्रेस, उल्लासनगर-3 में छपने वाली इस पत्रिका की कीमत थी मात्र 25 पैसे प्रति अंक । सामयिक विषयों पर छपने वाली इस पत्रिका की 1000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 800 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी बची 200 प्रतियां निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

बम्बई शहर के उल्लासनगर-4 से सन् 1980 में बी.के.—1482/1, सी-30/बी, उल्लासनगर जिला थाणे से मासिक 'संदेश भारत' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था । इस पत्र के मुद्रक, सम्पादक, मालिक तथा प्रकाशक थे-नरेन्द्र रजनी। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका राजू प्रिंटिंग प्रेस में छपा करती थी। इस पत्र की वार्षिक कीमत 150 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 750 रुपए लिया जाता है।

वर्ष 1983 में महाराष्ट्र के उल्लासनगर से 'नगर न्यूज' नामक दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । चित्रकला प्रेस, इम्पायर मार्केट के समीप उल्लासनगर से छपने वाले इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे-बी.पी. पंजवानी तथा 30 पैसे में बिकने वाला यह समाचार पत्र समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर छापा जाता है ।

सन् 1983 में 270 सिन्ध सोसाईटी, गणेश खण्ड पूना-7 से दो भाषाओं वाली त्रैमासिक 'रोशन सिन्धु' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । समाज कल्याण विषयक इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक श्री लोचन मूलचन्द खूबचन्दाणी थे । मुफ्त बंटने वाली यह पत्रिका सिन्धु प्रोमोटर्स काउंसिल द्वारा विकास प्रिन्टर्स पूना में छपवाई जाती है ।

बम्बई के 128/3 उल्लासनगर-1 से 'देशवासी' नामक सिन्धी एवं अंग्रेजी में द्विभाषी पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । सामयिक विषयों पर निकलने वाला यह पत्र चित्रकला प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपा करता है । इस पत्र का मालिक सिन्धु नगर जनता मंडल था । मात्र 25 पैसे में बिकने वाले इस पाक्षिक के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे—पी. जे. मूलचन्दानी ।

महाराष्ट्र बम्बई के पास बी.के.—681, महात्मा गांधी नगर, उल्लासनगर-3 से 'गुलाबी गुवार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक थे-किशोर पूजा । यह अखबार गणेश प्रिन्टर्स उल्लासनगर-3 में छपा करता था । तीस पैसे प्रति अंक की दर से बिकने वाला यह पत्र बच्चों के लिए छापा जाता था ।

महाराष्ट्र के अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य 1-5 सरस्वती सोसाइटी 819-ए, भवानी पेठ पूना 411042 द्वारा वर्ष 1988 मे सिन्धी भाषा में साहित्य इतिहास और

* सिंधी सूंहों *

(सिंधी भाषा में साहित्य, इतिहास ऐं भाषा जो खोजनात्मक हिकुई मखज़िन)

भाषा संबंधी खोजनात्मक पत्रिका 'सिन्धी सूहों' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह पत्रिका हिन्दी एवं सिन्धी द्विभाषा में निकला करती थी। यह पत्रिका नोबेल प्रिन्टर्स प्रा. लिमिटेड पूना मे छपा करती थी। इस खोजपूर्ण पत्रिका के सम्पादक पंडित किशनचन्द टोपणलाल जेतली थे तथा प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक थी-अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य विद्व परिषद् पूना ।

वर्ष 1993 में सिन्धी परिवारो के लिए सिन्धी समुदाय से संबंधित समाचार लेख आदि प्रकाशित करने वाली 'देशप्रेमी' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह पत्रिका सिन्धी समाज की सभी प्रकार की गतिविधियों से समाज को अवगत कराती हुई 12 शिवधाम 16वां रास्ता, रामकृष्ण मिशन मार्ग, सांताक्रुज बम्बई-400 054 से निकला करती है ।

इस पत्रिका के संपादक अशोक वरियानी तथा व्यवस्थापक दिनेश वरियानी नामक पत्रकार हैं । सिन्धी समुदाय को फैशन, राजनीति, वैवाहिक सूचनाएँ तथा अन्य लगभग सभी विषयों की जानकारी देने वाली यह पत्रिका ममता प्रिन्टर्स, 208, अमीर इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, सनमिल कम्पाउण्ड, लोअर परेल बम्बई-400013 से छपा करती है तथा इसकी प्रति अंक कीमत पाँच रुपया एक कापी है।

महाराष्ट्र बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से बच्चों की पत्रिका 'गुलदस्तो' निकालना प्रारंभ हुई। इस पत्रिका की प्रकाशक श्रीमती प्रमिला पब्लिकेशन सिंधु नगर है। बाल पत्रिका 'गुलदस्तो' अशोक प्रेस उल्लासनगर में छपा करती है। इस पत्रिका के सम्पादक हरी तनवाणी निमार्णों हैं तथा पत्रिका की कुल एक हजार प्रतियाँ छपा करती हैं। पत्रिका में

बच्चों से जुड़ी कहानियाँ कविताएँ गीत आदि प्रकाशित होते हैं।

बम्बई से ही मासिक समाचार पत्र 'सिन्धु सुजाग' का छपना प्रारंभ हुआ। इस पत्र के मुद्रक एवं प्रकाशक बी.के. अरुण हैं। सौरठ पब्लिकेशन द्वारा छपने वाला यह

पत्र 3/41 आदर्श नगर प्रभादेवी बम्बई से छपा क़रता है। यह अखबार बम्बई के सुन्दरी प्रिंटिंग प्रेस, नीयर म्युनिसिपल स्कूल गांधी बाजार रोड़, चैम्बूर कालोनी बम्बई में छपा करता है। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह मासिक पत्र सिंधी समुदाय से संबंधित समाचारों आदि को प्रकाशित किया करता है।

बम्बई से सिंधी साप्ताहिक 'मेहराण' नामक एक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। बम्बई के सिन्धुनगर क्षेत्र के गोल मैदान स्थित सुपर स्टार अपार्टमेन्ट के ग्राउण्ड फ्लोर के कार्यालय नं. 1 से छपने वाले इस साप्ताहिक के प्रकाशक, मुद्रक, मालिक एवं सम्पादक हरी तनवाणी 'निमाणो' हैं। चार पृष्ठों वाला यह साप्ताहिक पत्र वर्ष 1987 में निकलना प्रारंभ हुआ था। देश भर में फैले अपने ग्राहकों को यह पत्र पहुँचाये जाने का प्रयत्न किया जाता है। ग्राहकों के अलावा इस पत्र की प्रतियाँ सिंधी बुद्धिजीवियों एवं सरकारी कार्यालय आदि को निःशुल्क भी भेजी जाती हैं। इस पत्र की वार्षिक कीमत 100 रुपया है तथा आजीवन तक अखबार मंगाने का शुल्क 500 रुपया है।

सिंधी समुदाय के मन में जागरूकता पैदा करने के लिए सिंधी समुदाय से जुड़े तीज त्यौहारों हेतु नागपुर महाराष्ट्र से 'जय जन जागृति' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रारंभ किया गया। हिन्दी के अलावा आवश्यकता पड़ने पर देवनागरी सिंधी में भी सामग्री प्रकाशित करने वाले जय जन जागृति के प्रबन्ध

सम्पादक कुमार मंगलानी हैं। इस पत्र के संपादक का नाम है—तुलसी सेतिया। इस समाचार पत्र के मालिक एवं प्रकाशक हैं-दलपतराय संतुमल मंगलानी। पुष्पा आफेसट वर्क्स, रूईकर रोड़, चिटणीस पार्क, नागपुर से छपने वाले इस साप्ताहिक का सम्पादकीय पता है-जय जन जागृति कार्यालय जरसिटका नागपुर। महाराष्ट्र से छपने वाली इस साप्ताहिक की कीमत तीन रुपये प्रति कापी रखी गई है तथा इस पत्र में समाचार लेख आदि सामग्री प्रकाशित की जाती है।

महाराष्ट्र के उल्लासनगर क्षेत्र से साप्ताहिक 'उल्लास गाइड' साप्ताहिक सिंधी समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ था। इस समाचार पत्र के मालिक, प्रकाशक एवं संपादक सुन्दर के. चलेछा नामक पत्रकार हैं। यह समाचार पत्र बी.के. 1102/16 ओ.टी. सैक्शन उल्लासनगर से निकला करता है। भाग्या प्रिंटर्स, ओ.टी. सैक्शन उल्लासनगर में छपने वाला यह समाचार पत्र सिंधी भाषी समाचारों आदि को प्रकाशित किया करता है।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सिंधी भाषी 'दि कल्याण समाचार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक सम्पादक मुद्रक तथा मालिक हैं-माधवदास जे. आचार्य नामक पत्रकार तथा पत्र के सहायक सम्पादक का नाम है-गौतम शिकारपुरी। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह समाचार पत्र गीता प्रिंटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपा करता है।

كليان سماچار
THE KALYAN SAMACHAR

बम्बई की चैम्बूर कोलोनी से 'न्यू संसार समाचार' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक मुद्रक मालिक तथा सम्पादक हैं-राजा एच. दास नामक पत्रकार। इस पत्र के संस्थापक सम्पादक हुन्दराज नामक व्यक्ति थे। बिल्डिंग नं —10/336, चैम्बूर कोलोनी, बम्बई से प्रकाशित होने वाला यह समाचार पत्र संसार प्रिंटर्स चैम्बूर से छपा करता है। समाचारों आदि से ओतप्रोत यह समाचा

बम्बई से ही मासिक समाचार पत्र 'सिन्धु सुजाग' का छपना प्रारंभ हुआ। इस पत्र के मुद्रक एवं प्रकाशक बी.के. अरुण हैं। सौरठ पब्लिकेशन द्वारा छपने वाला यह

पत्र 3/41 आदर्श नगर प्रभादेवी बम्बई से छपा क़रता है। यह अखवार बम्बई के सुन्दरी प्रिंटिंग प्रेस, नीयर म्युनिसिपल स्कूल गांधी बाजार रोड़, चैम्बूर कालोनी बम्बई में छपा करता है। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह मासिक पत्र सिंधी समुदाय से संबंधित समाचारों आदि को प्रकाशित किया करता है।

बम्बई से सिंधी साप्ताहिक 'मेहराण' नामक एक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। बम्बई के सिन्धुनगर क्षेत्र के गोल मैदान स्थित सुपर स्टार अपार्टमेन्ट के ग्राउण्ड

फ्लोर के कार्यालय नं. 1 से छपने वाले इस साप्ताहिक के प्रकाशक, मुद्रक, मालिक एवं सम्पादक हरी तनवाणी 'निमाणो' हैं। चार पृष्ठों वाला यह साप्ताहिक पत्र वर्ष 1987 में निकलना प्रारंभ हुआ था। देश भर में फैले अपने ग्राहकों को यह पत्र पहुँचाये जाने का प्रयत्न किया जाता है। ग्राहकों के अलावा इस पत्र की प्रतियाँ सिंधी बुद्धिजीवियों एवं सरकारी कार्यालय आदि को निःशुल्क भी भेजी जाती हैं। इस पत्र की वार्षिक कीमत 100 रुपया है तथा आजीवन तक अखबार मंगाने का शुल्क 500 रुपया है।

सिंधी समुदाय के मन में जागरूकता पैदा करने के लिए सिंधी समुदाय से जुड़े तीज त्यौहारों हेतु नागपुर महाराष्ट्र से 'जय जन जागृति' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रारंभ किया गया। हिन्दी के अलावा आवश्यकता

पड़ने पर देवनागरी सिंधी में भी सामग्री प्रकाशित करने वाले जय जन जागृति के प्रबन्ध

सम्पादक कुमार मंगलानी हैं। इस पत्र के संपादक का नाम है—तुलसी सेतिया। इस समाचार पत्र के मालिक एवं प्रकाशक हैं-दलपतराय संतुमल मंगलानी। पुष्पा आफेसट वर्क्स, रूईकर रोड़, चिटणीस पार्क, नागपुर से छपने वाले इस साप्ताहिक का सम्पादकीय पता है-जय जन जागृति कार्यालय जरसिटका नागपुर। महाराष्ट्र से छपने वाली इस साप्ताहिक की कीमत तीन रुपये प्रति कापी रखी गई है तथा इस पत्र में समाचार लेख आदि सामग्री प्रकाशित की जाती है।

महाराष्ट्र के उल्लासनगर क्षेत्र से साप्ताहिक 'उल्लास गाइड' साप्ताहिक सिंधी समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ था। इस समाचार पत्र के मालिक, प्रकाशक एवं संपादक सुन्दर के वलेछा नामक पत्रकार हैं। यह समाचार पत्र बी.के 1102/16 ओ.टी सैक्शन उल्लासनगर से निकला करता है। भाग्या प्रिंटर्स, ओ.टी सैक्शन उल्लासनगर में छपने वाला यह समाचार पत्र सिंधी भाषी समाचारों आदि को प्रकाशित किया करता है।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सिंधी भाषी 'दि कल्याण समाचार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक सम्पादक मुद्रक तथा मालिक हैं-माधवदास जे आचार्य नामक पत्रकार तथा पत्र के सहायक सम्पादक का नाम है-गौतम शिकारपुरी। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह समाचार पत्र गीता प्रिटिंग प्रेस उल्लासनगर में छपा करता है।

बम्बई की चैम्बूर कोलोनी से 'न्यू संसार समाचार' नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के प्रकाशक मुद्रक मालिक तथा सम्पादक हैं-राजा एच दास नामक पत्रकार। इस पत्र के संस्थापक सम्पादक हुन्दराज नामक व्यक्ति थे। बिल्डिंग नं.—10/336, चैम्बूर कोलोनी, बम्बई से प्रकाशित होने वाला यह समाचार पत्र संसार प्रिंटर्स चैम्बूर से

छपा करता है। समाचारों आदि से ओतप्रोत यह समाचार पत्र अपने प्रकाशन क्षेत्र के

अलावा देशभर में फैले सिंधी भाषा बुद्धिजीवियों आदि को अखबार भेजा करता है, ताकि उन्हें सिंधी समुदाय से जुड़े समाचार, सूचनाओं आदि की जानकारी हो सके।

महाराष्ट्र बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सिंधी भाषा के मासिक पत्र 'नवजीवन' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। यह समाचार पत्र 201, स्वीटी अपार्टमेन्ट से निकलना प्रारंभ हुआ था। इस पत्र के संपादक प्रकाशक मुद्रक एवं मालिक हैं-डॉ. रामरिख्याणी

'कमल'। दो रुपये में एक प्रति विकने वाला यह मासिक पत्र सिंधी संबंधी समाचारों आदि को प्रकाशित किया करता है।

बम्बई से 'सहयोग टाइम्स' नामक एक सिंधी भाषी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। सहयोग फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित किया जाने वाला यह अखवार

14-18, विनोबा लेन प्रथम माला कालबा देवी बम्बई से निकलना प्रारंभ हुआ। इस पत्र की संपादिका प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार प्रोफेसर पोपटी हीरान्दाणी हैं तथा प्रबंध संपादक हैं-राम जवाहरानी। मासिक सहयोग टाइम्स के सह-संपादक का नाम है-हरी मोटवानी। यह समाचार पत्र आर्ट स्पाट 212, अलाईड इन्डस्ट्रीयल इस्टेट माहीम बम्बई से छपा करता है। यह अखबार सिंधी भाषा में समाचार लख आद सामग्रा प्रकाशत किया करता है तथा देश के कई भागों में भेजा जाता है।

बम्बई से 'मुर्क' नामक एक द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक हैं-प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार गोविन्द माल्ही। सुन्दरी प्रिंटिंग प्रेस, नीयर लोकल बोर्ड स्कूल, चैम्बूर कालोनी, बम्बई से छपने वाली यह

द्विमासिक पत्रिका 'मुर्क' 101-ए, राज किरण, एम.जी.रोड, कालबादेवी बम्बई से निकला

करती है। यह पत्रिका सिंधी भाषा में साहित्य सामग्री प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका को वार्षिक कीमत 60 रुपया है, तथा आजीवन शुल्क 500 रुपया लगा करता है।

महाराष्ट्र बम्बई से 'असी सिंधी' नामक एक पत्रिका का छपना शुरू हुआ। इस पत्रिका के संपादक प्रकाशक एवं मुद्रक हैं-जयराम रूपाणी नामक एक पत्रकार। बम्बई से 3—वीना बीना गुरु नानक रोड, स्टेशन के सामने, बान्द्रा क्षेत्र से प्रकाशित होने वाली यह द्विमासिक पत्रिका एटलस प्रिन्टर्स, 25, जस्टिस जी एन वैद्य मार्ग, (बैंक स्ट्रीट) फोर्ट बम्बई से छपा करती है। सिंधी भाषियो के उत्थान हेतु अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली 'असीं सिंधी' पत्रिका में सिंधी समुदाय से संबंधित सभी प्रकार की सामग्री प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका की कीमत 15 रुपये प्रति कापी है। इस पत्रिका की वार्षिक कीमत 150 रुपया है तथा वार्षिक शुल्क 600 रुपया है।

मुंबई से ही सिंधी समुदाय से जुड़ी सभी प्रकार की कला साहित्य व संस्कृति से ओतप्रोत अग्रेजी मे बहुरंगी "सहयोग टाईम्स इन्टरनेशनल" पत्रिका निकाली जाती है।

मात्र दस रुपये में बिकने वाली "सहयोग टाइम्स इन्टरनेशनल" के सम्पादक एवं प्रकाशक राम जवाहरानी हैं तथा इनके सलाहकार संपादक नंदकिशोर नौटियाल एवं चन्दर मंघनानी हैं। इस पत्रिका के सपादकीय मंडल मे हरीश खिलानी, हरदास माखीजा, लीलो रार्यासघाणी, ललित मंघनानी, ईश्वर झामनानी, मूलचंद मानवानी, अन्जली तुलसियानी, सुधांशु शेखर, नोतनदास जवाहरानी, अर्जुन तोलानी तथा जीवत परियानी हैं।

सहयोग फाउन्डेशन द्वारा निकाली जाने वाली यह पत्रिका सहयोग प्रिंटिंग प्रेस 10/336, चैम्बूर कोलोनी, मुंबई-400074 से छपकर 14-18 विठोया लेन कालवादेवी मुंबई-400002(महाराष्ट्र) से प्रकाशित हुआ करती है। इस "सहयोग टाइम्स इन्टरनेशनल" का सम्पादकीय पता-2, भगत को-आपरेटिव सोसाईटी, प्लाट नम्बर 417-बी, 14 वां रास्ता, बान्द्रा मुबई-400050 है।

बम्बई से ही सिन्धी अरबी लिपी में 'देशप्रेमी' समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सिनेमा एव अन्य सिंधी समुदाय आदि समाज की गतिविधियों पर प्रकाशित

वाले इस समाचार पत्र की कीमत ढ़ाई रुपये प्रति अंक की कापी का रखा गया। सिंधी परिवारों के बुजुर्ग लोगों एवं अरबी लिपि जानने वाले पाठकों में पढ़ी जाने वाली देशप्रेमी पत्रिका प्रथम माला, ड्रेगो हाऊस, 57 पाली अम्बेडकर रोड़, बान्द्रा, बम्बई-400050 से प्रकाशित होती है तथा इस पत्रिका की लेखा शाखा एवं सम्पादकीय पता देशप्रेमी 16, जाली भवन, प्रथम माला, 16-वां क्रास रोड़, डा. अम्बेडकर रोड़, खार (पश्चिम) बम्बई-400052 (भारत) है। यह समाचार पत्रिका बम्बई से निकलने वाली दैनिक हिन्दू समाचार पत्र के मालिक-वरियानी परिवार के सदस्यों द्वारा प्रकाशित की जाती है।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सिंधी भाषा में दैनिक अखबार निकला करता है-हिन्दू। इस 'हिन्दू' अखबार के राजस्थान के अजमेर एवं गुजरात के अहमदाबाद से भी संस्करण निकला करते हैं।

महाराष्ट्र के सिंधु नगर क्षेत्र से एक दैनिक अखबार निकलना शुरू हुआ-'आजादी दैनिक'। सिंधी एवं हिन्दी द्विभाषा में निकलने वाले इस दैनिक समाचार पत्र के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक हैं-गोविंद एल. चन्दनानी। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह सिंधी दैनिक पत्र इन्दिरा पी. प्रेस, सन्मुख माखीजा मार्ग, नेहरू चौक, सिंधुनगर (उल्लासनगर) बम्बई से छपा करता है।

महाराष्ट्र के जलगांव क्षेत्र से सिंधी भाषियों संबंधी समाचार प्रकाशित करने वाले 'सिंध अन्धेरा' नामक अखबार का प्रकाशन शुरू हुआ। इस अखबार के मुख्य संपादक हैं प्रकाश सेतुराम दर्रा। अखबार के मानद सह-संपादक हैं-गोर्धन तनवानी तथा कानूनी सलाहकार हैं एस.के. पंवार। इस पाक्षिक पत्र के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक प्रकाशक दर्रा नामक व्यक्ति हैं तथा यह अखबार 57—एम. खान्देश शापिंग काम्पलेक्स जलगाँव से प्रकाशित होता है। यह पत्र विशाल प्रिंटिंग प्रेस, 83—भास्कर मार्केट जलगाँव में छपा करता है। हिन्दी भाषा में

छपने वाला यह अखबार सिंधी एवं मराठी भाषियो का सामाजिक पत्र है। इस पत्र का वार्षिक शुल्क 50 रुपये है।

महाराष्ट्र के जलगाँव से ही प्रकाशक एवं मुद्रक गोर्धन तनवाणो निकाला करते हैं साप्ताहिक 'सिंध उजाला'। साप्ताहिक 'सिंध उजाला' की कीमत एक रुपया प्रति कापी है। इस पत्र के मुख्य संपादक गोर्धन डो. तनवाणी तथा सपादक महेश जी. तनवाणी है। इस अखबार के मुख्य निदेशक,

प्रकाशक, संपादक तथा कानूनी सलाहकार हैं एस. के. पंवार। यह अखबार प्लाट नं.—19 गणेशनगर आकाशवाणी के पीछे जलगाँव से निकाला जाता है। साप्ताहिक 'सिंध उजाला' विनायक प्रिंटिंग प्रेस 220, भास्कर मार्केट जलगाँव से छपा करता है।

महाराष्ट्र के बम्बई नगर से एक सिंधी पत्रिका निकला करती है-'सिपूं'। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एव संपादक हैं ठाकुर चावला। बम्बई के 13-बी/3, जेठी बहिन सोसाईटी मोरी रोड़, महीम क्षेत्र से निकलने वाली त्रैमासिक 'सिपूं', प्रोफेसर राम पंजवानी लिट्रेरी एण्ड

कल्चरल सेन्टर सीता सिंधु भवन, जस्सीबाई बी लधाणी सिंधु दर्शन नेहरू रोड़, शान्ता क्रूज बम्बई के सौजन्य से निकाली जाती है। यह पत्रिका सिंधी भाषा साहित्य एवं कला संबंधी सामग्री प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क 100 रुपया है तथा आजीवन तक पत्रिका लेने वाले ग्राहको के लिए 500 रुपया शुल्क है।

बम्बई से ही सिधी भाषा में 'लोकराज्य' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ है। इस पत्रिका के प्रकाशक हैं डायरेक्टर जनरल डायरेक्टोरेट आफ इन्फोरमेशन एण्ड पब्लिक रिलेशन, गवर्नमेन्ट ऑफ महाराष्ट्र बम्बई। तीन रुपये में एक प्रति की दर से बिकने वाली इस पत्रिका की संपादिका हैं वर्षा जी निहलानी तथा सह-

संपादिका हैं नीता शिवरामाणी। लोकराज्य पत्रिका के जहाँ मुख्य संपादक प्रभाकर करन्दीकार हैं तो पत्रिका के प्रबंध सम्पादक हैं पी. एस महाजन एवं रमेश खुशी नामक व्यक्ति। महाराष्ट्र की राज्य सरकार द्वारा सिधी भाषा में हर माह निकाली जाने वाली मासिक पत्रिका 'लोकराज्य' नोबिल प्रिन्टर्स प्रा लि 321, वर्मा चैम्बर्स, ॥-होमजी स्ट्रीट फोर्ट

वाले इस समाचार पत्र की कीमत ढ़ाई रुपये प्रति अंक की कापी का रखा गया। सिंधी परिवारों के बुजुर्ग लोगों एवं अरबी लिपि जानने वाले पाठकों में पढ़ी जाने वाली देशप्रेमी पत्रिका प्रथम माला, ड्रेगो हाऊस, 57 पाली अम्बेडकर रोड़, वान्द्रा, बम्बई-400050 से प्रकाशित होती है तथा इस पत्रिका की लेखा शाखा एवं सम्पादकीय पता देशप्रेमी 16, जाली भवन, प्रथम माला, 16-वां क्रास रोड़, डा. अम्बेडकर रोड़, खार (पश्चिम) बम्बई-400052 (भारत) है। यह समाचार पत्रिका बम्बई से निकलने वाली दैनिक हिन्दू समाचार पत्र के मालिक-वरियानी परिवार के सदस्यों द्वारा प्रकाशित की जाती है।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से सिंधी भाषा में दैनिक अखबार निकला करता है- हिन्दू। इस 'हिन्दू' अखबार के राजस्थान के अजमेर एवं गुजरात के अहमदाबाद से भी संस्करण निकला करते हैं।

महाराष्ट्र के सिंधु नगर क्षेत्र से एक दैनिक अखबार निकलना शुरू हुआ-'आजादी दैनिक'। सिंधी एवं हिन्दी द्विभाषा में निकलने वाले इस दैनिक समाचार पत्र के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक हैं-गोविंद एल. चन्दनानी। एक रुपये प्रति कापी की दर से बिकने वाला यह सिंधी दैनिक पत्र इन्दिरा पी. प्रेस, सन्मुख माखीजा मार्ग, नेहरू चौक, सिंधुनगर (उल्लासनगर) बम्बई से छपा करता है।

महाराष्ट्र के जलगांव क्षेत्र से सिंधी भाषियों संबंधी समाचार प्रकाशित करने वाले 'सिंध अन्धेरा' नामक अखबार का प्रकाशन शुरू हुआ। इस अखबार के मुख्य संपादक हैं प्रकाश सेतुराम दर्रा। अखबार के मानद सह-संपादक हैं-गोर्धन तनवानी तथा कानूनी सलाहकार हैं एस.के. पंवार। इस पाक्षिक पत्र के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक प्रकाशक दर्रा नामक व्यक्ति हैं तथा यह अखबार 57—एम. खान्देश शापिंग काम्पलेक्स जलगाँव से प्रकाशित होता है। यह पत्र विशाल प्रिंटिंग प्रेस, 83—भास्कर मार्केट जलगाँव में छपा करता है। हिन्दी भाषा में

छपने वाला यह अखबार सिंधी एवं मराठी भाषियों का सामाजिक पत्र है। इस पत्र का वार्षिक शुल्क 50 रुपये है।

महाराष्ट्र के जलगाँव से ही प्रकाशक एवं मुद्रक गोर्धन तनवाणी निकाला करते हैं साप्ताहिक 'सिंध उजाला'। साप्ताहिक 'सिंध उजाला' की कीमत एक रुपया प्रति कापी है। इस पत्र के मुख्य संपादक गोर्धन डी. तनवाणी तथा संपादक महेश जी. तनवाणी है। इस अखबार के मुख्य निदेशक,

प्रकाशक, संपादक तथा कानूनी सलाहकार हैं एस. के पंवार। यह अखबार प्लाट नं.—19 गणेशनगर आकाशवाणी के पीछे जलगाँव से निकाला जाता है। साप्ताहिक 'सिध उजाला' विनायक प्रिंटिंग प्रेस 220, भास्कर मार्केट जलगाँव से छपा करता है।

महाराष्ट्र के बम्बई नगर से एक सिंधी पत्रिका निकला करती है-'सिपू'। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक हैं ठाकुर चावला। बम्बई के 13-बी/3, जेठी बहिन सोसाईटी मोरी रोड, महीम क्षेत्र से निकलने वाली त्रैमासिक 'सिपू', प्रोफेसर राम पंजवानी लिट्रेरी एण्ड

कल्चरल सेन्टर सीता सिंधु भवन, जस्सीबाई बी. लधाणी सिंधु दर्शन नेहरू रोड, शान्ता क्रूज बम्बई के सौजन्य से निकाली जाती है। यह पत्रिका सिंधी भाषा साहित्य एवं कला संबंधी सामग्री प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क 100 रुपया है तथा आजीवन तक पत्रिका लेने वाले ग्राहको के लिए 500 रुपया शुल्क है।

बम्बई से ही सिंधी भाषा मे 'लोकराज्य' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ है। इस पत्रिका के प्रकाशक हैं डायरेक्टर जनरल डायरेक्टोरेट आफ इन्फोरमेशन एण्ड पब्लिक रिलेशन, गवर्नमेन्ट ऑफ महाराष्ट्र बम्बई। तीन रुपये मे एक प्रति की दर से बिकने वाली इस पत्रिका की संपादिका हैं वर्षा जी. निहलानी तथा सह-

संपादिका हैं नीता शिवरामाणी। लोकराज्य पत्रिका के जहाँ मुख्य संपादक प्रभाकर करन्दीकार हैं तो पत्रिका के प्रबंध सम्पादक हैं पी. एस महाजन एवं रमेश खुशी नामक व्यक्ति। महाराष्ट्र की राज्य सरकार द्वारा सिंधी भाषा में हर माह निकाली जाने वाली मासिक पत्रिका 'लोकराज्य' नोबिल प्रिन्टर्स प्रा लि. 321, वर्मा चैम्बर्स, ॥-होमजी स्ट्रीट फोर्ट

बम्बई में छपा करती है। यह सिंधी भापी पत्रिका सिंधी समुदाय की कला संस्कृति आदि को उभारने के अलावा पत्रिका के माध्यम से सिंधी समाज की प्रगति आदि से जुड़ी लगभग सभी प्रकार की सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास करती है।

सिंधी समाज के विकास को समर्पित 'जिए सिंध' नामक हिन्दी साप्ताहिक महाराष्ट्र के नागपुर से प्रकाशित होता है। इस पत्र के प्रधान संपादक पूरन मामतानी हैं तथा संपादक हैं तुलसी सेतिया नामक पत्रकार। इस पत्र का स्थानीय वार्पिक चन्दा 30 रुपये है तथा डाक द्वारा इसकी कीमत 40 रुपया प्रति वर्ष लिया जाता है। रहमी रहम कर निवास, ई.डब्ल्यू.एस.28, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी,

गोविन्द नगर, जारीपटका नागपुर से निकलने वाले 'जिए सिंध' अखबार की प्रकाशक श्रीमती लक्ष्मीबाई माधवदास ममतानी हैं। यह अखबार विमल प्रिन्टर्स मोहनगर कानपुर से छपवाकर इंदिरा गांधी कालोनी जरीपटका नागपुर से प्रकाशित किया जाता है। इस अखबार में आवश्यकता पड़ने पर यदा-कदा सिंधी देवनागरी का भी प्रयोग किया जाकर सिंधी समुदाय को समाज से जुड़ी सभी प्रकार की जानकारियाँ दिये जाने का प्रयास किया जाता है।

मुंबई से ही वर्ष 1997 में अखिल भारत सिन्धी वोली में साहित्य सभा द्वारा मासिक समाचार पत्र "सभा संदेश" प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र 3/41, आदर्श नगर, वर्लीकार चौक, वरली, मुंबई- 400 025 से प्रकाशित होता है। इस मासिक पत्र की डी.पी.टी. एवं छपाई आर्टलाईन ग्राफिक्स, ए/64, गोल मैदान, सब्जी बाजार के निकट उल्लास नगर से दिलीप थारवानी द्वारा की जाती है। सिन्धी भापा संस्कृति व कला आदि के विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही अखिल भारतीय सिन्धी बोली में साहित्य सभा का वर्तमान समय में कार्यालय ए-26, साकेत कालोनी, जयपुर में है। इस संस्था के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष सुन्दर अगनानी है।

इस संस्था द्वारा निकाली जा रही पत्रिका सभा संदेश के वर्तमान संपादक एवं प्रकाशक हरि पंकज नामक पत्रकार है। इस पत्रिका में संस्था द्वारा आयोजित गतिविधियों की जानकारी प्रकाशित की जाती है।

बम्बई के उल्लासनगर क्षेत्र से "नई सदी" नामक साप्ताहिक पत्रिका निकला करती है। हिन्दी एवं सिन्धी भाषा में निकल रही यह पत्रिका सिन्धी समुदाय से जुड़ी सभी प्रकार की सामग्री प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका की वार्षिक कीमत 50 रुपया है तथा आजीवन तक इस पत्रिका के बनने वाले ग्राहकों के लिए 300 रुपया शुल्क रखा गया है।

वर्तमान समय में बम्बई का नाम बदलकर मुबई रख दिया गया है, इसलिए समाचार पत्र-पत्रिकाओं के पतों में बम्बई के बजाय मुंबई का प्रयोग ही किया जाता है।

मणिपुर

मणिपुर से सिन्धी भाषा में कोई भी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती। वैसे भी इस प्रदेश में सिन्धी समुदाय के नगण्य संख्या में ही लोग रहा करते हैं।

मेघालय

मेघालय से सिन्धी भाषा में कोई भी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती। इस प्रदेश में सिन्धी भाषा के नगण्य सख्या में लोग रहा करते हैं।

नागालैण्ड

भारत मे नागालैण्ड प्रदेश से कोई भी सिंधी भाषा का समाचार पत्र अथवा पत्रिका प्रकाशित नहीं होती है। इस प्रदेश में भी सिन्धी भाषी बहुत ही नगण्य संख्या में रहते हैं।

उड़ीसा

उड़ीसा मे काफी संख्या में तो नहीं कहे जा सकते परन्तु सिंधी भाषी लोग रहा करते हैं, लेकिन इस प्रदेश से फिर भी सिन्धी भाषा में कोई पत्र-पत्रिका नहीं निकला करती हैं।

पंजाब

भारत देश के पंजाब प्रदेश में बहुत अधिक तो नहीं कह सकते, लेकिन फिर भी काफी संख्या में सिन्धी भाषी लोग रहा करते हैं तथा वहाँ नौकरियाँ एवं व्यवसाय किया करते हैं। परन्तु फिर भी इस प्रदेश से कोई भी सिन्धी भाषा का पत्र अथवा पत्रिका के निकलने की जानकारी नहीं मिली है। यह सिन्धी समुदाय की अजागरूकता ही कही जाएगी।

राजस्थान

राजस्थान प्रदेश में सिन्धी भाषा में पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास के क्षेत्र मे देखें तो हमें जानकारी मिलती है कि विभाजन के उपरान्त वर्ष 1947 में जयपुर से हीरानन्द जिन्दह नामक एक पत्रकार ने एक अखबार निकाला था, जो आगे चलकर संवाद समिति के रूप मे परिवर्तित हो गया। इसी प्रकार गोस्वामी शेवापुरी नामक एक

अखबार नवीज़ ने भी जयपुर से एक समाचार पत्र प्रकाशित किया था, जो उनके निधन के उपरान्त बन्द हो गया था।

वर्ष 1948 में दैनिक 'हिन्दू' नामक एक समाचार पत्र सांध्यकाल दैनिक के रूप में शुरू हुआ था। खारी कुई अजमेर से निकलने वाले इस अखबार के संस्थापक संपादक के रूप में दादा त्रिलोकचंद का नाम लिया जाता है, वर्तमान समय में इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक श्री किशनचंद वरियानी हैं। इस पत्र की प्रसार संख्या 16372 थी, जिनमें से 15992 प्रतियाँ बिका करती थीं, बाकी 380 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं। यह अखबार समाचार एवं सामयिक विषयक है। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 40 रुपए है तथा आजीवन तक यह अखबार मंगाने वाले ग्राहकों के लिए 5000 रुपया शुल्क रखा गया है।

वर्ष 1949 में लाखन कोटरी दरगाह बाजार अजमेर से दैनिक 'हिन्दवासी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह अखबार आठ पैसे में बिका करता था। इस पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालिक किशन जे. मोटवानी थे। समाचारों एवं सामयिक विषयों वाला यह अखबार मणिक प्रिंटिंग प्रेस, मेहता मार्केट, अजमेर से छपा करता था। इस पत्र की कुल 5550 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 5402 प्रतियाँ बिका करती थीं। बाकी 148 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं।

वर्ष 1950 में 1/523 नवाब का बेड़ा, अजमेर से मासिक 'फुलवारी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस अखबार के प्रकाशक मुद्रक एवं संपादक दीपचंद तिलोकचन्द थे। प्रभु प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर में छपने वाला यह अखबार तीस पैसे में बिकता था। बच्चों के लिए नवजीवन साहित्य मण्डल के मालिकाना हकों तले प्रकाशित होने वाली 'फुलवारी' की कुल 1000 प्रतियाँ छपती थीं, जिनमें से 800 प्रतियों की विक्री की जाती थी तथा 200 प्रतियाँ मुफ्त बांटी जाती थीं।

नवाब का बेड़ा क्षेत्र अजमेर से वर्ष 1954 में धर्म और दर्शन विषयों पर वेदान्त प्रचार मण्डल अजमेर के मालिकाना हकों तथा केदारनाथ शर्मा नामक व्यक्ति के प्रकाशन तले अंग्रेजी हिन्दी तथा सिन्धी भाषाओं वाला त्रैमासिक समाचार पत्र निकलना प्रारंभ हुआ था-'आत्मदर्शन'। इस आध्यात्मिक विषयों वाले समाचार पत्र के सम्पादक थे-नारायणदास दम्माणी। मासिक आत्मदर्शन के मुद्रक थे-राधाकृष्ण पारीक। अमर भारत प्रेस अजमेर में छपने वाले इस मासिक की कीमत 20 पैसे प्रति कापी हुआ करती

थी। इस पत्रिका को कुल 2300 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिसमें से 2200 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा 100 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाया करती थीं।

अजमेर के आदर्श विद्यालय हायर सैकण्डरी द्वारा वर्ष 1961 में अंग्रेजी, सिन्धी, तथा हिन्दी त्रिभाषा में एक वार्षिकी स्कूल पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक जे.एस टिलवानी थे। इस पत्रिका के मुद्रक एन.थिरुमल नेणुमल हुआ करते थे। आदर्श विद्यालय हायर सैकण्डरी स्कूल मैजिस्ट्रिक सिनेमा के निकट, अजमेर से निकलने वाली इस पत्रिका के संपादक ऋषिराज शर्मा थे। राजकमल प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में छपने वाली इस पत्रिका की 2000 प्रतियाँ छपा करती थी, जिसमें से केवल 200 प्रतियाँ बेची जाती थीं, बाकी 1800 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

अजमेर के गवर्नमेन्ट राजेन्द्र हाई स्कूल अजमेर के मालिकाना हकों तले वर्ष 1962 में गवर्नमेन्ट राजेन्द्र हाई स्कूल मिसेलनी नामक वार्षिक पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका सिन्धी हिन्दी तथा अंग्रेजी तीन भाषाओं में छपा करती थी। यह स्कूल पत्रिका जाव प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में छपा करती थीं। इस पत्रिका के प्रकाशक के.पी. मदनानी थे। पत्रिका की समस्त प्रतियाँ निःशुल्क वितरण के लिए हुआ करती थीं।

राजस्थान प्रदेश के अजमेर जिले से ही वर्ष 1964 में दयानन्द मार्केट के सामने केसरगंज अजमेर से 'जयहिन्द' नामक साप्ताहिक का निकलना प्रारंभ हुआ। इस पत्र के प्रकाशक रामचन्द्र उजिरानी थे। पत्र के मुद्रक का नाम था-दीपक सुजान। इस अखबार के सम्पादक थे-जगत कुमार बुधिया। मात्र पचास पैसे मे बिकने वाला यह समाचार पत्र सुजान प्रिन्टर्स अजमेर में छपा करता था। समाचार एव सामयिक विषयक इस पत्र की 1555 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 1443 प्रतियाँ बेची जाती थी बाकी, 112 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

अजमेर मे वर्ष 1965 मे सांध्यकालीन 'भारतभूमि' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह अखबार 20/147, दसवाली मोहल्ला डिग्गी बाजार से निकलना प्रारंभ हुआ। इस पत्र के प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक टीकमदास थे। भारतभूमि मुद्रणालय में छपने वाला यह अखबार बारह पैसे में बिका करता था। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर आधारित इस अखबार की मालकिन द्रूपद बाई थी। इस पत्र की कुल 5550 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 5402 प्रतियाँ बिका करती थीं, बाकी 148 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं। तदुपरान्त इस पत्र के प

मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. नानकराम ईसराणी बने तथा हिन्दूभूमि प्रकाशन न्यास (ट्रस्ट) अजमेर द्वारा हिन्दूभूमि प्रिंटिंग प्रेस, संत कवरराम बाजार, अजमेर में छपा करता है।

सिन्धी समाचार पत्र-पत्रिकाओं में वर्ष 1968 में राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर के बनीपार्क क्षेत्र से एक मासिक पत्रिका निकली 'सुहिणी'। सिन्धी कला संस्कृति आदि विषयों पर आधारित यह बहुरंगी सिन्धी पत्रिका श्री वासुदेव 'सिंधु भारती', सुन्दर अगनाणी एवं लक्ष्मण भम्भाणी द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित की जाती थी। यह पत्रिका वीर विजय आर्ट प्रिंटिंग प्रेस में छपा करती थी।

वर्ष 1968 में कवेंडिसपुरा मदार गेट अजमेर से "हिन्दूभूमि" साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक थे-नानगराम ईसरानी। केवल पच्चीस पैसे में बिकने वाला यह सिन्धी भाषी पत्र आदिवासी मुद्रणालय में छपा करता था। इस पत्र की मालकिन थी-श्रीमती आई. ईसरानी। इस

هندو ڀومي ساپتاهڪ

अखबार की 1950 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 1850 प्रतियों की बिक्री हुआ करती थी, बाकी 100 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं। यह अखबार समाचार एवं सामयिक विषयक सामग्री प्रकाशित किया करता है। सिन्धी समुदाय के हकों आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार के लेखों के अलावा सिन्धी समुदाय के समाचारों को प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र की कीमत दो रुपया प्रति कापी है। इस समाचार पत्र की वार्षिक कीमत 75 रुपया है तथा आजीवन तक अखबार मंगाने वालों के लिए 750 रुपया शुल्क रखा गया है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर से वर्ष 1969 में सिन्धु पब्लिकेशन एसोसियेशन के मालिकाना हकों तले सिन्धी समुदाय के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों के उत्थान के लिए 'मेहराण' नामक एक मासिक पत्रिका निकलना प्रारंभ हुई। इसके संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक थे-श्यामलाल सबनानी। मात्र चालीस पैसे में बिकने वाली यह मासिक पत्रिका नवाब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर से प्रकाशित होती थी तथा फिल्म कोलोनी जयपुर की वीर विजय आर्ट प्रेस में छपा करती थी।

जयपुर से ही वर्ष 1969 में ही समाचारों एवं सामयिक विषयों पर एक मासिक अखबार का प्रकाशन प्रारंभ हुआ 'सिन्धु दर्शन'। जयपुर के गणगौरी बाजार स्थित राजा पूरनसिंह की हवेली से निकलने वाले इस समाचार पत्र के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक हुआ करते थे-हरबख्शराय खूबचन्दाणी।

अजमेर से वर्ष 1970 में राजकमल प्रिंटिंग प्रेस अजमेर द्वारा साप्ताहिक 'वीर विजय' नामक साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इस अखबार के प्रकाशक,

मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे-श्री नादिरमल। समाचार और सामयिक विषयक इस अखबार को कीमत 10 पैसे हुआ करती थी। इस समाचार पत्र की कुल 1200 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिसमें से 1150 प्रतियों की बिक्री होती थी तथा बाकी की 50 प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित की जाती थीं। यह समाचार पत्र सामयिक विषयों पर आधारित है।

वर्ष 1973 में ब्रह्म खत्री सेवा मण्डल 11/1 खत्री भवन, गोविन्द मार्ग, आदर्श नगर, जयपुर-302004 के मालिकाना हकों तले द्विभाषी हिन्दी एवं सिन्धी भाषा में मासिक 'ब्रह्म खत्री सन्देश' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। समाज कल्याण विषयक इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक थे-प्रेमचन्द खत्री। इनके अलावा पत्रिका में लालचन्द कमलानी एवं नारायणदास खत्री भी संपादन का कार्य किया करते थे। यह पत्रिका केवल 30 पैसे में बिका करती थी। वर्तमान समय में इस पत्रिका के मुख्य संपादक नारायणदास खूहा तथा सम्पादकों में पुरुषोत्तम मंघवाणी एवं किशन रामनाणी है ।
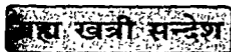
वर्ष 1980 में उसरी गेट अजमेर से 'सहयोग' नामक पाक्षिक का प्रारंभ हुआ। इस पत्र के मुद्रक नाथरेड नेनमुअल थे। इस पाक्षिक के सम्पादक, प्रकाशक एवं मालिक का नाम था-जो.एन रानेय। केवल 25 पैसे में बिकने वाला यह पाक्षिक राजकमल प्रेस, अजमेर मे छपा करता था। इस अखबार की कुल 1450 प्रतियाँ छपती थीं, जिनमें से 1385 प्रतियों की बिक्री हुआ करती थी तथा बाकी की बची 65 प्रतियाँ मंत्रियों, विधायकों, सरकारी कार्यालयों तथा विशेष अधिकारियों आदि विभागों को नि:शुल्क बांटी जाती थी। यह अखबार सामयिक विषयों पर लिखा करता है।

सहयोग (पाक्षिक)

राजस्थान के अजमेर जिले के 204/16 खारी कुंई, अजमेर से साप्ताहिक 'संत कंवरराम' का छपना शुरू हुआ था। इस पत्र के प्रकाशक, मालिक एवं मुद्रक थे- अशोक वरियानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों वाला यह अखबार हिन्दू प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में छपा करता था। इस अखबार की 10756 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिसमें से 10635 प्रतियाँ बिक्री के लिए होती थीं. बाकी की 121 प्रतियाँ सरकारी विभागों आदि को मुफ्त वितरित की जाती थीं। या

संत कंवरराम साप्ताहिक

पर सामग्री प्रकाशित करती है। इस साप्ताहिक की वार्षिक कीमत 100 रुपया है तथा आजीवन शुल्क 1000 रुपया है।

वर्ष 1983 में 3—ई 4, प्रतापनगर, जोधपुर से प्रकाशक, मुद्रक, मालिक गुलावराय रानी द्वारा पाक्षिक 'जय झूलेलाल' का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था। इस समाचार पत्र के संपादक एन. नेऊमल थे। इस अखबार की नीति समाचारों एवं सामयिक विषयों को छापने की है। राजकमल प्रेस उसरी गेट अजमेर में छपने वाला यह पाक्षिक पचास पैसे में बिका करता था तथा इसकी 1250 प्रतियों में से 1165 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी की 85 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित कर दी जाती थीं।

वर्ष 1983 में ही प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक नेरू पविलवानी ने अजमेर से साप्ताहिक 'संथाथीराम' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। इस पत्र के संपादक थे- रमेश जानी। प्रभु प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाले इस पत्र की कीमत 25 पैसे हुआ करती थी। समाचारों एवं सामयिक विषयक इस अखबार की 1582 प्रतियाँ छपती थीं, जिनमें से 1529 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा बाकी की 53 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थीं।

सन् 1984 में महालक्ष्मी मार्केट, खारी कुंई, अजमेर से 'राज्यादेश' नामक दैनिक अखबार का प्रारंभ हुआ। इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे- गोपालसिंह लहाने। गुरु नानक प्रिंटिंग प्रेस अजमेर में छपने वाला यह अखबार 25 पैसे में बिका करता था। समाचारों एवं सामयिक विषयक इस अखबार की कुल 1736 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 1626 प्रतियों की विक्री हुआ करती थी और 100 प्रतियाँ मुफ्त में बाँटी जाती थीं। यह अखबार ताजा समाचारों एवं सामयिक विषयों को लेकर प्रकाशित किया जाता है।

अजमेर से 'सेवामार्ग' नामक सिंधी एवं हिन्दी भाषा में मासिक पत्रिका का निकलना प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका अजमेर की सुधार सभा नानक का बेड़ा द्वारा निकाली जाती है। इस पत्रिका के संपादक दीपचंद बेलानी तथा ईश्वर थरियानी नामक पत्रकार हैं। पत्रिका की प्रकाशक डॉ. रतना थरियानी है तथा मुद्रक हैं आर.डी.बेलानी। यह पत्रिका प्रभु प्रिंटिंग प्रेस नवाब का बेड़ा अजमेर में छपा करती है।

राजस्थान प्रदेश की राजधानी जयपुर से सिन्धी समुदाय के हितों के लिए हिन्दी भाषा में एक पाक्षिक अखबार का निकलना शुरू हुआ। 'पुरुषार्थी ज्योति' नामक यह पत्र आवश्यकता एवं सामग्री के महत्त्व के अनुसार देवनागरी लिपि सिन्धी भाषा में भी सामग्री प्रयोग मे करते रहे हैं। जयपुर के जवाहर नगर क्षेत्र के सेक्टर-3 फ्लेट नं. 13 से निकलने वाली इस पाक्षिक पत्रिका के प्रकाशक मुद्रक संपादक एवं मालिक डॉ जी.टी.भट्ट नामक पत्रकार हुआ करते थे। इस पत्रिका की कीमत पाँच रुपये प्रति कापी थी तथा वार्षिक चन्दा 50 रुपये था। वर्तमान में 'पुरुषार्थी ज्योति' के प्रधान संपादक डॉ. जी.टी.भट्ट हैं तथा सम्पादक मुद्रक मालिक एवं प्रकाशक कुमारी नीलम भट्ट हैं। इस पत्रिका की प्रबंध सम्पादिका श्रीमती रत्ना भट्ट हैं। सिन्धी समुदाय की देशभर की गतिविधियों, समाचारों आदि के अलावा यह पत्रिका लेख कविताएँ आदि भी प्रकाशित किया करती हैं तथा देश भर के अधिकांश भागो में यह पत्रिका पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। इस पत्रिका के विशिष्ट सलाहकार सम्पादक हिन्दी एवं सिन्धी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार कन्हैया अगनानी हैं।

राजस्थान से राजस्थान सिंधी अकादमी द्वारा सिंधी भाषा में वार्षिक पत्रिका 'रिहाण' का प्रकाशन होता है। जे-7, सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से निकलने वाली 'रिहाण' के समस्त मालिकाना हक राजस्थान सिंधी अकादमी के पास हैं। रिहाण के संपादक अकादमी के अध्यक्ष हुआ करते हैं, जो भी अकादमी के अध्यक्ष हुआ करते हैं, जो कि अकादमी की कार्यकारणी के अनुरूप बदलते रहते हैं तथा पत्रिका की सम्पादकीय

कमेटी भी बदल जाया करती है। निःशुल्क वितरित की जाने वाली इस पत्रिका में लेख कहानियाँ आदि साहित्यिक सामग्री प्रकाशित की जाती है। वर्तमान समय में इस पत्रिका के प्रधान संपादक राजस्थान सिन्धी अकादमी के अध्यक्ष भगवान अटलानी हैं तथा इसके देवनागरी भाग के सम्पादक कन्हैया अगनानी हैं । अरबी भाग के सपादक मोहन उदासी हैं ।

राजस्थान के जयपुर से ही राजस्थान सिंधी अकादमी द्वारा सिंधी भाषा में एक त्रैमासिक पत्रिका निकाली जाती है-सिन्धुदूत। इस पत्रिका के प्रधान संपादक अकादमी के अध्यक्ष होते हैं। वर्तमान समय में ''सिन्धुदूत'' के प्रधान संपादक भगवान अटलानी हैं। सिन्धी समुदाय की दोनों लिपियों (अरबी एवं देवनागरी) में निकलने वाली इस पत्रिका के देवनागरी भाग के संपादक कन्हैया अगनानी हैं तथा अरबी लिपि भाग के मोहन उदासी हैं। राजस्थान सिन्धी अकादमी जे-7, सुभाष मार्ग सी-स्कीम, जयपुर-302001 से प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका का देवनागरी का भाग अतुल आट लाईन कम्प्यूटर्स जयपुर में तथा अरबी लिपि का हिस्सा अल्फा कम्प्यूटर्स हाथी भाटा, अजमेर में तैयार होकर महेष प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स जयपुर में छपा करती है। इस पत्रिका में अमूमन अकादमी द्वारा आयोजित सभी प्रकार के कार्यक्रम एवं गतिविधियों को प्रकाशित किया जाता है। नि:शुल्क वितरित की जाने वाली यह त्रैमासिक पत्रिका कोहीनूर प्रिन्टर्स, मोहल्ला डिग्गी बाजार, अजमेर में छपा करती है।

सिन्धुदूत

राजस्थान प्रदेश के जोधपुर शहर से सिंधी समुदाय की कला संस्कृति एवं साहित्य के उत्थान के लिए सिंधी एवं हिन्दी भाषा में एक पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ था। पाक्षिक 'जय अमर लाल' शीर्षक से छप रहे इस समाचार पत्र के संचालक गोविन्द मूलचंदानी हैं तथा संपादक हैं अशोक मूलचंदानी। सिंधी समुदाय से जुड़े अधिकांश समाचारों लेखों आदि को प्रकाशित करने वाला यह समाचार पत्र 3-ई-3, प्रतापनगर, जोधपुर से प्रकाशित होता है तथा इसका शाखा कार्यालय 545 सरदारपुरा 5-ए. रोड़, जोधपुर में हैं। जैन प्रिन्टर्स जोधपुर एवं रजनी प्रिन्टर्स जोधपुर में छपने वाले इस समाचार पत्र की कीमत एक रुपया 25 पैसा प्रति कापी है तथा यह अखबार राजस्थान के अलावा अन्य कई प्रदेशों में भी पढ़ा जाता है। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 45 रुपए है तथा आजीवन शुल्क 500 रुपए है।

राजस्थान के अजमेर से ही सिंधी समाचार पत्र साप्ताहिक 'भारत देश महान्' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र के प्रधान संपादक गोविन्द सिंह हैं। एक रुपये मूल्य में प्रति कापी की दर से बिके जाने वाले इस समाचार पत्र

के स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं सम्पादक गोविन्दसिंह हैं तथा किशोरसिंह नामक व्यक्ति साप्ताहिक 'भारत देश महान्' के मुद्रक हैं। यह समाचार पत्र 570/25 संत कंवरराम स्कूल के पीछे, आशागंज, अजमेर से निकला करता है तथा किशोर प्रिंटिंग प्रेस 553/28 जनता कालोनी अजमेर से छपा करता है। सिंधी भाषा के अलावा हिन्दी भाषा में यह अखबार समाचार आदि प्रकाशित किया करता है।

राजस्थान से ही सिन्धी समुदाय की समस्त गतिविधियो को लेकर अजमेर से "शहीद हेमू कालाणी" नामक पाक्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। इस समाचार पत्र की कीमत एक रुपया प्रति अंक है तथा वार्षिक चंदा 25 रुपए लिया जाता है। शहीद हेमू कालाणी समाचार पत्र के प्रकाशक एवं संपादक डा लाल थधाणी हैं। समाचार पत्र का संपादकोय कार्यालय शहीद हेमू कालाणी

कार्यालय डिग्गी चौक अजमेर में है। इस समाचार पत्र के मुद्रक नारायणदास सिन्धी हैं तथा यह अखबार पार्वती प्रिंटिंग प्रेस, शातिनगर, अजमेर-305001 में छपा करता है।

राजस्थान प्रदेश के कोटा शहर से वर्ष 1996-97 में सिन्धु सोशल सर्किल द्वारा एक पत्रिका निकाली गई- "सिन्धु दर्पण" हिन्दी भाषा मे निकाली जा रही सिन्धु दर्पण ज्योति ऑफसेट प्रिन्टर्स रामपुरा कोटा से छपा करती है। कोटा के ही सुगन्ध, 4/1004, मंगल भवन काम्प्लेक्स, माला रोड, कोटा-2 से प्रकाशित हो रही इस पत्रिका में सिन्धी समुदाय द्वारा कोटा शहर मे की जा रही

सभी प्रकार की सांस्कृतिक साहित्यिक एवं अन्य गतिविधियों को प्रकाशित किया जाता है। इनके अलावा अन्य सभी प्रकार की भी जानकारी देने वाली "सिन्धु दर्पण" नामक इस पत्रिका के सम्पादक सिन्धु किशन रतनानी है, जो कि लेखक पत्रकार एवं केन्द्र सरकार में अधिकारी होने के साथ-साथ राजस्थान सिन्धी अकादमी के सदस्य एवं प्रचार सह-संयोजक भी हैं।

जयपुर के गुलाबी नगर से बैंक एम्पलाइज सिन्धु संगम द्वारा त्रैमासिक बेस

"सिन्धु संगम" निकाली जा रही है। हिन्दी भाषा में निकाली जा रही यह पत्रिका बैंक एम्पलाइज सिन्धु संगम की समस्त गतिविधियों को प्रकाशित किया करती है। नि:शुल्क वितरित की जाने वाली यह पत्रिका ए.बी.सी. 142, सिन्धी कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर से छपा करती है।

बेस पत्रिका

इस पत्रिका का सम्पादकीय कार्यालय 182, सिन्धी कालोनी, बनीपार्क, जयपुर है। वर्तमान में संस्था के महासचिव राजेश भंभानी द्वारा सम्पादित इस पत्रिका के परामर्श मण्डल में मोहन नानकानी एवं देवानन्द साजनानी है।

जयपुर से वर्ष 1997 में सिन्धी देवनागरी लिपि में पाक्षिक समाचार पत्र "मुहिन्जो वतन" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सिंधी समुदाय की कला-संस्कृति, साहित्य आदि अन्य सभी प्रकार के समाचारों को प्रकाशित करने वाले समाचार पत्र मुहिंजो वतन की कीमत एक रुपया प्रति कापी है। इस समाचार पत्र के प्रकाशक मुद्रक एवं प्रधान संपादक हरीश मेघानी हैं। यह पत्र नवसूर्य कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स ए-2, जोबनेर बाग, स्टेशन रोड, जयपुर से मुद्रित होकर बी.-17 सिटी सेंटर संसार चन्द्र रोड, जयपुर से प्रकाशित होता है।

जयपुर से ही वर्ष 1997 में सिन्धी हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में पाक्षिक समाचार पत्र "लोकमत जगत" का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। सिन्धी समुदाय से संबंधित सभी प्रकार

की गतिविधियों को प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र की कीमत तीन रुपया प्रति कापी है। सांई कुंज, बी-324, गोविन्द मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 से प्रकाशित हो रहे इस समाचार पत्र के प्रधान संपादक प्रकाशक मुद्रक एव मालिक हासानन्द मलूकानी नामक पत्रकार हैं।

राजस्थान के जयपुर से दस वर्ष पूर्व "सत्यवाणी" नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। सिन्धी समुदाय के रीति-रिवाजों, तीज-त्यौहारों, सिन्धी संस्कृति, साहित्य तथा भाषा आदि के उत्थान के लिए विशेष लेखों आदि को हिन्दी में प्रकाशित करने वाले इस समाचार पत्र के मालिक प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक मनोहर मोतियानी थे तथा यह पत्र शास्त्री मार्केट आदर्श नगर जयपुर से प्रकाशित होकर अगनानी प्रिंटिंग प्रेस में छाया करता था। वर्तमान समय में समाचार पत्र से मासिक पत्रिका के रूप में परिवर्तित हुई "सत्यवाणी" के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक एव सम्पादक हिन्दी एवं सिन्धी भाषा के प्रसिद्ध लेखक पत्रकार व साहित्यकार कन्हैया अगनानी है। इस पत्रिका का वर्तमान पता — सत्यवाणी 413— आदर्श नगर, गीता भवन के पास, जयपुर 302004 (राजस्थान) भारत है।

तमिलनाडु

भारत देश के तमिलनाडू प्रदेश में हालाँकि काफी संख्या में सिंधी भाषी रहा करते हैं तथा वहाँ व्यापार आदि कार्य किया करते हैं, लेकिन तमिलनाडू से किसी भी सिंधी समाचार पत्र अथवा पत्रिका के निकलने की जानकारी नहीं मिली है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा से कोई भी सिन्धी भाषी अथवा पत्रिका प्रकाशित नहीं होती।

उत्तरप्रदेश

उत्तरप्रदेश के कानपुर से वर्ष 1960 में 19— ए.यू. ब्लाक गोविन्द नगर, कानपुर से साप्ताहिक 'संगठन' का छपना प्रारंभ हुआ था। इस समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक तथा मालिक थे-गोविन्दराम पखरानी। राज प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाला यह अखबार समाचार एवं सामयिक विषयक सामग्री प्रकाशित किया करता था तथा 25 पैसे में प्रत्येक अंक की एक प्रति बिका करती थी।

राजधानी लखनऊ से वर्ष 1969 में एफ—13, चारबाग मार्केट, लखनऊ से त्रैमासिक 'सिन्धी गुलशन' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक थे-नेवन्द कुमार केवलरामाणी। पत्र के संपादक का नाम था-राधाकृष्ण

سنڌي گلشن

आलिमचंदानी। गोविन्द प्रिंटिंग प्रेस कानपुर से छपने वाली इस पत्रिका के मालिकाना हक सिन्धी समाज लखनऊ के पास थे। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह

डेढ़ रुपये में एक कापी बिका करती थी। पत्रिका की कुल 1000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 900 प्रतियाँ बेची जाती थीं तथा 100 प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जाती थी। पत्रिका लेख, कविताएं आदि प्रकाशित किया करती हैं। तदुपरान्त इस पत्रिका के संपादक डॉ. शिवानन्द मामतानी बने तथा यह मार्डन प्रिन्टर्स, 10 घासयारी मंडी, लखनऊ से छपना शुरू हुई। इस पत्रिका की वार्षिक कीमत 50 रुपए वार्षिक रखी गई है तथा पत्रिका को आजीवन मंगाने वाले ग्राहकों से 500 रुपए शुल्क लिया जाता है।

उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ से वर्ष 1972 में, 191—मालतीगंज लखनऊ से मासिक 'कल्पना' नामक पत्रिका का छपना शुरू हुआ था। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर छपने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे-साधुराम सुमानी। मासिक कल्पना की कुल 2000 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 1842 प्रतियाँ बिका करती थीं तथा 158 प्रतियाँ सरकारी विभागों, संस्थाओं, वाचनालयों, प्रदेश के मंत्रियों एवं राष्ट्रीय नेताओं को निःशुल्क भेजी जाती थी। विद्या-सभ्यता एवं अशोक प्रेस में मुद्रित होने वाली इस पत्रिका की एक प्रति दस रुपये में बिका करती थी। यह पत्रिका लेख कहानियाँ आदि प्रकाशित किया करती हैं।

इस प्रदेश से ही वर्ष 1974 में दैनिक समाचार पत्र ''कल क्या होगा'' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। यह पत्र त्रिभाषी था तथा सिन्धी हिन्दी एवं उर्दू भाषा में छाया करता था। पत्र का प्रकाशक रमेश प्रेस नूरी गेट आगरा से होता था । इस दैनिक के प्रकाशक मुद्रक सम्पादक एवं मालिक थे—कैला गणपति चन्द्र। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर छपने वाला यह अखबार 10 पैसे प्रति कापी की दर से बिका करता था। सिन्धी समुदाय के बारे में यह समाचार पत्र सिन्धी अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में सभी प्रकार की सामयिक आदि घटनाओं संबंधी समाचार प्रकाशित किया करता है।

इस प्रदेश से ही वर्ष 1977 में डी-10, चैपाटिया कालोनी, लखनऊ से 'सिन्धियत' नामक द्विभाषी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका की प्रकाशक, मुद्रक एवं मालकिन थी-कुमारी चन्द्रकान्ता। पत्रिका के संपादक थे-भगवानदास खिनानी। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका दो रुपये में बिका करती थी तथा नानक आर्ट प्रेस में छपा करती थी।

वर्ष 1984 में सिंधु साहित्य मण्डल गुलाब खान कालर महल आगरा-3 से 'चन्दौकी' नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक सिन्धु साहित्य मण्डल आगरा थे। पत्रिका के सम्पादक थे-महाराज रघुनन्दन प्रसाद उदासीन। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर छपने वाली इस पत्रिका की कीमत पाँच रुपये प्रति कापी हुआ करती थी तथा यह पत्रिका जवाहर लीथो प्रेस आगरा में छपा करती थी।

पश्चिम बंगाल

बंगाल प्रदेश की राजधानी कलकत्ता से सन् 1980 में चार भाषाओं क्रमश: सिन्धी, अंग्रेजी, हिन्दी तथा पंजाबी भाषा में पाक्षिक 'नाम खुमारी' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह अखबार 2-बी, चौरंगी लेन, कलकत्ता-6 से निकला करता था। धर्म विषयक, साइक्लोस्टाइल्ड कागजो पर छपाई युक्त इस पत्रिका के मालिकाना हक 'होली मिशन आफ गुरुनानक' (रिलीजियस इन्स्टीट्यूशन) के पास थे। इस पाक्षिक के प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक का नाम था-निहाल बी. हीरानन्दाणी। यह पत्रिका डेढ़ रुपये प्रति कापी की दर से बिका करती थी।

अंदमान और निकोबार द्वीप समूह

इस प्रदेश से कोई भी सिन्धी भाषी पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती। वैसे भी इस प्रदेश में सिन्धी भाषी लोग नगण्य संख्या में रहा करते हैं।

दादरा और नागर हवेली

दादरा और नागर हवेली से भी सिंधी भाषा में कोई पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती। इस प्रदेश में भी सिन्धी भाषी लोग नगण्य संख्या मे ही रहा करते हैं।

चंडीगढ़

चडीगढ चूंकि हरियाणा एवं पंजाब प्रदेश की राजधानी है, इसलिए इस प्रदेश का अलग से हवाला देना जरूरी प्रतीत होता है। हालांकि चंडीगढ़ में बहुत अधिक तो नहीं लेकिन फिर भी काफी सिन्धी भाषी लोग रहकर व्यवसाय एवं नौकरियाँ करते हैं, लेकिन यहाँ से भी कोई सिन्धी भाषी पत्र अथवा पत्रिका के निकलने की जानकारी नहीं मिली है।

दिल्ली

देश की राजधानी दिल्ली के देशबन्धु कॉलेज कालकाजी नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1951 मे छह भाषाओं-क्रमश: सिन्धी, अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, बंगाली तथा संस्कृत भाषाओ वाली 'देश' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था। यह कालेज पत्रिका जे आर. प्रिंटिंग प्रेस मे छपा करती थी। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक थे-पिसिपल मोहेन्द्रसिंह। "देश" पत्रिका की कुल एक हजार प्रतियाँ छपा करती थीं। ये सभी प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित कर दी जाती थी।

दिल्ली से ही वर्ष 1954 मे त्रिभाषी सिन्धी, सस्कृत और अंग्रेजी भाषा मे साप्ताहिक 'पंचायत सिंधी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। यह अखबार 493—न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली से निकला करता था। इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक एवं मालि थे-थडाराम जे.जी । ताजे समाचारों एवं सामयिक विषयो पर सामग्री को छापने द

यह अखबार 15 पैसे प्रति कापी की दर से विका करता था तथा राजपुर प्रिंटिंग प्रेस से छपा करता था।

वर्ष 1964 में संत निरंकारी मण्डल संत निरंकारी कालोनी नई दिल्ली - 110009 के मालिकाना हकों तले सिन्धी मासिक पत्रिका 'संत निरंकारी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक एवं मुद्रक मोतीराम थे। इसके संपादक का नाम था—लालचंद। धर्म और दर्शन विषयक यह पत्रिका एक रुपये में विका करती थी। यह मासिक श्री अवतार प्रिंटिंग प्रेस, अवतार प्रिन्टर्स में छपा करती थी। मासिक संत निरंकारी की कुल 664 प्रतियाँ छपा करती थीं, जिनमें से 640 प्रतियाँ विक्री के लिए होती थीं, बाकी वची 24 प्रतियाँ महत्त्वपूर्ण लोगों एवं सरकारी विभागों आदि को मुफ्त भेज दी जाती थीं।

वर्ष 1966 में पी.—16, अन्धा मुगल दिल्ली-110007 से त्रैमासिक 'मुखड़ियन' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक थे—मोहनलाल शर्मा। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक इस पत्रिका के मालिकाना हक थे—सिन्धी पब्लिशिंग को-ऑपरेटिव सर्विस सोसाइटी लिमिटेड को। यह पत्रिका नीलम, सुन्दर तथा न्यू कृष्णा प्रेस में छपा करती थी।

राजधानी दिल्ली से सन् 1968 के उपरान्त पुनः 1973 में आई.जी./43 लाजपत नगर, नई दिल्ली से पाक्षिक 'नवां विचार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस अखबार के संपादक, प्रकाशक, मुद्रक तथा मालिक थे—तुलसी ताचिल्यानी। समाचारों एवं सामयिक विषयों पर सामाग्री को प्रकाशित करने वाला यह पत्र 40 पैसे प्रति कापी की दर से बिका करता था। यह समाचार पत्र कुमार प्रिंटिंग प्रेस में छपा करता था।

वर्ष 1968 में चार भाषाओं वाला क्रमशः सिन्धी, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में 'संस्कृत पदों' नामक पाक्षिक पत्र का प्रारंभ हुआ था। यह पाक्षिक 4-सी/153-ए, लारेन्स रोड, दिल्ली-110035 से निकला करता था। इस अखवार के प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक तथा मालिक थे—झण्डा रामजमन मल गुरनानी। शिक्षा विषयक यह अखबार लाहौर प्रेस में छपा करता था तथा 25 पैसे में इसकी एक प्रति बिका करती थी।

दिल्ली से वर्ष 1970 में आर.—493 न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली से तीन भाषाओं क्रमशः सिन्धी, अंग्रेजी और संस्कृत में मासिक 'जय सिन्धी बोली' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। इस अखबार के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक एवं मालिक थे—ठाडाराम झामनदास गुरनानी। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका खन्ना/अपेक्स एवं राष्ट्र नामक प्रेसों में छपा करती थी तथा इसकी कीमत थी केवल 25 पैसे प्रति अंक।

दिल्ली से ही सन् 1973 में पाँच भाषी यानी कि सिन्धी, हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी तथा बंगला भाषाई वार्षिक पत्रिका 'आलोक तीर्थ' नाम से छपना प्रारंभ हुई थी। यह पत्रिका देशवन्धु (सांध्य) कालेज कालकाजी नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जाती थी।

यह कॉलेज पत्रिका यूनिवर्सिटी प्रेस में छपा करती थी। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक थे—श्री एस.पी.कोहली।

वर्ष 1977 में 24-यू.ए. जवाहर नगर दिल्ली से द्विभाषी सिन्धी तथा हिन्दी भाषा में 'सिन्धी बाजार' नामक मासिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक तथा मालिक थे— हेमनदास मोरवानी। यह विविध समुदाय का पत्र मात्र 25 पैसे में बिका करता था तथा मैसर्स पर्वत प्रेस दिल्ली से छपा करता था।

राजधानी दिल्ली से ही सन् 1982 में 14/837 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 से 'मल्लाह' शीर्षक से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। एक रुपये में बिकने वाली इस पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक, संपादक तथा मालिक थे— आर.के. आडवानी। साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विषयक यह पत्रिका हीरा प्रेस आगरा तथा दो अन्य प्रेसों में छपा करती थी।

वर्ष 1982 मे 23/32 हेमू कालाणी मार्ग पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60 से द्विभाषी यानी कि अंग्रेजी तथा सिन्धी भाषा में पाक्षिक 'सिन्धु' का छपना प्रारंभ हुआ था। इस पाक्षिक की मुद्रक एवं प्रकाशक थी—रुचि मिगलानी। धर्म एवं दर्शन विषयक इस पत्रिका के संपादक का नाम था—परम अहमद अभिचन्दाणी। लाल सैन एसोसियेशन के मालिकाना हकों तले निकल रहो पाक्षिक 'सिन्धु' की कीमत मात्र 40 पैसे हुआ करती थी, तब यह पत्रिका ट्रियो प्रिन्टर्स में छपा करती थी।

हमारे देश को राजधानी दिल्ली से हो वर्ष 1991 में 'झूलेलाल सिन्धु धारा टाइम्स' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह पत्रिका मुख्यत: सिन्धी संस्कृति, भाषा एवं साहित्य के उत्थान से संबंधित लेखादि प्रकाशित किया करती है। इस पत्रिका की कीमत मात्र पाँच रुपये प्रति अंक थी। पत्रिका के प्रकाशक, मुद्रक,संपादक व मालिक हेमनदास मोटवाणी थे। इसके उप-संपादक रवि कर्मवीर टेकचंदाणी थे। दिल्ली के 24—सी/यू.ए जवाहर नगर, दिल्ली-110007 से निकलने वाली यह त्रैमासिक पत्रिका इडियन प्रिंटिंग वर्क्स, 4 रानी झासी मार्ग, नई दिल्ली-110055 से मुद्रित हुआ करती है।

झूलेलाल
सिन्धु धारा टाइम्स

भारत देश की राजधानी दिल्ली से ही 'सिन्धी गुलिस्तान' नामक एक पाक्षिक समाचार पत्र का निकलना प्रारंभ हुआ। द्विभाषी सिंधी तथा हिन्दी भाषा मे प्रकाशित होने वाले 'सिंधी गुलिस्तान' की प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादिका अंजिली तुलसियानी नामक महिला पत्रकार है। इस समाचार पत्र का चालीस रुपये वार्षिक शुल्क है। प्रिंट प्रोसेस 225, डी.एस.आई.डी.सी. इन्डस्ट्रीज एरिया, दिल्ली से छपने वाला यह समाचार पत्र केवल सिंधी

सिन्धी गुलिस्तान
दिल्ली से प्रकाशित पाक्षिक समाचार

लेख आदि ही नहीं बल्कि कई बार सिंधी समुदाय के लोगों द्वारा हासिल की गई विशेष उपलब्धियों को 'शख्सियत' कालम में भी उभारा करता है।

दिल्ली से ही एक समाचार पत्र 'दिल-ए-सिंध' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। यह अखबार बी.यू. —126, विशाखा एन्क्लेव प्रीतमपुरा दिल्ली-34 से निकला करता है। इस पत्र का आजीवन चन्दा मात्र 100 रुपये है तथा इसका वार्षिक शुल्क 20 रुपया है। सिंधी समुदाय के इस 'दिल-ए-सिंध' नामक अखबार के संरक्षक हैं प्रहलादराय राजानी, मोतीराम रघुवानी तथा हरविन्दरसिंह भल्ला। इस पत्र के संस्थापक हैं— डॉ. एन.एम.चावला तथा इसके सम्पादक हैं महेश चावला। बी.यू. 126 विशाखा एन्क्लेव प्रीतमपुरा दिल्ली से प्रकाशित होने वाला यह समाचार पत्र शिव शक्ति प्रिन्टर्स, बी-862, एन.एस.एम. आज़ादपुर दिल्ली-33 से छपा करता है।

राजधानी दिल्ली से ही सिंधी समाज का सजग प्रहरी पाक्षिक पत्र 'संवाद सिंधी' निकला करता है। एक रुपये कीमत वाले इस समाचार पत्र के प्रकाशक, मुद्रक एवं मालिक श्रीकांत भाटिया हैं। इस अखबार की सम्पादिका श्रीमती विजय बिजलानी नामक पत्रकार हैं। ए.जे. प्रिन्टर्स बहादुरशाह ज़फर मार्ग दिल्ली से छपने वाला पाक्षिक 'संवाद सिंधी' समाचार पत्र सिंधी समुदाय की गतिविधियों को हिन्दी एवं अंग्रेजी में दर्शाता है। यह अखबार दिल्ली के अतिरिक्त देश के अन्य भागों में भी भेजा जाता है।

समाज का सजग प्रहरी
संवाद सिंधी

भारत देश की राजधानी दिल्ली से वर्ष 1995 में "सिन्धिनि जो संसार" नामक एक मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इस समाचार पत्र की कीमत पाँच रुपया प्रति अंक है। ब्लाक-11, मकान नं. 39, नेहरू नगर, दिल्ली-110065 से निकलने वाले इस पत्र के संपादक प्रकाशक व मुद्रक डा. घनश्याम प्रकाश हैं। अपनी नीति के अनुरूप यह समाचार पत्र सिंधी समुदाय व देश प्रेम का प्रचारक है। इस समाचार पत्र का वार्षिक शुल्क 180 रुपया है।
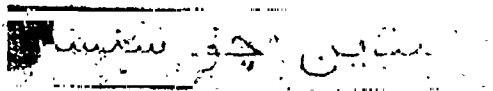
मिज़ोरम

मिजोरम से कोई भी सिन्धी भाषी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है। यहाँ सिन्धी भाषी नहीं के बराबर रहते हैं।

पांडिचेरी

पाडिचेरी से सिन्धी भाषा में कोई भी सिन्धी भाषा समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है, यहाँ सिन्धी भाषी नहीं के बराबर रहते हैं।

गोआ

गोआ में हालांकि कुछ संख्या में सिंधी भाषी रहा करते हैं तथा वहाँ व्यवसाय एवं नौकरियाँ करते हैं, लेकिन गोआ से की भी कोई सिन्धी भाषी पत्र अथवा पत्रिका लेखक की नजर मे नहीं आई है ।

दमन और दीव

दमन से कोई सिन्धी समाचार पत्र अथवा पत्रिका नहीं निकला करती है।

अध्याय - 6

सिकुड़ती सिन्धी अखबारों की दुनियाँ

आज़ादी के उपरान्त भारत देश की धरती के हुए दो हिस्सों 'हिन्दुस्तान' और 'पाकिस्तान' के दौरान सिन्धी समुदाय के हिन्दू लोग शरणार्थियों की मानिद अपने ही देश के विभाजित एक हिस्से 'हिन्दुस्तान' में आ गए और फैल गए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और कच्छ से लेकर नागालैण्ड तक। इस दौरान कदम-कदम पर उनके सम्मुख आई अनेकानेक समस्याओं का तीक्ष्ण बुद्धि और साहस से उन्होंने मुकाबला किया। जीवन के संघर्षों से लड़ने-लड़ाते सिन्धी समुदाय के लोगों ने आज हर क्षेत्र में प्रगति की है। इस समुदाय के लोग आज प्रशासन सेवाओं में हैं, राजनीति में हैं और पत्रकारिता एवं साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि प्रचार आदि माध्यमों में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं फिल्म जगत आदि क्षेत्रों में विशेष दखल रखते हैं।

इन सभी उपलब्धियों के साथ ही सिन्धी समुदाय के लोग तेज गति से अपनी एक ऐसी मौलिक विरासत को खो रहे हैं, जो उन्हें अब तक हासिल की गई समस्त सम्पन्नताओं को लौटाने के उपरान्त भी पुनः हासिल न हो पाएगी। वह है—उनकी अपनी मातृभाषा। कारण सिन्धी समुदाय पत्र-पत्रिकाओं का दिन-व-दिन बन्द अथवा कम होते जाना।

सिन्धी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का दिन-प्रतिदिन पिछड़ने का मुख्य कारण है आज़ाद भारत में प्रारंभ से ही अधिकांश सिन्धी भाषी समाचार पत्र-पत्रिकाएँ अरबी लिपि में प्रकाशित होती रही हैं, जबकि आज लगभग पूरे भारत की स्थिति यह है कि 'अरबी' लिपि को समझने वाले नगण्य लोग ही रह गये हैं। आज के हालात हमें यह दर्शाते हैं कि वर्तमान बाल पीढ़ी ही नहीं बल्कि युवा पीढ़ी एवं अधेड़ उम्र वाले भी अधिकांश सिन्धी अरबी लिपि को पढ़ने में असमर्थ हैं। बाल पीढ़ी तो सिन्धी भाषा बोलने तक में दिन-प्रतिदिन पिछड़ती जा रही है जिसके कारण वे देवनागरी लिपि में लिखी सिन्धी भाषा तक को पढ़कर भी समझने में असमर्थ हो रहे हैं।

समाचार संप्रेषण जब तक आम आदमी अर्थात् उस व्यक्ति की ज़ुबान में नहीं होगा तब तक समाचारों के प्रेषण का पूर्ण उद्देश्य हासिल होना संभव नहीं है। इसलिए पूरे भारत देश की सिन्धी समाचार पत्रो की दुनियाँ मे पत्रकारिता के विकास के लिए जहाँ सिन्धी समुदाय को भाषा और लिपि जैसे विकट एवं चुनौतीपूर्ण समस्याओं को झेलना पड़ रहा है, वहीं सम्पन्न तबके के व्यवसाइयो को सिन्धी अखबारो को निकालने में कोई रुचि नहीं है, क्योंकि उन्हे अखबार निकालना साफ तौर पर घाटे का सौदा नजर आता है, इसलिए सिन्धी समाचार पत्र-पत्रिकाओं की दुनियाँ दिन-प्रतिदिन छोटी होती जा रही है। सिन्धी अखबारों की सिकुड़ती हुई इस दुनियाँ को देखते हुए यदि यह कहा जाय कि वह दिन दूर नहीं जब सिन्धी भाषा ही हिन्दुस्तान से लुप्त हो जाएगी, तो अनुचित न होगा और यदि थोड़ी बहुत जिन्दा भी रही है तो वह रहेगी गरीब तबके के लोगों में।

सिंधी भाषा अपनों के ही मुंह में सिसक रही है

वर्तमान समय में भारत देश में आर्थिक दृष्टि से उच्च तथा मध्यम वर्ग का सा जीवन यापन करने वाले अधिकांशतः सिन्धी समुदाय के परिवारों की स्थिति यह है कि उनके छोटे-छोटे बच्चे ही नहीं बल्कि किशोरावस्था के बालक-बालिकाएँ तक अपनी मातृभाषा को लिखने-पढ़ने की बात तो दूर रही, बोलना तक नहीं जानते। इसका नतीजा यह निकला है कि देश के अधिकतम भागो में घर-घर अंग्रेजी, हिन्दी अथवा प्रादेशिक भाषाओं का माहौल आज सिन्धी समुदाय की मातृभाषा को तीव्र गति से घसीटता हुआ ले जा रहा है शमशान की ओर, और सिन्धी समाज अपनी भाषा को खुशी-खुशी इस बहती हुई बाढ़ के साथ चम्पू से बहाता हुआ बढ़ता चला जा रहा है मरघट की चौखट की तरफ अपनी मातृभाषा रूपी अर्थी को लिए, दाह-संस्कार के लिए।

कितनी विचित्र बात है कि जहाँ सिन्धी समुदाय के लोग अपनी मातृभाषा को दीन-हीन, बौनी व दरिद्र भाषा मानकर हिकारत भरी निगाहो से देख रहे हैं तो वही अन्य भाषी सिन्धी भाषा की विशेषताओ से प्रभावित होकर सिन्धी भाषा के निकट आने को बेताब और प्रयत्नशील हैं। इस बारे मे पूना स्थित पश्चिम क्षेत्रीय भाषा केन्द्र के व्याख्याता सुशील शिवदासानी के नेतृत्व मे सिंधी सीख रहे एक दल के आदिनाथ भोसले से जयपुर में वात होती है। वे महाराष्ट्र के सतारा जिले के फल्टन गांव के रहने वाले हैं तथा यशवन्तराव चौहान हाई स्कूल फल्टन में शारीरिक प्रशिक्षक पद पर कार्यरत हैं। स्नातक तक शिक्षा प्राप्त मराठी भाषी भोंसले ने कुछ माह पूर्व सिंधी भाषा को बोल प्रारंभ किया था, वे अब काफी हद तक सिंधी बोलना सीख गये हैं। आदिनाथ सिं भाषा के बारे में बताते हैं कि सिंधी भी हमारी भारतीय भाषा है और अधिक से अधि भाषाएँ सीखना उनका शौक है तथा अब अरबी लिपि में सिंधी को [illegible] गये हैं। वे ज्यादा से ज्यादा सिधी भाषी लेखकों, पत्रकारों आदि से मिलकर ज्ञान [illegible] करने को हर समय उत्सुक रहते हैं।

अध्याय - 6

सिकुड़ती सिन्धी अखबारों की दुनियाँ

आज़ादी के उपरान्त भारत देश की धरती के हुए दो हिस्सों 'हिन्दुस्तान' और 'पाकिस्तान' के दौरान सिन्धी समुदाय के हिन्दू लोग शरणार्थियों की मानिद अपने ही देश के विभाजित एक हिस्से 'हिन्दुस्तान' में आ गए और फैल गए कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और कच्छ से लेकर नागालैण्ड तक। इस दौरान कदम-कदम पर उनके सम्मुख आई अनेकानेक समस्याओं का तीक्ष्ण बुद्धि और साहस से उन्होंने मुकाबला किया। जीवन के संघर्षों से लड़ने-लड़ाते सिन्धी समुदाय के लोगों ने आज हर क्षेत्र में प्रगति की है। इस समुदाय के लोग आज प्रशासन सेवाओं में हैं, राजनीति में हैं और पत्रकारिता एवं साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि प्रचार आदि माध्यमों में आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं फिल्म जगत आदि क्षेत्रों में विशेष दखल रखते हैं।

इन सभी उपलब्धियों के साथ ही सिन्धी समुदाय के लोग तेज गति से अपनी एक ऐसी मौलिक विरासत को खो रहे हैं, जो उन्हें अब तक हासिल की गई समस्त सम्पन्नताओं को लौटाने के उपरान्त भी पुनः हासिल न हो पाएगी। वह है—उनकी अपनी मातृभाषा। कारण सिन्धी समुदाय पत्र-पत्रिकाओं का दिन-ब-दिन बन्द अथवा कम होते जाना।

सिन्धी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का दिन-प्रतिदिन पिछड़ने का मुख्य कारण है आज़ाद भारत में प्रारंभ से ही अधिकांश सिन्धी भाषी समाचार पत्र-पत्रिकाएँ अरबी लिपि में प्रकाशित होती रही हैं, जबकि आज लगभग पूरे भारत की स्थिति यह है कि 'अरबी' लिपि को समझने वाले नगण्य लोग ही रह गये हैं। आज के हालात हमें यह दर्शाते हैं कि वर्तमान बाल पीढ़ी ही नहीं बल्कि युवा पीढ़ी एवं अधेड़ उम्र वाले भी अधिकांश सिन्धी अरबी लिपि को पढ़ने में असमर्थ हैं। बाल पीढ़ी तो सिन्धी भाषा बोलने तक में दिन-प्रतिदिन पिछड़ती जा रही है जिसके कारण वे देवनागरी लिपि में लिखी सिन्धी भाषा तक को पढ़कर भी समझने में असमर्थ हो रहे हैं।

उत्तर प्रदेश निवासी रामसिंह राजपूत जो कि एल.एल.बी. के अलावा एम.ए., बी.एड तक शिक्षा हासिल किये हैं। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के राजकीय माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर में अध्यापक के पद पर कार्यरत रामसिंह का कहना है कि उन्हें सिंधी भाषा से अत्याधिक लगाव होने के कारण उन्होने यह भाषा सीखना प्रारंभ किया।

उत्तर प्रदेश के ही केदारसिंह यादव जो गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद के निवासी हैं तथा पंचशील हायर सैकण्डरी स्कूल रूकन्दीपुर में शिक्षक हैं, बताते हैं कि उन्हें दशरथ सिंह यादव नामक उनके एक साथी ने सिंधी सीखने के लिए प्रेरित किया था। उनका कहना है कि दुनियाँ भर की सभी भाषाओं की एक ही लिपि होती है। सिंधी भाषा में दो लिपियाँ होती हैं। इस अद्भुत बात को मद्देनजर रखते हुए उन्होने सिंधी भाषा को सीखना प्रारंभ किया। यह सोचकर कि एक बार में जहाँ दो लिपियों का ज्ञान हो, उससे उत्कृष्ट भला और क्या बात हो सकती है। इसी प्रकार उर्दू और हिन्दी की जानकारी रखने वाले राजवीर सिंह ने भी सिंधी भाषा सीखकर सिंधी समुदाय की भाषा का गौरव बढ़ाया है। यही नहीं राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी स्कूलों में सिन्धी भाषा पढ़ाने के लिए ऐसे कई शिक्षकों का भी चयन हुआ है जो सिन्धी समुदाय के नहीं है। मसलन हनुमान सहाय जाट राजकीय सिन्धी उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर नगर सैक्टर--7 जयपुर में सिन्धी भाषाई शिक्षक के पद पर कार्यरत है। इनके अलावा अजमेर आदि प्रदेश के कुछ जिलो में अन्य सम्प्रदायों के कई शिक्षक है जिनकी नियुक्ति सिन्धी भाषी शिक्षक के पद पर हुई है तथा वे सफलतापूर्वक सिन्धी भाषी बच्चों को सिन्धी पढ़ा रहे हैं।

असिन्धी भाषियों में सिन्धी भाषा के केवल शिक्षक ही नहीं है, बल्कि अजमेर की मधु माथुर, लतिका सेन रतन सारवान , जयपुर के संजय रायजादा, राजीव भट्ट तथा दिल्ली की वीणा गुप्ता तथा निधि भार्गव आद ने भी सिन्धी जबान में सिन्धी जबान मे आकाशवाणी आदि मंचों पर शुद्ध सिन्धी भाषा में अच्छे-अच्छे गीत गाकर नाम कमाया है। ये उदाहरण सिन्धी समुदाय में जन्मे लोगों के लिए चुनौती ही नहीं बल्कि प्रेरणा के स्त्रोत भी हैं।

असिंधी भाषियो द्वारा सिंधी भाषा संस्कृति और साहित्य की ओर झुकाव इस बात का सबूत है कि सिंधी भाषा जहाँ सिंधी समुदाय की जुबान से रोती-सिसकती हुई निकलती जा रही है, तो उसे अन्य भाषियो ने गोद में लेना प्रारंभ कर लिया है।

यह माना कि आजाद भारत में सिंधी समुदाय को अपनी प्रगति एवं उन्नति के लिए अन्य भारतीय भाषाओं को सीखकर लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना जरूरी है, लेकिन अपनी मातृभाषा को भुला देना सिंधी भाषियों के लिए उतना ही घातक अथवा दु:खदायी है, जितना कि अपनी माँ की गोद को सूना कर देना।

इसी प्रकार जयपुर में आयी इस टोली के सदस्य आसाम के निवासी मोहम्मद अब्दुल सत्तार से बात होती है। स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त सोनमारी हाई स्कूल मदरसा में अरबी भाषा के शिक्षक अब्दुल सत्तार बताते हैं कि सिंधी सीखने के लिए उन्हें उनके मित्र प्यारे खान से प्रेरणा मिली थी। अपनी मातृभाषा बंगाली तथा प्रादेशिक आसामी आदि भाषाओं के अलावा वे अब अच्छी-खासी सिंधी भाषा भी बोल, लिख व पढ़ लेते हैं।

पर्यटन की दृष्टि से पूना से जयपुर आयी इस टोली के एक सदस्य मध्य प्रदेश निवासी सन्तोष कुमार पटेल एम.कॉम., एम.ए. तक शिक्षित गुजराती भाषी जबलपुर जिले के मजरमा गाँव के रहने वाले हैं। वे राजकीय मिडिल स्कूल धोधरा में अध्यापक हैं। उन्होंने बताया कि सिंधी सीखने के पीछे उनका उद्देश्य प्राचीन सिंधी लोक कथाओं का हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद करके उन्हें आगे बढ़ाने का है एवं सिंधी में वैदिक, साहित्य तथा सिन्धु घाटी की सभ्यता की जानकारी हासिल करने का है।

पूना में पश्चिम क्षेत्रीय भाषा केन्द्र में सिंधी भाषा सीखने वाले अन्य लोगों में एक है उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले की तहसील करहल स्थित आजाद हिन्द कालेज के संस्कृत एवं राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त—श्री सिंह बताते हैं कि उनके विद्यालय के सेवानिवृत्त प्रिंसीपल यादव साहब ने सिंधी सीखने के लिए उन्हें उत्साहित किया था, अब वे सिंधी भाषी मित्रों आदि से सिंधी में ही बात करते हैं तथा उन्हें गर्व होता है कि वे सिंधु घाटी की प्रमुख भाषा सिंधी को सीख गये हैं।

सिंधी भाषा एवं संस्कृति के प्रति प्रेम रखने वालों में से इस टोली के एक सदस्य हैं—वीरसिंह चौधरी, जो उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अमर ज्योति जूनियर हाई स्कूल झलसोना में अध्यापक हैं। वे एम.ए., बी.एड. तक शिक्षा प्राप्त हैं। चौधरी बताते हैं कि सिंधी भाषा उन्हें बहुत अच्छी लगती है तथा सिंधी समुदाय में प्रचलित रीति-रिवाजों आदि की जानकारी हासिल करने के लिए उनका झुकाव सिंधी भाषा की तरफ हुआ। उनका कहना है कि अब तो उन्हें सिंधी भाषा से तहेदिल से लगाव हो गया है। इसी तरह उत्तर प्रदेश के ही गोविन्द बल्लभ शर्मा जो कि नैनीताल जिले के सितारगंज तहसील के राजकीय इंटर कालेज सितारगंज में अध्यापक हैं, ने सिंधी भाषा को इसलिए सीखा है, क्योंकि उन्हें हिंदी अंग्रेजी तथा अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषाएं सीखने की चाह है, इसलिए उन्होंने सिंधी भाषा को सीखना प्रारंभ कर दिया। उनका मानना है कि शिक्षकों के लिए तो वैसे भी आवश्यक है कि अधिक से अधिक भाषायें सीखें, क्योंकि कक्षा में सभी धर्मों, वर्गों एवं भाषाओं के छात्र-छात्राएं पढ़ा करती हैं। उन्हें समझने के लिए जो अध्यापक ज्यादा से ज्यादा भाषाओं का ज्ञाता होगा वह उतना ही सफल अध्यापक होगा। शिक्षक जगत ही क्यों अधिक भाषाएं जानने वाला व्यक्ति दुनियाँ के हर क्षेत्र में औरों से आगे होता है, क्योंकि उसे हर भाषी से सहयोग प्राप्त होता है उसकी ज़ुबान बोलने पर।

उत्तर प्रदेश निवासी रामसिंह राजपूत जो कि एल.एल.बी. के अलावा एम.ए , बी.एड. तक शिक्षा हासिल किये हैं। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के राजकीय माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर में अध्यापक के पद पर कार्यरत रामसिंह का कहना है कि उन्हें सिंधी भाषा से अत्याधिक लगाव होने के कारण उन्होंने यह भाषा सीखना प्रारंभ किया।

उत्तर प्रदेश के ही केदारसिंह यादव जो गाजीपुर जिले के मोहम्मदाबाद के निवासी हैं तथा पंचशील हायर सैकण्डरी स्कूल रूकन्दीपुर में शिक्षक हैं, बताते हैं कि उन्हें दशरथ सिंह यादव नामक उनके एक साथी ने सिंधी सीखने के लिए प्रेरित किया था। उनका कहना है कि दुनियाँ भर को सभी भाषाओं की एक ही लिपि होती है। सिंधी भाषा में दो लिपियाँ होती हैं। इस अद्भुत बात को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने सिंधी भाषा को सीखना प्रारंभ किया। यह सोचकर कि एक बार में जहाँ दो लिपियों का ज्ञान हो, उससे उत्कृष्ट भला और क्या बात हो सकती है। इसी प्रकार उर्दू और हिन्दी की जानकारी रखने वाले राजवीर सिंह ने भी सिंधी भाषा सीखकर सिंधी समुदाय की भाषा का गौरव बढ़ाया है। यही नहीं राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा सरकारी स्कूलों में सिन्धी भाषा पढ़ाने के लिए ऐसे कई शिक्षकों का भी चयन हुआ है जो सिन्धी समुदाय के नहीं है। मसलन हनुमान सहाय जाट राजकीय सिन्धी उच्च प्राथमिक विद्यालय जवाहर नगर सैक्टर—7 जयपुर में सिन्धी भाषाई शिक्षक के पद पर कार्यरत है। इनके अलावा अजमेर आदि प्रदेश के कुछ जिलों में अन्य सम्प्रदायों के कई शिक्षक है जिनकी नियुक्ति सिन्धी भाषी शिक्षक के पद पर हुई है तथा वे सफलतापूर्वक सिन्धी भाषी बच्चों को सिन्धी पढ़ा रहे हैं।

असिन्धी भाषियों में सिन्धी भाषा के केवल शिक्षक ही नहीं है, बल्कि अजमेर की मधु माथुर, लतिका सेन रतन सारवान , जयपुर के संजय रायजादा, राजीव भट्ट तथा दिल्ली की वीणा गुप्ता तथा निधि भार्गव आद ने भी सिन्धी जबान में सिन्धी जबान मे आकाशवाणी आदि मंचों पर शुद्ध सिन्धी भाषा में अच्छे-अच्छे गीत गाकर नाम कमाया है। ये उदाहरण सिन्धी समुदाय मे जन्मे लोगों के लिए चुनौती ही नहीं बल्कि प्रेरणा के स्त्रोत भी हैं।

असिंधी भाषियो द्वारा सिंधी भाषा संस्कृति और साहित्य की ओर झुकाव इस बात का सबूत है कि सिंधी भाषा जहाँ सिंधी समुदाय की ज़ुबान से रोती-सिसकती हुई निकलती जा रही है, तो उसे अन्य भाषियो ने गोद में लेना प्रारंभ कर लिया है।

यह माना कि आजाद भारत में सिंधी समुदाय को अपनी प्रगति एवं उन्नति के लिए अन्य भारतीय भाषाओ को सीखकर लोगो के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना जरूरी है, लेकिन अपनी मातृभाषा को भुला देना सिंधी भाषियो के लिए उतना ही घातक अथवा दुःखदायी है, जितना कि अपनी माँ की गोद को सूना कर देना।

आसान नहीं है पत्रकार बनना

पत्रकारिता जनसंचार का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो जनधारणाओं को बदलने की अपार शक्ति बना देता है। इसलिए आज दिन-प्रतिदिन पत्र-पत्रिकाओं की बढ़ती हुई संख्या के साथ-साथ इस पेशे में प्रवेश करने के लिए लोगों का भी अत्यधिक झुकाव होने लगा है। युवक-युवतियों की पत्रकारिता की ओर बढ़ती हुई रुचि को मद्देनजर रखते हुए विश्वविद्यालयों आदि के माध्यम से उन्हें पत्रकारिता की शिक्षा देने का सिलसिला बड़े जोरों से प्रारंभ हो चुका है। भारत देश में सबसे पहले पत्रकारिता का पाठ्यक्रम वर्ष 1938 में अलीगढ़ विश्वविद्यालय से प्रारंभ किया गया था। इसके बाद पढ़ाई के माध्यम से पत्रकार तैयार करने के लिए विश्वविद्यालय एवं निजी संस्थानों में होड़-सी लग गई। वर्तमान में भारत में पत्रकार बनाने के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय विद्या भवन, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय जनसंचार संस्थान, रवि शंकर विद्यालय आदि-आदि पत्रकारिता का प्रशिक्षण देकर लोगों को डिप्लोमा प्रदान कर रहे हैं। यहाँ राजस्थान विश्वविद्यालय भी जहाँ पत्रकार बनने के शौकीन छात्रों को शिक्षा दिया करता है तो वहीं कोटा खुला विश्वविद्यालय खुल जाने के उपरान्त वह भी पत्रकारिता एवं जनसंचार कोर्स की डिग्री प्रदान किया करता है।

आज हिन्दुस्तान में कोई 35 के आसपास विश्वविद्यालयों द्वारा पत्रकारिता का डिप्लोमा, बी.जे., एम.सी.जे., बी.जे.एम.सी. आदि पत्रकारिता के कोर्स चलाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त कोई चालीस-पैंतालीस प्राइवेट कॉलेज अथवा संस्थान पत्रकारिता तथा जनसंचार का पाठ्यक्रम चलाकर लोगों को चकाचौंध की दुनियाँ समझे जाने वाले पत्रकारिता के पेशे की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

भारत सरकार ने भी पत्रकारिता की शिक्षा को गंभीरता से लेते हुए दिल्ली में भारतीय जनसंचार संस्थान की स्थापना की तथा विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता शिक्षा के लिए पृथक से विभाग स्थापित किये हैं। इसके अलावा देश में भटकते छात्र-छात्राओं की मानसिकता को पहचानते हुए फिल्मी दुनियाँ की तरह पत्रकारिता की शिक्षा देकर पत्रकार बनाने के अन्य केन्द्र भी खुल गये हैं ।

वक्त की बढ़ती तेज रफ्तार के साथ-साथ दिन-प्रतिदिन समाचार पत्र-पत्रिकाओं के लिए पत्रकारों की माँग तो बराबर बढ़ रही है, लेकिन अधिकांशतः बड़े अखबार किसी डिग्री या डिप्लोमाधारी पत्रकारों पर निर्भर न रहते हुए अपनी पूर्ति के लिए स्वयं ही लोगों को प्रशिक्षण देकर अपने लिए पत्रकार तैयार करते हैं। जिन्हें 'ट्रेनीज' कहा जाता है।

और तो और पत्रकार तैयार करने वाले राजस्थान के कोटा खुला विश्वविद्यालय आदि देश के निजी अनेकानेक संस्थानों में पत्रकारिता की लगने वाली कक्षाओं में भी अधिकांशतः उन्हीं पत्रकारों को विशेषज्ञों के रूप में व्याख्यान देने को आमंत्रित किया

जाता है, जिनके पास पत्रकारिता की डिग्री डिप्लोमा नहीं होता, लेकिन वे अपने-अपने क्षेत्र में सफल लेखक-पत्रकार एवं साहित्यकार होते हैं।

इस मायने में यही कहा जा सकता है कि हमारे देश में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अनेकानेक स्थानों पर मिलने वाली पत्रकारिता की शैक्षिक शिक्षा ज्ञान अर्जित करने के लिए तो फिर भी ठीक है, लेकिन सफल पत्रकार बनने के लिए उतनी उपयुक्त नहीं है, जितनी की व्यावहारिक क्षेत्र में कार्य करने के उपरान्त पत्रकार बनने में है। हाँ, यदि किसी के अन्दर मन में पहले से ही 'पत्रकार' बैठा हो और वह पत्रकारिता की शिक्षा लेने के उपरान्त फिर व्यावहारिक रूप से काम करता हुआ तपता है, तो उसके लिए यह डिप्लोमा/डिग्री थोड़ी बहुत अवश्य कारगर सिद्ध हो सकती है। लेकिन इसके लिए सबसे पहले भाषा का ज्ञान होना जरूरी है। सिन्धी भाषा के पत्रकार तैयार करने के लिए सबसे पहले भाषा को जिन्दा रखना होगा। बहरहाल राजस्थान विश्वविद्यालय में 1995 में पत्रकारिता विषय में बी.जे.एम.सी. कर रहे महेश मंगतानी नामक छात्र ने सिन्धी पत्रकारिता के विविध आयाम पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की है। यह इस छात्र का एक साहसिक कार्य कहा जायेगा।

सिन्ध और हिन्द के लेखक-पत्रकार

कुछ वर्ष पहले की बात है भारत विरोधी विचारों वाले पड़ौसी मुल्क पाकिस्तान से दो लेखक-पत्रकार भारत में रह रहे अपने साहित्यकार मित्रों से मिलने और भारत दर्शन को आये हुए थे, ये अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बंबई, दिल्ली आदि शहरों में होते हुए एकाध दिन के लिए पर्यटकों की नगरी जयपुर भी आये थे। इनमें एक थे सिंध प्रदेश के हैदराबाद क्षेत्र के निवासी और पाकिस्तान सिंध विश्वविद्यालय के 40-42 वर्षीय जनसंपर्क अधिकारी शौकत शोरो, जो पाकिस्तान की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं 'मेहराण' और 'आरसी' आदि में स्वतंत्र लेखन करते हैं। इनके द्वारा लिखी 'अखियुनि में टंगियल सपना' (आँखों में लटके सपने) और 'गूंगी धरती बोड़ो आकाश (गूंगी धरती बहरा आकाश) पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका कहना था कि, पाकिस्तान सरकार से भारत चाहे कैसे भी संबंध या विवाद हों, लेकिन हिंदुस्तान और पाकिस्तान के लेखक-साहित्यकारों एवं पत्रकारों की विचारधारा में कोई मनमुटाव नहीं है। विभाजन के पहले जो सिंधी लेखक-पत्रकार या साहित्यकार 'सिंध प्रदेश' में रहते थे, वे तब भी हमारे भाई थे और आज भी चाहे वे हिंदुस्तान में रहते हैं तो भी हमारे भाई ही हैं। क्योंकि पाकिस्तान में यह नहीं पूछा जाता कि तुम कौन हो? वहाँ बताने वाला कहता है—सिंधी, पंजाबी, बलोची या फिर मुसलमान' (इनमें वे भी शामिल हैं जो विभाजन के दौरान शरणार्थी की हैसियत से हिंदुस्तान से पाकिस्तान आये थे उन्हें मुहाजिर कहा जाता है।) फिर उन्होंने मेरा ध्यान भारत भ्रमण के लिए उनके साथ आयी लेखिका श्रीमती गुल तालपुर की ओर आकृष्ट किया।

मैं गुलजी से सिन्धी पत्रकारिता एवं साहित्य संबंधी मुद्दों पर बात करता हूँ तो वे जानकारी देती हैं कि वे वहाँ की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में से 'पारस', 'आरसी',

'मेहराण' आदि में लिखा करती हैं। पाकिस्तान ही नहीं बल्कि हिंदुस्तान की सिंधी भाषाई बंबई से निकले वाली पत्रिका 'कूंज' और कुछ वर्ष पूर्व जयपुर से सिन्धी में निकलने वाली 'सुहिणी' पत्रिका में भी उनकी काफी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। वे राजनीति से संबंधित लेखन नहीं करती हैं और न ही राजनीति के बारे में सोचती हैं। उनका कहना था कि 'यह मेरी तीसरी भारत यात्रा है हिंदुस्तान के लोग बहुत अच्छे हैं। यहाँ के सिन्धी पत्रकार व साहित्यकार मुझे दावतों पर बुलाते हैं तो वहाँ जाकर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हम किसी घर में, अपने ही परिवार के सदस्यों के साथ मिल-बैठकर खाना खा रहे हों। साहित्यक चर्चाएं होती हैं तो मुझे महसूस नहीं होता कि मैं किसी हिन्दुस्तानी लेखक-पत्रकार साहित्यकार से बात कर रही हूँ। उनकी टिप्पणी थी कि 'हम सब एक ही घौंसले के परिन्दे हैं जो अलग-अलग मुल्कों में रह रहे हैं।' मुझे तो बहुत दुःख होता है ज़ब मन में यह विचार आता है और देखती हूँ कि हमें अपनों से ही मिलने में कितनी सरकारी औपचारिकताएं पूरी करनी पड़ती हैं—विशेषकर पाकिस्तान देश का नागरिक होने के कारण।

अर्शअली सिंध (पाकिस्तान) में स्नातक क़क्षा के छात्र हैं वे भी इन साहित्यकारों के साथ घूमने आये थे। वे जानकारी देते हैं कि वहाँ जीये सिंध स्टूडेंट फेडरेशन (जी.एम. सैयद समर्थक) सिंध पिपुल्स स्टूडेंट फैडरेशन (पीपुल्स पार्टी समर्थक) नामक छात्र संघ है। छात्रों के चुनाव के बारे में बातचीत करने पर वे बताते हैं कि पाकिस्तान में पाकिस्तान समर्थन विचारधारा सिन्धी छात्रों में लोकप्रिय नहीं है, पाकिस्तान विरोधी विचारधारा लोकप्रिय है, वहाँ के छात्रों में। जाति या धर्म के आधार पर वोट दिये जाने की परंपरा नहीं है। वे अपने चहेते नेता को चुनने का प्रयास करते हैं। बाकी विचारों में मतभेद तो पूरे विश्व में है। जाति प्रथा को लेकर आपस में कोई टकराव नहीं होता। वहाँ के कॉलेजों आदि में सिंध विश्वविद्यालय, मेहराण इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय, लियाकत मेडिकल कॉलेज आदि सिंध प्रदेश में हैं, लेकिन सिंधी भाषा व बोली को सिंध में जितनी अहमियत मिलनी चाहिए अब उतनी नहीं मिल पा रही है।

लेखकों के साथ आये लेखिका गुल तालपुर के पति इमदाद अली तालपुर, सिंध में बहुत बड़े जमींदार हैं। वे जानकारी देते हैं कि वे पहली बार भारत आये हैं। उनकी पत्नी जब पहली बार भारत यात्रा से घूमकर लौटी थी तो उन्हें हिंदुस्तान की बातें बताया करती थीं-बंटवारे के दौरान यहाँ से भारत गये सिंधी लेखकों, पत्रकारों एवं साहित्यकारों के मन के किसी भी कोने में यह नहीं है कि हम कोई पाकिस्तानी हैं। पत्नी की बातें सुन-सुनकर मेरी भी इच्छा हुई कि हिंदुस्तान जाऊँ और इस बार आने के उपरांत मैंने भारत में वह सब खुद महसूस किया, जैसा कि वह बताया करती थी। मैं शुक्रगुजार हूँ यहाँ के लेखकों-पत्रकारों में बलराम आजाद, लाल पुष्प, नंद जवेरी, लक्ष्मण कोमल, वासुदेव 'सिंधु, भारती', लक्ष्मण भंभाणी, डॉ. मुरलीधर जेटली, सुंदर अगनाणी आदि

साहित्यकारों का, जिन्होने हमें अपने देश में यह महसूस तक नहीं होने दिया कि हम 'पाकिस्तानी' हैं। मैंने वह सब आँखों से देखा कि भले ही हम राजनैतिक स्तर पर विपरीत विचारधारा वाले मुल्कों में रह रहे हो, लेकिन सिन्धी पत्रकारिता साहित्य, भाषा की एकरूपता हमें एक ही माला में पिरोये हैं और पिरोये रहेगी। मैं भारत में रहने वाले समस्त लेखक, पत्रकार तथा साहित्यकारों को सिंध-पाकिस्तान आने की दावत देता हूँ। हम प्यार मोहब्बत से उनकी सेवा करेंगे। हमे उनका इंतजार रहेगा। उन्हीं के साथ खड़े राजस्थान सिंधी अकादमी के पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष लेखक सुंदर अगनाणी ने बताया कि 'ये हमारे मेहमान जहाँ-जहाँ भी गये, इन्होने मस्जिदों में ही नहीं बल्कि मन्दिरो मे भी प्रसाद चढ़ाया और बिना किसी भेदभाव के खाया। जयपुर के लक्ष्मीनारायण मंदिर में भी इन्होंने प्रसाद चढाकर खाया और अपने आपको धन्य समझा। इमदाद अली जानकारी देते हैं कि यहीं नहीं हिंदुस्तान में जहाँ-जहाँ भी हम गये मदिरों में अवश्य गये हैं और यहाँ के हर मंदिर मे मुझे तो अजीब सी शांति मिली है।

पाकिस्तानी लेखकों-पत्रकारो के साथ जयपुर आये बंबई के पत्रकार व साहित्यकार तथा सिंधी पत्रिका 'कूंज' के संपादक हरि मोटवानी से बात हुई तो उन्होने बताया कि विभाजन के समय वे केवल चौदह वर्ष के थे। जुलाई 31, 1986 को जब वे पाकिस्तान घूमने गये थे तो उन्होने देखा कि जिस किसी भी लेखक पत्रकार साहित्यकार को उनके बारे में पता लगता था तो वे उनसे मिलना चाहते थे। उनसे मालूम हुआ कि पाकिस्तान का प्रबुद्ध वर्ग ही नहीं, अपितु आम नागरिक भी पाकिस्तान और भारत के संबंधों को सुधारना चाहता है तथा शांतिपूर्ण तरीके से हर समस्या का निपटारा चाहता है। यदि दोनों देशों के सिन्धी मिलकर चाहे तो सिन्धी पत्रकारिता व साहित्य को अनन्त काल तक जिन्दा रख सकते हैं।

अपनों के बीच बेगानी सिंधी

वर्ष 1947 में भारत देश में विभाजन रूपी एक तूफान आया था। उस समय सिन्धी समुदाय के लोग पेड़ के पत्तों की मानिन्द उड़कर हिन्दुस्तान आ गए थे। जो पत्ता पृथ्वी के जिस हिस्से में गिरा वहीं जमकर वृक्ष की भाँति स्थापित हो गया। सिन्धी समुदाय को हिन्दुस्तान विभाजन के दौरान को मिले हिस्से मे अपना कोई अलग से प्रदेश न होने के कारण सरकार ने उन्हे पूरे भारत मे हर प्रकार की सहूलियते प्रदान करने के साथ संविधान की आठवीं अनुसूची की पन्द्रह भाषाओं में सिंधी को भी महत्त्व दिया और 1967 में संशोधन कर इस भाषा को शामिल किया गया।

इस भाषा के साथ सरकार ने पूर्ण न्याय कर सिंधी शिक्षा के विकास के लिए राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, दिल्ली व उत्तर प्रदेश मे सिन्धी अकादमियों की स्थापना की। आकाशवाणी द्वारा 'सिन्धी' में समाचारों, नाटको आदि का प्रसारण किया जाने लगा तथा अन्य भाषाओं की तरह इस भाषा को भी प्रोत्साहन दिया जाने लगा। दूरदर्शन से भी सिन्धी नाटक आदि कार्यक्रम प्रसारित किये जाने लगे हैं।

राजस्थान सरकार ने प्रारंभ में सिंधी शिक्षा को जिंदा रखने के लिए कोई 20-25 राजकीय सिंधी विद्यालय मात्र जयपुर में खोले। इसी तरह अन्य जिलों में भी क्षेत्रफल के अनुसार सिन्धी स्कूल स्थापित किए गए थे। लेकिन अब घटते-घटते जयपुर शहर में सिंधी शिक्षा पढ़ाने वाले राजकीय विद्यालयों की संख्या सात-आठ के करीब रह गई है। इसी प्रकार अन्य जिलों में भी सिंधी विद्यालयों के घटने का कारण सिंधी पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की कमी का होना है।

इस प्रदेश के सिंधी समुदाय के बाहुल्य संख्या वाले क्षेत्र अजमेर जिले के राजकीय महाविद्यालय की सिंधी विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष श्रीमती सुशीला मोटवानी से इस बारे में बात होती है, वर्ष 1988 में हुई बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि इस कॉलेज में वर्ष 1972 में सिंधी विषय पढ़ाना प्रारंभ किया गया था। वे जब वर्ष 1975 में इस कॉलेज में आई थी तो उस समय स्नातक तक सिन्धी शिक्षा पढ़ाई जाती थी। उस वर्ष यहाँ करीब 200 छात्र-छात्राओं ने सिन्धी विषय को लेकर बी.ए. की परीक्षा दी। वर्तमान समय में सिन्धी विषय के स्नातक के छात्र-छात्राओं की संख्या इतनी कम है कि उन्हें बताते हुए भी शर्म आ रही थी। बहरहाल वर्ष 1987 बी.ए. प्रथम वर्ष में मात्र दो छात्र नियमित रूप से इस महाविद्यालय में पढ़ रहे थे, तथा 60 प्राइवेट हैं। द्वितीय वर्ष में 12 नियमित छात्र है तो 60 प्राइवेट छात्र-छात्राएँ हैं। इसी प्रकार तृतीय वर्ष में 60 तो प्राइवेट हैं ही, लेकिन नियमित पढ़ने वालों की संख्या सिर्फ तीन ही है। राजस्थान प्रदेश के एकमात्र अजमेर स्थित इस कॉलेज में सिन्धी पढ़ाई जाती है। वर्ष 1982-83 में यहाँ सिन्धी विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ की गई थीं। उस समय नियमित रूप से पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या 25 थी। इस वर्ष उन नियमित छात्रों 25 के अलावा 79 प्राइवेट छात्रों ने स्नातकोत्तर की परीक्षा दी थी। वर्ष 1985-86 में उक्त कुल 104 छात्र-छात्राओं में से यह संख्या घटकर 60-65 ही रह गई तथा वर्ष 1986-87 में सिंधी में स्नातकोत्तर करने वाले रह गए मात्र 32 छात्र-छात्राएं।

दिन प्रतिदिन सिंधी में शिक्षा लेने वालों की घटती संख्या का इसी से अंदाज लगाया जा सकता है कि वर्ष 1987-88 में इस महाविद्यालय में स्नातकोत्तर करने वालों में कुल 13 छात्र-छात्राएं पढ़ रहे थे तथा नौ ने प्राइवेट परीक्षा दी। श्रीमती सुशीला मोटवानी सिंधी शिक्षा की दयनीय स्थिति का जिक्र करते हुए जानकारी देती है कि अजमेर विश्वविद्यालय के अधीन वर्तमान समय में यानी कि वर्ष 1988 में सिंधी स्नातकोत्तर के मात्र चार छात्र-छात्राएं हैं तथा मजेदार बात यह है कि चार को पढ़ाने वाले व्याख्याताओं की संख्या भी चार हैं। वर्ष 1988 ही नहीं, बल्कि, 1996-97 में भी सिन्धी पड़ने वाले छात्रों की कमी, वहां के व्याख्याताओं आदि के लिए एक चिंता का विषय बना हुआ है ।

सिन्धी शिक्षा के उत्थान के लिए खोली गई राजस्थान सिन्धी आकादमी भी राजनीति के दलदल में फंसी है। जिसकी लाठी उसकी भैंस इस अकादमी ने कभी भी इस कॉलेज के छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार नहीं दिया और न ही सरकार ने कुछ

किया है। उर्दू पढ़ने वाले स्नातक के छात्र-छात्राओ को तो सरकार प्रतिमाह प्रोत्साहन स्वरूप राशि देती रही है, लेकिन सिंधी पढ़ने वालों को नहीं। इसी प्रकार एम.ए. पढ़ने वाले उर्दू के छात्रों को सरकार प्रतिमाह छात्रवृति प्रदान किया करती है लेकिन सिंधी पढने वालो को नहीं।

सुशीला मोटवानी बताती हैं कि वे इस बारे में शिक्षामंत्री को ही नहीं, बल्कि सरकारी अधिकारियों के अलावा राजस्थान सिंधी अकादमी को भी कई बार अनुरोध कर चुकी हैं। व्यक्तिगत तौर पर भी और पत्रों के माध्यम से भी। लेकिन वे पत्र लिख-लिखकर थक गई हैं। पर यहाँ के छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्ति मिलने के लिए किसी भी स्तर पर कोई भी कार्यवाही नहीं हो रही है। छात्रवृत्ति देकर सिंधी शिक्षा की ओर सिंधी छात्र-छात्राओं को आकर्षित किया जाकर उनकी संख्या बढाई जा सकती है। इसी प्रकार प्रदेश के राजकीय सिंधी विद्यालयों में भी सिंधी की शिक्षा लेने वाले बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप राशि दी जाकर उनके परिजनों को अपनी मातृभाषा की ओर आकर्षित किया जा सकता है। राजस्थान सिन्धी अकादमी भी अपनी फिजूल खर्चो को कम करके सिन्धी सीखने के लिए राजस्थान प्रदेश के अलग-अलग जिलों में केन्द्र खोल सकती है तथा सिन्धी पढ़ने के इच्छुक छात्रों को आकर्षक छात्रवृति आदि देकर उन्हें सिन्धी भाषा सीखने के लिए प्रेरित कर सकती है, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रही है ।

सिंधी शिक्षा के भविष्य के बारे मे उनका कहना है कि वर्तमान समय मे अजमेर जिले में ही कोई 150 छात्र हैं, जो एम.ए. कर चुके हैं, लेकिन बेरोजगार हैं। उनके लिए भी सरकार को सोचना चाहिए। अकादमी भी सिंधी के विकास के लिए कोई विशेष काम नहीं कर रही है। अब आप यहाँ ही देख लीजिए वर्तमान समय में राजस्थान में एकमात्र अजमेर विश्वविद्यालय है जहाँ सिंधी शिक्षा देने के लिए महाविद्यालय है। अकादमी की जनरल कौंसिल में राजस्थान सिंधी अकादमी के संविधान के तहत सरकार की ओर से सुखाड़िया विश्वविद्यालय के डॉ. मोहन अडवानी तथा जोधपुर विश्वविद्यालय के डॉ. जी.टी. मेंधानी को अकादमी की जनरल कौंसिल मे लिया गया था, जबकि वे दोनो ही सिंधी भाषा के प्रोफेसर लेक्चरार नहीं थे और तो और उक्त दोनों विश्वविद्यालयों में सिंधी पढ़ाई ही नहीं जाती बताते हैं। सिंधी शिक्षा के उत्थान के लिए दम भरने वाले सिंधी भाईयो का इस भाषा के प्रति कितना प्रेम है इसका नमूना देख लीजिए। हाल ही में एक विशाल सिंधी समारोह में जहाँ हजारों की सख्या में सिंधी समुदाय के लोग मौजूद थे, यही नहीं एक मंत्री एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश इन्द्रसेन ईसरानी, समाजसेवी डॉ. जी.टी भट्ट और तो और सांसद गिरधारीलाल भार्गव, विधायिका उजला अरोड़ा भी मौजूद थी, उस समय सिंधी समाज की गायिका कौशल्या कृपलानी ने अपने गायक साथियों तुलसी नारियानी एवं तेजभान कृपलानी के सा होकर एक गीत गाया, जिसके भाव थे कि "कैसे भुलाऊँ बोली, जिसमें माँ ने

मीठी-मीठी बोली, प्यारी प्यारी बोली, जिए हमेशा सिंधी बोली।" सिंधी में गाए इस गीत के बोलों के साथ ही उनके ऊपर अरबी लिपि में लिखा हुआ एक बैनर लगा था, 'पूज पंचायत कंवर नगर जयपुर आपका हार्दिक स्वागत करती है।' यानि कि 'सिंधी में हिंदी' हिंदी न जानने वाला कोई सिंधी बुजुर्ग इस बैनर को पढ़कर भी नहीं समझ सकता कि क्या लिखा है ? इसी प्रकार हिंदी भाषी इसके अर्थ को समझते-बूझते हुए भी इसे पढ़ नहीं सकता। ऐसी हालत है सिन्धी शिक्षा की जब शिक्षा की ये हालत है तो कहाँ से उठेगी सिन्धी पत्रकारिता।

बेचारा अंग्रेजी के सामने हारा

विद्वान शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय का कहना है कि जो शिक्षा मनुष्य को संकीर्ण और स्वार्थी बना देती है, उसका मूल्य किसी युग में चाहे जो रहा हो, अब नहीं है। शरतचन्द्र चट्टोपध्याय की बात चाहे कितनी भी दमदार हो, लेकिन कुछ शिक्षाएँ ऐसी होती हैं जो संकीर्णता और स्वार्थपूर्ण होते हुए भी मूल्यवान लगती हैं हमारे देश के बड़े-बड़े नेताओं को। वह शिक्षा है अंग्रेजी भाषा की।

शिक्षा के विकास के मंचों पर ही नहीं बल्कि भारत देश की सिन्धी भाषा के उत्थान के समारोहों में बड़े-बड़े नेता चाहे वे प्रधानमंत्री हो, या किसी प्रदेश का मुख्यमंत्री हो या शिक्षा मंत्री खड़े होकर बड़ी जोशीली आवाज़ में सिन्धी के विकास की बातें करते हैं। इस भाषा का गुणागान करते हुए श्रोताओं को प्रेरित करते हैं कि वे अपने बच्चों को सिन्धी सिखाएँ, सिन्धी स्कूलों में पढ़ाएँ, लेकिन क्या कभी उन्होंने अपने मन को टटोलकर देखा है कि वे स्वयं किस ओर जा रहे हैं। बड़े मजे की बात यह है कि सिन्धी भाषा के प्रोत्साहन की बातें करने वाले स्वयं अपनी बच्चों, रिश्तेदारों आदि को अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा देते हैं।

मंच पर 'सिन्धी' सीखने की बात और घर में अंग्रेजी पढ़ने की बात' आज हमें राष्ट्र के नेताओं, प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारियों सिन्धी अखबारों के पत्रकारों, सिन्धी के लेखकों-साहित्यकारों के घर में ही नज़र नहीं आती, बल्कि वे सभी अन्तर्मन से इस बात का प्रयास करते हैं कि उनके बच्चे अंग्रेजी सकूल में शिक्षा लें। उनके बच्चों की सिन्धी व हिन्दी चाहे कमजोर रहे लेकिन अंग्रेजी उनकी फनाफन हो। धाराप्रवाह हो।

अंग्रेजों के भारत छोड़ने के उपरान्त आज तक हमारे देश में अंग्रेजी का ऐसा दबदबा है कि आये दिन पब्लिक स्कूल खुलते हैं और खुलते ही भीड़, डोनेशन, एडमीशन की समस्याओं को देखते हुए न जाने कौन-कौन से रास्ते अपनाने पड़ते हैं बच्चों के अभिभावकों को।

स्वाभाविक भी है कि बच्चों को अंग्रेजी आनी चाहिए और बहुत अच्छी आनी

चाहिये ताकि वे सिन्धी व हिन्दी वालों से अलग विदेशी भाषा में प्रवीणता हासिल कर हिन्दुस्तान में ही उनसे आगे रहें और प्रगति के पथ पर धीमी चाल से नहीं बल्कि तेज रफ्तार से दौड़ सकें।

भाषा प्रेम के मामले में सिन्धी और तरक्की के मामले मे अंग्रेजी की शिक्षा का पुरजोर देखते हुए ही हमारे सभी नेतागण मंच पर राष्ट्र व मातृभाषा की बात करते हैं और अपने बच्चों की प्रगति के लिए उन्हें अंग्रेजी पढ़ाते हैं। जरूरी भी है सिन्धी अथवा हिन्दी समाचार पत्रों के बहुत ही कम ऐसे संवाददाता होते हैं जो अंग्रेजी के प्रेस सम्मेलनों मे अंग्रेजी मे प्रश्न पूछते हैं। लेखकों को देखिये, वे हिन्दी में लिख लिखकर पारिश्रमिक के रूप में बहुत ही कम पारिश्रमिक पाते हैं और सिन्धी मे तो सिन्धी पत्र-पत्रिकाओं के ब्लाक तक का पैसा लेखक को देना पड़ता है। यदि वही लेख वे अंग्रेजी पत्र-पत्रिका को भेजते हैं तो उन्हे उससे तिगुना-चौगुना भुगतान मिल जाता है। साहित्यकार बंधु हिन्दी मे किताब लिखते हैं तो प्रकाशक उन्हे रुला-रुला कर भुगतान करते हैं या फिर देते ही नहीं और अंग्रेजी की किताब लिखने वालों के तो वारे-न्यारे ही नहीं, बल्कि वह यश के मामले में भी हिन्दी एवं सिन्धी वालों से आगे रहता आया है। सिन्धी भाषा की पुस्तक को स्वयं के पैसे से ही छपवाकर बेचने के लिए सिन्धी लेखक को दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं फिर भी खरीद कर पुस्तक पढ़ने वाला उन्हें पाठक के रूप में ग्राहक नहीं मिलता।

आम बोलचाल में भी लोगों को अंग्रेजी के शब्द ही अधिक प्रभावित करते हैं और बोलने वाले को भी ऐसा प्रतीत होता है कि उसने सामने वाले पर प्रभाव डाल दिया। मसलन, किसी ने आपका काम कर दिया तो आप उन्हें मेहरबानी या धन्यवाद न कहते हुए "थैंक्यू" ही कहना ज्यादा उचित समझते हैं। इसी प्रकार अनुरोध करते समय आप अपने सामने को 'कृपया या मेहरबानी' के स्थान पर 'प्लीज' शब्द का ही प्रयोग करते हैं। यह सब क्यो? क्योंकि अंग्रेजी का महत्त्व न केवल विदेशो में ही है, बल्कि भारत के कोने-कोने मे दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। किसी बात को लेकर आप अधिकारियो से अंग्रेजी में बात करके ही उन्हे अधिक प्रभावित कर सकते हैं। आप कर ही नहीं सकते हैं अपितु वह प्रभावित होगा, क्योंकि वह समझता है कि जो व्यक्ति अंग्रेजी में धाराप्रवाह बात कर रहा है वह पढा-लिखा और अच्छा पढ़ा-लिखा है। चाहे मामला इसके विपरीत ही हो। सिन्धी भाषी अधिकारियों के सामने भी सिन्धी व्यक्ति को मजबूरन अंग्रेजी बोलनी पड़ती है, क्योंकि बहुत ही कम सिन्धी अधिकारी होते हैं जो अपनी मातृभाषा बोला करते हैं।

वैसे भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा राष्ट्रीय भाषा हिंदी एवं सिन्धी विषय को लेकर भी होती है। लेकिन अंग्रेजी वालों की बात ही कुछ और [illegible]
जानने वाले अधिकारी तो बन जाते हैं, लेकिन जब उन्हे बडी-बडी
लेना होता है या उन्हे अपने विचार प्रकट करने होते हैं। बहस कर-

मात खा जाते हैं। अंग्रेजी का कम ज्ञान होने के कारण वे अपने को दूसरों से बौना समझते हुए हीनभावना से ग्रस्त रहते हैं।

इन्हीं सब बातों को मद्देनजर रखते हुए आजकल एक बड़ा जोरदार धंधा चल रहा हैं हमारे देश में। कम लागत में बड़ी आय वाला धंधा हैं पब्लिक स्कूल खोल देने का। ऐसे अंग्रेजी स्कूलों को सरकार की मदद भी हिंदी व सिन्धी के मुकाबले कम परेशानियों से मिल जाया करती है। स्कूल का एक बार नाम हो गया तो आपके वारे-न्यारे। इसके एक नहीं अनेकानेक उदाहरण हैं कि बड़े लोगों के बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में होने के कारण अंग्रेजी स्कूल चलाने वालों को चंदे की कमी नहीं रहती। देने वाले खाली चैक पर दस्तखत करके दे देते हैं एडमीशन के लिए, यही नहीं नकद राशि लिए स्कूलों के चक्कर काटते देखा गया है धन्ना सेठों को। नेताओं व उच्चाधिकारियों को भी अपना प्रभाव दिखाने के लिए अंग्रेजी स्कूल ही दिखते हैं।

जब अंग्रेजी का ऐसा बोलबाला है तो फिर सरकार क्यों नहीं सरकारी स्कूलों व पहली कक्षा से अंग्रेजी की शिक्षा प्रारंभ कर देती हैं। पता चला है कि जयपुर के कुछ राजकीय स्कूलों में उन्होंने ऐसा किया भी है। सरकार को जरूरत है राजस्थान के अन्य सभी सरकारी विद्यालयों में पहली कक्षा से अंग्रेजी भी पढ़ाई जाये ताकि आगे चलकर हिंदी या सिंधी की शिक्षा अर्जित करने वाले अंग्रेजी में भी मात नहीं खाएं-पब्लिक स्कूलों के बच्चों के मुकाबले।

पब्लिक स्कूलों की ओर लोगों के झुकाव को देखते हुए सरकार को यह भी सोचने की आवश्यकता है कि गाँवों में पब्लिक स्कूल खुलवाने के लिए लोगों को विशेष रियायतें देनी चाहिये। यदि किसी गाँव वाले भवन का निर्माण करवाकर सरकार को देते हैं तो सरकार का दायित्व है कि उस स्कूल को चलाए और वहाँ हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। गाँवों से विधायक के रूप में जीतकर आने वाले नेता उस समय इधर-उधर बगलें झांकने लगते हैं जब विधानसभा में कोई बहस अंग्रेजी में होती है या फिर हिंदी के बीच-बीच में अंग्रेजी शब्दों का उपयोग होने लगता है। हिंदी का जानकार एम.एल.ए. यैस....यैस...नो....नो... करके अपनी सीट पर खामोश बैठ जाता है। बेचारा.... अंग्रेजी का मारा...।

हिंदी या सिंधी स्कूलों के बच्चे यदि डॉक्टर, इंजीनियर या प्रशासनिक सेवाओं आदि में चले जाते हैं तो उन्हें बाद में अंग्रेजी सीखनी पड़ती है। जिससे उन्हें अत्यधिक मेहनत व परेशानी का सामना करना पड़ता है। यह बात नेतागण अथवा सरकार को चलाने वाले शिक्षाधिकारी अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए वे अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में पढ़ाया करते हैं ताकि उनका बच्चा प्रारंभ से ही अंग्रेजी सीख ले, जिससे आगे चल कर उसे संघर्ष नहीं करना पड़े। अपने बच्चों को संघर्ष से तो उन्होंने दूर कर लिया लेकिन इस देश के अन्य हिंदी व सिन्धी में पढ़ने वाले बच्चों की संघर्ष

मुक्ति कैसे होगी? यह सोचना होगा हमारे देश व प्रदेश के चलाने वाले नेताओ, शिक्षा अधिकारियों आदि को।

एक विद्वान का कहना है कि 'मानव मस्तिष्क की शिक्षा शैशव के पालने से होती है' तो दूसरे का कहना है कि 'सही प्रजातंत्र वह है जहाँ बच्चों को योग्य बनाने वाली शिक्षा मिलती है।' इसी प्रकार एक बार अरस्तु से पूछा गया कि शिक्षित लोग अशिक्षित से कितने श्रेष्ठ हैं, 'उतने ही', उन्होंने कहा, 'जितने मृतकों से जीवित लोग हैं।' यहाँ पर यह लिखना भी अनुचित न होगा कि 'वह शिक्षक नहीं जो सान्त्वना दे, शिक्षक वह है जो सत्य दे।'

बर्बादी की कगार पर सिन्धी

समूचे भारत में फैला सिंधी समुदाय 1947 में पाकिस्तान से लुटकर भारत आया था। विभाजन के दौरान एक भाषा, एक संस्कृति ने उन्हें बाँधे रखा और यही भाषा व संस्कृति आज भी उनकी सबसे बड़ी थाती है। सिंधी भाषा और शिक्षा ने ही उन्हे जीवित रखा। पर कैसी विडम्बना है कि मौजूदा पीढी अपनी सांस्कृतिक विरासत को भुलाती जा रही है। सिधी समुदाय के ज्यादातर बच्चे हिन्दी, अंग्रेजी तो बोल लेते हैं, पर सिधी नहीं बोल पाते और न ही लिख सकते हैं। मातृभाषा से कटना माँ से कटना है। जिन बच्चो को अपनी मातृभाषा नहीं पढ़ाई जाती, वे आगे चलकर निश्चय ही अपने परिजनो से दूर होते चले जाएँगे।

प्राचीन भारतीय भाषाओं में सिंधी भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। आर्यों ने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के लगभग जब सिंधु घाटी मे पहली बार कदम रखा तो उन्होंने पाया कि यहां कि भाषा आदि आर्यों की अपेक्षा काफी उन्नत है, जैसा कि मोहन-जो-दड़ो व हडप्पा से प्रमाणित होता है। आर्य सिंधु घाटी मे आने से पूर्व सिंधी भाषा तथा वहाँ की संस्कृति से इतने अनभिज्ञ थे कि प्रारंभ मे उन्हे कदम-कदम पर सामान्य से अधिक सघर्ष करना पड़ा। लेकिन धीरे-धीरे वहां रहते हुए वे सिंधी भाषा, वहाँ को सस्कृति एवं रीति-रिवाजों आदि के साथ जुड़ गए। आज विश्व मे ऐसा कोई महाविद्यालय नहीं है जहाँ मोहन-जो-दड़ो की सभ्यता और सस्कृति तथा सिंधु प्रदेश का अध्ययन न कराया जाता हो।

महाभारत मे सिंधी राजा जयद्रथ का होना भी सिंधी भाषा की प्राचीनता का प्रमाण देता है। उत्खनन में प्राप्त अशोक स्तंभ, सम्राट अशोक के राज्य मे भी सिंध प्रदेश व सिधी लोगों व उनकी भाषा साहित्य आदि के अस्तित्व मे होने की गवाही देते आ रहे हैं।

सिंधी वह भाषा एव शिक्षा है जो सिधु के तीर पर सिंध से निकली। सिंधी व साहित्य आदि को हिन्दुस्तान के साथ घनिष्ठ संबधो को नहीं भुलाया जा स क्योकि सिंधु नदी भी भारत की अन्य महान् नदियो की तरह ही महत्त्वपूर्ण

विभाजन के पश्चात भारत भर में फैले सिंधी समुदाय के लिए सरका ने पुनर्वास के पश्चात् उनकी भाषा आदि को कायम रखने

अनुसूची की पंद्रह भाषाओं में सिंधी को भी महत्त्व दिया और 1967 में संशोधन कर जब इस भाषा को लिया गया तो इस निर्णय का पूरे भारते में जोरदार स्वागत किया गया।

इस महत्त्वपूर्ण संशोधन के अलावा सिंधी भाषा को भी अन्य भाषाओं की तरह प्रोत्साहन दिये जाने लगे। जैसे कि शिक्षा मंत्रालय, साहित्य, अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट आदि ने इस भाषा के लिए सिंधी शिक्षा पर जोर दिया। सिंधी शिक्षा के विकास के लिए वर्ष 1979 में राजस्थान व उसके पश्चात् महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश, दिल्ली तथा 1997 में उत्तर प्रदेश में सिंधी अकादमियों की स्थापना की गई। आकाशवाणी द्वारा सिंधी में समाचारों, नाटकों, गीतों का प्रसारण किया जाने लगा। सिंधी भाषा के उत्थान के लिए सिंध की संस्कृति को बरकरार रखने के लिए आकाशवाणी द्वारा विशेष नीति अपनाकर रोज दो बार समाचार एवं एक बार विदेश सेवा प्रसारित की गई।

सरकार द्वारा किये गए इस प्रकार के प्रयासों से अल्प समय में ही सिंधी समुदाय के लोगों को हिन्दुस्तान के अंग एवं उनकी भाषा को भारत की भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इस भाषा में पुस्तकें आदि प्रकाशित करने के लिए भारत सरकार ने एक करोड़ रुपए सालाना स्वीकृत किए।

लेकिन सरकार ने इन महत्त्वपूर्ण कदमों के उपरान्त सिंधी शिक्षा की जड़े ज्यों ही आज़ाद भारत में मजबूत होने लगीं, कि लिपि को लेकर आपस में ही मतभेद प्रारंभ हो गए। एक समूह सिंधी 'अरबी' लिपि का पक्षधर था तो दूसरा 'देवनागरी' लिपि का (देवनागरी मूल रूप से हिन्दी में सिंधी ज़ुबान को लेकर लिखी व पढ़ी जाती है) देवनागरी समर्थकों का कहना था कि 1843 में सिंध पर बिट्रिश शासन की स्थापना से पूर्व देवनागरी लिपि ही सिंधी भाषा की लिपि थी। वर्ष 1853 में अंग्रेजों ने बहुसंख्यक मुसलमानों के दबाव में राजकीय रूप में सिंधी भाषा की लिपि देवनागरी से बदलकर अरबी की। सिंधी संस्कृत कुल की भाषा है और देवानागरी उसकी मूल लिपि है जबकि अरबी विदेशी लिपि है।

इस बारे में वर्ष 1948 में बम्बई में प्रथम अखिल भारतीय सिंधी साहित्य सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में वर्ष 1853 में अंग्रेजों द्वारा थोपी गई अरबी लिपि का त्याग कर देवानागरी लिपि स्वीकृत करने की माँग की गई। वरिष्ठ स्वतंत्रता सैनानी जयरामदास दौलतराम जैसे वयोवृद्ध नेता ने भी देवनागरी लिपि को समर्थन दिया था। जिस कारण वर्ष 1950 में देवनागरी को मान्यता दी गई। परन्तु 1951 में अरबी लिपि के समर्थकों ने देशव्यापी आंदोलन चलाया जिसमें उन्होने देवनागरी को सिंधी शिक्षा से हटाने की माँग की। सरकार ने सिंधी पत्रकारिता व साहित्य के उत्थान के लिए एक करोड़ रुपए मंजूर तो किए, पर फैसला सिंधी भाषियों के नेताओं पर छोड़ दिया। तब से आज तक वह विवाद चल रहा है और इस झगड़े के कारण करोड़ों रुपए सरकार के कोष में पड़े हैं और सिंधी शिक्षा सिसकती हुई अस्पतालों के मुर्दाघरों तक जा पहुँची है। भारत सरकार ने सिन्धी विकास बोर्ड का गठन तो किया है लेकिन वह भी राजनीति के दलदल में फंसा हुआ है। इस बोर्ड से जुड़े सिन्धी साहित्यकारों को सिन्धी भाषा के विकास से अधिक चिंता है अपने निजी स्वार्थों की।

इस विवाद के पीछे आज तक अरबी लिपि के समर्थकों का तर्क है कि वर्ष 1853 से इसी लिपि के होने के कारण सारा प्रकाशित साहित्य, पाठ्य-पुस्तकें, अनुभवी शिक्षक, समाचार पत्र इसी लिपि पर आधारित है तथा सिंध(पाकिस्तान), जो कि उद्यम स्थल है, उससे संपर्क बनाने के लिए सही लिपि (अरबी) आवश्यक है।

इस विवाद से गुटबाजी, कटुता, ईर्ष्या-द्वेष का वातावरण बन गया तथा सिंधी नेताओं में ऐसे लोग जागरूक नहीं हैं, जो दोनों गुटों (अरबी एवं देवनागरी समर्थकों) को समझा बुझाकर सौहार्दपूर्ण वातावरण में कोई सकारात्मक हल निकाल सकें और जिस दिन इसका हल निकल जाएगा, उस दिन से सरकार उन्हें करोड़ों रुपया वार्षिक देना प्रारंभ कर देगी, जो कि सिंधी शिक्षा साहित्य व पत्रकारिता के उत्थान के लिए एक बहुत बड़ी मदद होगी।

आज सिंधी भाषा अपनी जड़ों से कट रही है। सिंधी प्रबुद्ध, संपन्न एवं पुरानी पीढ़ी के वर्ग को अपनी भाषा को कायम रखने के लिए सिंधी बोलने, लिखने व लिखाने के अलावा सिंधी भाषा में अधिकाधिक फिल्मों के निर्माण पर बल दिया जाना बहुत आवश्यक है। विभाजन के पश्चात सिंधियों ने करोड़ों रुपए फिल्मों आदि उद्योगों में फाइनेंस तो कर रखे हैं, लेकिन सिंधी में अब तक वे पंद्रह बीस से अधिक फिल्में नहीं बना पाए हैं। कारण निर्माताओं को घाटा। इस घाटे के पीछे बड़ा कारण है सिंधी शिक्षा का न होना और धीरे-धीरे भाषा का कैंसर जैसे रोग से पीड़ित होते जाना।

इसी प्रकार सिंधी शिक्षा के न होने के कारण आज पुरानी पीढ़ी के लोगों को छोड़कर 45-50 वर्ष तक की आयु तक का अधिकांश सिंधी तबका 'अरबी' सिंधी लिखना पढ़ना तक नहीं जानता और तो और वर्तमान समय के बच्चे तो सिंधी बोलना तक नहीं जानते। कारण, शिक्षा की कमी से घर का वातावरण ही हिन्दी, अंग्रेजी या प्रादेशिक भाषाओं वाला हो गया है। बच्चों के परिजन स्वयं सिंधी में बच्चों से बातचीत नहीं करते। यह बात अच्छी है कि सिंधियों को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ दौड़ना है, लेकिन अपनी मातृभाषा से प्यार करने में संकोच कैसा?

इसी सिलसिले मे मैं मिलता हूँ वर्ष 1956 में स्थापित अजमेर आदर्श विद्या समिति के संस्थापक एवं सचिव झमटमल टिलवाणी से (जिनका अब देहान्त हो चुका है) उन्होने बताया था कि उन्होंने 1970 में एम.बी.एस सिंधी गर्ल्स कॉलेज की स्थापना की थी, जो कि पूरे उत्तरी भारत में सिंधी शिक्षा के लिए एकमात्र संस्थान है। इस कॉलेज में सिंधी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। यही नहीं उनकी संस्था के अधीन अजमेर में आदर्श हायर सैकण्डरी स्कूल, आदर्श विद्या मंदिर मिडिल स्कूल, आदर्श कन्या स्कूल, नशवासी प्राइमरी स्कूल, स्वामी केशवानंद ग्वालानंद प्राइमरी स्कूल, आदर्श बाल मंदिर आदि चल रहे हैं।

इन समस्त स्कूलों में लगभग पांच हजार बच्चो को सिंधी शिक्षा दी जाती है। वे यह सब कुछ सिंधी शिक्षा के उत्थान के लिए करते हैं। लेकिन सरकार उन्हें अनुदान के नाम पर कुल मिलाकर 60 प्रतिशत से अधिक मदद नहीं करती। दो स्कूलों पर तो अनुदान बिलकुल ही नहीं देती।

टिलवाणी ने सिंधी समुदाय के प्रबुद्ध लोगों की उन धारणाओं को गलत

हुए बताया कि सिंधी विषय या माध्यम से शिक्षा लेने वालों का भविष्य नहीं, बल्कि "उज्जवल" है। उन्होंने कहा था कि यह तो छात्र-छात्रा पर निर्भर करता है। हमारे विद्यालय में सिंधी शिक्षा लेने वाले छात्र-छात्राओं की अंग्रेजी एवं हिन्दी भी उतनी ही मजबूत होती है, जितनी कि सिंधी। टिलवाणी का कहना था कि अब तो प्रशासनिक सेवाओं में चाहे आई.ए.एस. हो या अन्य प्रतियोगिताएँ-प्रतियोगी को यह सुविधा है कि वे सिंधी विषय को लेकर इम्तहान दे सकते हैं, जो कि उनके लिए लाभप्रद है। यह शिक्षा लेने वालों के लिए ज्यादा कम्पीटीशन है ही नहीं, साथ ही वे चाहें तो अरबी लिपि में परीक्षा दें अथवा देवनागरी लिपि में।

सरकार द्वारा सिंधी शिक्षा के प्रति बेरुखी का बखान करते हुए टिलवाणी ने खिन्न होते हुए कहा था कि सिंधी समुदाय के पास कोई राजनीतिक शक्ति न होने के कारण सिंधी शिक्षा दिन प्रतिदिन पिछड़ती जा रही है। राजस्थान बोर्ड सिंधी में परीक्षा तो ले लेता है, लेकिन उन्होंने पुस्तकें नहीं छपवाई हैं। वे किसी तरह हिन्दी पाठ्य पुस्तकों का रूपान्तरण करके या नोट्स लिखवाकर बच्चों को परीक्षाएँ दिलवाया करते हैं। बी.ए. या एम.ए. की सिंधी पुस्तकें मिलती ही नहीं।

राजस्थान में सिंधी समुदाय के बाहुल्य जनसंख्या वाले क्षेत्र अजमेर जिले में उनके विद्यालयों के अतिरिक्त कुछ सरकारी विद्यालय भी हैं, जहां सिंधी में शिक्षा दी जाती है। नसीराबाद, ब्यावर एवं किशनगढ़ में भी सिंधी स्कूल हैं। अजमेर को छोड़कर इधर राजधानी जयपुर के सिवाय उदयपुर, जोधपुर एवं कोटा आदि जिलों में भी कई सिंधी भाषी विद्यालय हैं।

जयपुर के प्राइवेट सिंधी विद्यालयों में मुख्यतः मीरा ब्रदरहुड के अधीन चल रहे साधु वासवानी विद्यालय में सिंधी पढ़ाई जाती है। इसी प्रकार एम.सी. सिंधी पंचायती स्कूल में भी सिंधी शिक्षा दी जाती है। उदयपुर में राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त स्कूलों में नवभारत हायर सैकण्डरी सिंधी विद्यालय है, जहां सुगनचन्द ढींगरा नामक शिक्षक सिंधी शिक्षा देते हैं। प्रताप नगर में दूसरा स्कूल रेजीडेंसी सिंधी गर्ल्स सैकण्डरी विद्यालय है, जहां सिंधी पढ़ाई जाने का प्रावधान है। इसी प्रकार जोधपुर में प्राईवेट विद्यालयों में के.के. अभिचन्दानी सिंधी मॉडर्न हायर सैकण्डरी स्कूल है और एक अन्य स्कूल काला मोहल्ला में है। कोटा के गुमानपुरा क्षेत्र में भी सिंधी हायर सैकण्डरी विद्यालय है, जहाँ पढ़ाते हैं-मुरलीधर कटारिया नामक सिंधी शिक्षक।

इधर, राजस्थान सिंधी अकादमी ने अपने सन् 1982-84 के प्रगति विवरण में लिखा है कि वर्तमान समय में सिंधी भाषा पढ़ाने की समुचित व्यवस्था न होने के कारण सिंधी छात्र अपनी मातृभाषा सीखने से वंचित रह गए। अकादमी ने इस प्रकार के छात्रों, युवक-युवतियों एवं प्रौढ़ों को सिंधी भाषा पढ़ने व लिखने का प्रशिक्षण देने के लिए रात्रिकालीन कक्षाएँ चलाने का कार्यक्रम आरंभ किया है। पर अकादमी ने 1984 के बाद नियमित रूप से ऐसी कक्षाएँ नहीं चलाईं। सिंधी शिक्षा के उत्थान की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका के अनुसार 22 फरवरी 1987 को अकादमी की ओर से अजमेर में प्रथम बार अखिल राजस्थान सिंधी शिक्षक संगोष्ठी

का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रान्त के लगभग 500 शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया। राजस्थान के पूर्व शिक्षा मंत्री दामोदरदास आचार्य ने दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया था। इसी प्रकार शिक्षक संगोष्ठिया रखी जाती रही है । वर्ष 1997 में कोटा में शिक्षक संगोष्ठी रखी गई थी ।

अकादमी अध्यक्ष अतिथियो एवं आगन्तुको का स्वागत करते हुए सम्मेलनों में यह माँग भी करते रहे हैं, कि सिंधी विद्यालयों मे सिंधी अध्यापकों के पद स्थापन किए जाए। उर्दू की भांति सिंधी छात्रों को भी राज्य सरकार द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाओ के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाएँ एवं राज्य स्तरीय विभिन्न समितियों में सिंधी विद्वानो साहित्यकारों पत्रकारो एवं कलाकारो को भी मनोनीत किया जाए।

कुल मिलाकर 27 वर्षों तक सरकारी भाषाई विद्यालयों में सिंधी शिक्षक पद पर नौकरी करने वाले मास्टर सुंदरदास (जिनका अब निधन हो चुका है) ने वर्ष 1983 में रिटायर होने के उपरांत निश्चय किया कि वे सिंधियत, सिंधी सभ्यता, संस्कृति, कला भाषा आदि को जिन्दा रखेंगे।

सिंध के राणीपुर शहर में जन्में मास्टर सुदरदास ने बताया कि 1983 से 1990 तक वे सैंकड़ो बच्चों को सिंधी शिक्षा दे चुके हैं जयपुर के कंवरनगर बनीपार्क, नाहरी का नाका क्षेत्रों में वे सिंधी शिक्षा प्रेमियों से मुफ्त में कमरे आदि लेकर बच्चो को सिंधी पढ़ाया करते थे। जिस किसी क्षेत्र में पाँच सात बच्चे सिंधी सीखने की इच्छा प्रकट करते थे, तो वे वहीं एक क्लास चलाना प्रारंभ कर देते थे। इसके लिए उन्होंने सिंधु कला मदिर नामक एक संस्था चला रखी थी तथा छह माह पढ़ाने के उपरांत उस बच्चे को अपनी ओर से ही 'रतन' का प्रमाण पत्र दे देते थे। परन्तु मास्टर सुन्दरदास के निधन के पश्चात् उनकी मानिन्द सिन्धी भाषा को समर्पित और कोई ऐसा सिंधी भाषी प्रेमी जागा भी नहीं है जो निःस्वार्थ भाव से बच्चों को सिंधी भाषा सिखाने का कार्य करे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब सिंधी शिक्षा ही पिछड़ रही है तो फिर सिंधी पत्रकारिता का उत्थान कहाँ से होगा?

पुस्तक में दिए गए सिंधी भाषा के कई पुराने व नए समाचार पत्र या तो बिल्कुल बन्द हो चुके हैं या फिर नियमित रूप से निकल ही नहीं पा रहे हैं। जो निकलते भी हैं तो उनके पाठक नहीं के बराबर रह गये हैं। भारत देश में लोकतंत्र के चौथे खम्भे समझे जाने वाले 'पत्रकारिता' विषय में वर्ष 1997 तक अत्यधिक रुग्ण अवस्था मे पहुच चुकी सिंधी पत्रकारिता के देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि वह दिन दूर नहीं जब सिंधी पत्रकारिता, घुटनभरा जीवन बिताती हुई दम तोड़ देगी और जब भारत देश में से सिंधी पत्रकारिता निष्प्राण ही हो जाएगी तो फिर क्या होगा? वही जो किसी निर्जीव व्यक्ति के साथ होता है अर्थात् सिंधी पत्रकारिता को कफ़न ओढ़ाकर अग्नि को समर्पित कर आएँगे उसके अपने ही सिंधी भाषी लोग। फिर तीये की बैठक होगी उसके बाद होगा बारहवां और वक्त की बढ़ती तेज रफ्तार से आने वाली पीढ़ियो को यह ज्ञात भी न होगा कि कभी भारत में सिंधी पत्रकारिता नाम की कोई चीज भी थी कि नहीं।

अध्याय - 7

अमीर हुए सिन्धी भाषी, गरीब हुई सिन्धी
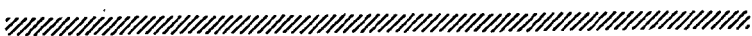
विभाजन के उपरान्त भारत देश मे शरणार्थियों के रूप में आए हिन्दू सिन्धी सम्प्रदाय ने यहां आकर हर क्षेत्र में प्रगति की है। आर्थिक क्षेत्र में तो उनके मुकावले में कोई सानी नहीं है, लेकिन यह सब कुछ अर्जित करने के उपरान्त उन्होंने एक ऐसी विरासत खोई है जो उन्हें धीरे-धीरे अपनी पहचान के लिए ही मोहताज कर रही है, यही नहीं यदि वे अपना कमाया हुआ समस्त धन भी खर्च कर दें तो उनकी वह खोई हुई सम्पत्ति वापिस नहीं आ सकती है - वह है उनकी अपनी मौलिक सिन्धी भाषा।

इस बारे में राजस्थान सिन्धी अकादमी की कार्यकारिणी के सदस्य तथा चेटीचंड सिन्धी मेला कमेटी महानगर जयपुर के दो बार अध्यक्ष रहे तथा कई सिन्धी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े, एवं राजस्थान सिन्धी समाज के संरक्षक डॉ0 जी.टी.भट्ट का कहना है कि वर्तमान समय में सिन्धी भाषा साहित्य व शिक्षा की स्थिति कदापि संतोषजनक नहीं है। उन्होंने तीव्र गति से पतन की ओर जा रही सिन्धी भाषा के बारे में कहा कि इसके लिए विभाजन के पश्चात् सिन्धी समुदाय का भौगोलिक रूप से बिखर जाना तथा राजनैतिक इकाई के रूप में अपने आपको स्थापित न कर पाना सबसे बड़ा कारण है। सिन्धी भाषी प्रारम्भ में आवास व अन्न वस्त्र की प्राथमिक समस्याओं से जूझे। बाद में सरकारी नौकरियों में तथा निजी व्यापार व्यवसाय में सिन्धी भाषा के बिना भी उनकी सफलता संभव होने से उनके लिए भाषा को जीवित रखना अहम् मुद्दा नहीं रहा। अब आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होने के पश्चात् सारे सिन्धी समाज का ध्यान सिन्धी भाषा की स्थिति को सुधारने की ओर जा रहा है। लेकिन आमतौर पर सम्पन्न लोगों द्वारा उन्हें कोई सहयोग नहीं मिलता, इसके उपरान्त भी सिन्धी साहित्यकारों, कलाकारों आदि ने अपनी व्यक्तिगत कुर्बानियों से सिन्धी भाषा की मशाल को बुझने नहीं दिया है। भारत देश में सिन्धी अकादमियों की स्थापना से सिन्धी भाषा के प्रचार

प्रसार के क्षेत्र में जागृति आई है। जो शुभ संकेत है। सबसे बड़ा चिन्ता का विषय इलेक्ट्रानिक मीडिया में सिन्धी भाषा को नगण्य प्रतिनिधित्व प्राप्त है, जबकि इस भाषा को भी 8-वें अनुच्छेद में अन्य मुख्य भाषाओं की तरह राष्ट्रीय स्तर की भाषा का दर्जा प्राप्त है। इस सम्बन्ध में डॉ0 जी टी. भट्ट का सुझाव है कि समस्त सिन्धी अकादमियों का वार्षिक बजट तुरन्त प्रभाव से 50 लाख से कम नहीं होना चाहिए। केन्द्रीय स्तर पर एक सिन्धी मुक्त विश्वविद्यालय व स्वायत्तशासी शिक्षा निगम का गठन किया जाना चाहिए, जिसका प्रारंभिक बजट कम से कम 10 करोड़ का होना चाहिए। क्योंकि सिन्धी समुदाय पूरे देश मे बिखरा पड़ा है। समाज में इस सम्बन्ध में विभिन्न संस्थाओं के द्वारा दर्शाई गई पीड़ा व प्रयास तो प्रशंसनीय हैं परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर नई पीढ़ी को सिन्धी भाषा सीखने पर अभिभावक स्तर पर भागीरथ प्रयासों की महत्ती आवश्यकता है, जिसके अभाव में ये सारी योजनाएं व सुझाव अर्थहीन हो जाएंगी और सिन्धी भाषा अनन्तकाल तक जीवित न रह पाएगी।

सिन्धु संस्कृति प्रसार संस्था जो कि हर वर्ष जयपुर में 10 अप्रैल को सिन्धी भाषा दिवस मनाया करती है के संरक्षक एम. एस. छतानी का कहना है कि हमने जो सिन्ध प्रदेश छोड़ा, वह इसलिए छोड़ा था कि हम भारत देश में जाकर अपनी भाषा व संस्कृति को जीवित रख सकेंगे, लेकिन हम इस मामले में बुरी तरह पिछड़ गए हैं। इस भाषा को बचाने के लिए हमें अपने बुजुर्गों पर निर्भर न रहकर नई पीढ़ी को समझाना होगा कि विरासत के संरक्षण के लिए तुम्हें सिन्धी में ही बात करनी होगी। सिन्धी सीखनी होगी। सिन्धी भाषा के प्रति अपनी हीनभावना को त्यागकर सिन्धी का ही अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा। सिन्धी समुदाय का कोई व्यक्ति यदि किसी अधिकारी पद पर पहुंच जाता है या चिकित्सक आदि हो जाता है तो वह अकेले में अथवा घर पर भी सिन्धी मरीजों से सिंधी में बात नहीं करता। निजी काम से घर पर जाने पर भी ये सामने वाले की बात सिन्धी भाषा में सुनकर हिन्दी में या अंग्रेजी में उत्तर देते है। वे जान-बूझकर ऐसा करते हैं।

उन्हें जो जैसी भाषा में बोले, उस भाषा को यदि वे जानते हैं तो उसमें ही उत्तर देना चाहिए। सिन्धी भाषा का धनी वर्ग सिन्धी भाषा के लिए विशेष काम नहीं कर रहा है। वे सिन्धी संस्थाओ को चन्दा केवल अपने को मालाएं पहनाने के लिए ही दिया करते हैं। वे न तो सिन्धी की पुस्तकें खरीदा करते हैं और न ही सिन्धी भाषा में कैसेट्स आदि। सिन्धी फिल्मों से भी सिन्धी भाषा को जीवित रखा जा सकता है, लेकिन सिन्धी फिल्म निर्माता सिन्धी भाषा में फिल्मे न बनाकर हिन्दी फिल्में ही बनाया करते हैं, यही नहीं बम्बई के फिल्म उद्योग में फिल्मों के फाईनेंसरो में सिन्धी समुदाय के लोग काफी संख्या में हैं, वे भी सिन्धी फिल्मों के लिए पैसा नहीं देते, क्योंकि सिन्धी समुदाय पूर्ण रूप से व्यवसाई तबका है। वे भाषा संस्कृति को जिन्दा रखने के लिए घाटे का सौदा नहीं करते।

भारतीय सिन्धु सभा के राजस्थान प्रदेश के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सिन्धी सोनारा समाज के अध्यक्ष रेवाचंद सोनी का कहना है कि सिन्धी भाषा का गर्त की ओर जाने का एक मुख्य कारण यह समझ में आता है कि सिन्धी उद्योगपति ही नहीं बल्कि सिन्धी समुदाय के नेतागण सिन्धी भाषा के उत्थान के लिए मंचों पर आकर बड़ी-बड़ी बातें तो कर जाते हैं लेकिन वे अपने घरों तक में सिन्धी में बात नहीं करते हैं। मातृभाषा के लिए सिन्धी समुदाय के सम्पन्न वर्ग की मानसिकता ठीक नहीं है। उनकी कथनी और करनी में बहुत फर्क है। सिन्धी भाषा के लेखकों गीतकारों व साहित्यकारों को सिन्धी समुदाय का अमीर तबका 'बेचारा' समझता है, जो कि सिन्धी सम्प्रदाय के लिए बड़ी घातक बात है । यदि वे सिन्धी साहित्यकारों आदि का सम्मान करके उनकी पुस्तकें आदि खरीद कर 'उपहार' के रूप में लोगों को बांटकर कवियों साहित्यकारों आदि का मनोबल बढ़ाएं तो वे और अधिक लिखेंगे तथा पाठकों, जिन्हें वे पुस्तकें उपहार स्वरूप देंगे वे पढ़ेंगे, इससे सिन्धी भाषा को बचाया जा सकता है।

सिन्धी भाषाई शिक्षा विभाग के पूर्व उप जिला शिक्षा अधिकारी एवं राजस्थान सिन्धी अकादमी की सिन्धी भाषा शिक्षण समिति के सदस्य हासानंद जेठानी का कहना है कि विभाजन के बाद जयपुर शहर में कोई 35 सिन्धी स्कूल खोले गए थे तथा राज्य सरकार द्वारा चलाये जाते थे। लेकिन धीरे-धीरे वे सब बन्द हो गए । अब मात्र पांच-सात स्कूल ही रह गए हैं। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि सिन्धी समाज के पास ज्यों-ज्यों पैसा आता गया उनका सिन्धी भाषा से प्रेम खत्म होता गया और उन्होंने अपने बच्चों को सिन्धी स्कूलों से निकालना प्रारम्भ कर दिया। हालत यह हो गई है कि अब सिन्धी पढ़ाने के लिए सिन्धी स्कूल वालों को छात्रों को ढूंढना पड़ता है। गरीब तबके के लोग सिन्धी स्कूलों में पढ़ रहे हैं और वे ही सिन्धी भाषा व संस्कृति को जीवित रखने के लिए अहम् भूमिका निभा रहे हैं। बाकी लोग तो केवल मंचों तक ही सिन्धी भाषा की बड़ी-बड़ी बातें करते दिखाई देते हैं। उनका कहना है कि कई सिन्धी समारोहों , सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में सिन्धी समुदाय के बड़े-बड़े नेता सिन्धी के उत्थान के लिए हिन्दी या अंग्रेजी में भाषण देते हैं।

उन्होंने तत्कालीन सांसद आचार्य भगवान देव की तारीफ करते हुए कहा कि एक बार उन्होंने 'संसद' में अपना अभिभाषण सिंधी भाषा में दिया था, जब आचार्य भगवानदेव को कहा गया कि सिन्धी में भाषण क्यों दे रहे हो तो उन्होंने उत्तर देते हुए कहा कि तमिल, तेलुगु आदि के सांसद जब अंग्रेजी में बोल सकते हैं तो वे अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं बोल सकते, जबकि सिंधी भाषा भी भारत के संविधान में मान्यता हासिल कर चुकी है।

भारतीय सिंधु संगठन के संस्थापक एवं सनातन कला मंदिर के संस्थापक भगवान 'बेवस' का कहना है कि सिंधी समुदाय का पढ़ा-लिखा तबका अपने को अपनी मातृभाषा

से भी बड़ा मानता है। सिंधी समुदाय को स्वार्थी कौम बताते हुए बेबस ने कहा कि दुकानदार असिंधी भाषी ग्राहकों के सामने अपने कर्मचारी, भाई अथवा साथी से सिंधी में बात करके कहते हैं कि इतने पैसा लेना। यानी कि छुपाने की बात तो वे सिंधी मे करते हैं, फिर ग्राहक के जाते ही आपस में ही हिंदी या दूसरी भाषा में बोलने लगते हैं। सिंधी माताएं अपने बच्चों से सिंधी में बात न करके अंग्रेजी में 'हेलो हाऊ आर यू स्वीटी या 'हाऊ डी' (हाऊ डू यू डू) कहा करती हैं। जबकि शिक्षा माता के चरणों से आरम्भ होती है और शैशवकाल में शिशुओं से मां का कहा गया प्रत्येक शब्द उनके चरित्र निर्माण में सहयोगी होता है। बेबस ने सिंधी सम्पन्न व्यवसाई वर्ग पर आक्रमण करते हुए बताया कि सिंधी धनी लोग अपने ग्राहकों को 45 रुपए वाली डायरी या 20 रुपए वाला कैलेण्डर या 100 रुपए वाली अलार्म घड़ी नववर्ष या दीपावली पर उपहार में देता है, लेकिन वे अपने सिंधी भाषा ग्राहकों को सिंधी भाषा के उत्थान के लिए ऑडियो कैसेट या कोई सिंधी भाषी पुस्तक कभी नहीं देते । यदि वे अन्तर्मन से सिधी भाषा का उत्थान चाहते हैं तो उन्हें ऑडियो कैसेटों या पुस्तकों पर वार्षिक कैलेण्डर आदि छपवाकर अपने सिंधी ग्राहकों को सादे कैलेण्डर, अलार्म घड़ी या डायरी के स्थान पर दे सकते हैं। सादे या चित्रयुक्त कैलेण्डर वगैरा तो उनके ग्राहकों के पास एक वर्ष तक ही रहता है, जबकि यदि ये पुस्तके वगैरा देंगे तो वह उनके ग्राहकों के पास अनन्तकाल तक सुरक्षित ही नहीं रहेगी, बल्कि उनके बच्चे व भावी पीढ़ी उन पुस्तकों को पढ़-पढ़कर सिंधी भाषा को जीवित रखने में भागीदार बनेंगे।

सिंधी भाषी व्यवसाई टीकमदास दालवानी ने सिंधी भाषा के बारे में कहा है कि सिंधी भाषा का इतिहास 'मोहन-जो-दड़ो' से लेकर है। हजारों वर्ष पुरानी इस सिंधी भाषा को सिंध से अरबी लिपी का प्रयोग किया जाता रहा है। अब हम भारत देश का एक अभिन्न अग बन चुके हैं तथा अब हम हर हाल मे 'देवनागरी लिपि' का प्रयोग करके ही सिंधी भाषा को बचा सकते हैं, क्योंकि देवनागरी लिपि को आज हर बच्चा तथा नई पीढ़ी पढ़ने-लिखने में सक्षम है। उन्हे सिधी भाषा के लिए विशेष रूप से अलग पढ़ने की जरूरत नहीं है। यदि उनकी ज़ुबान सिंधी को है तो वे सिंधी साहित्य आदि को पढ़-लिख व समझकर सिंधी भाषा की डूबती नैया को देवनागरी लिपि रूपी पतवार से खेचकर उसे वापिस बाहर ला सकते हैं। हालांकि विगत 50 वर्षों में सिंधी भाषा निर्धनों के घरों को छोड़कर बाकी धरों में जर्जर स्थिति में पहुंच चुकी है। लेकिन फिर भी यदि प्रयास किया जाए तो सिंधी भाषा अनन्तकाल तक जीवत रह सकती है।

अखिल भारत सिंधी बोली व साहित्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राजस्थान सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष सुंदर अगनानी का मानना है कि सिंधी भाषा सचमुच गरीबी के दौर से गुजर रही है, इसके लिए उनकी संस्था पुरजोर पर कोशिश कर रही है कि भाषा की जीवंतता को वापिस लाया जाए। इसके लिए उन्होंने अक्टूबर 1997 में जयपुर

भारतीय सिन्धु सभा के राजस्थान प्रदेश के उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सिन्धी सोनारा समाज के अध्यक्ष रेवाचंद सोनी का कहना है कि सिन्धी भाषा का गर्त की ओर जाने का एक मुख्य कारण यह समझ में आता है कि सिन्धी उद्योगपति ही नहीं बल्कि सिन्धी समुदाय के नेतागण सिन्धी भाषा के उत्थान के लिए मंचों पर आकर बड़ी-बड़ी बातें तो कर जाते हैं लेकिन वे अपने घरों तक में सिन्धी में बात नहीं करते हैं। मातृभाषा के लिए सिन्धी समुदाय के सम्पन्न वर्ग की मानसिकता ठीक नहीं है। उनकी कथनी और करनी में बहुत फर्क है। सिन्धी भाषा के लेखकों गीतकारों व साहित्यकारों को सिन्धी समुदाय का अमीर तबका 'बेचारा' समझता है, जो कि सिन्धी सम्प्रदाय के लिए बड़ी घातक बात है । यदि वे सिन्धी साहित्यकारों आदि का सम्मान करके उनकी पुस्तकें आदि खरीद कर 'उपहार' के रूप में लोगों को बांटकर कवियों साहित्यकारों आदि का मनोबल बढ़ाएं तो वे और अधिक लिखेंगे तथा पाठकों, जिन्हें वे पुस्तकें उपहार स्वरूप देंगे वे पढ़ेंगे, इससे सिन्धी भाषा को बचाया जा सकता है।

सिन्धी भाषाई शिक्षा विभाग के पूर्व उप जिला शिक्षा अधिकारी एवं राजस्थान सिन्धी अकादमी की सिन्धी भाषा शिक्षण समिति के सदस्य हासानंद जेठानी का कहना है कि विभाजन के बाद जयपुर शहर में कोई 35 सिन्धी स्कूल खोले गए थे तथा राज्य सरकार द्वारा चलाये जाते थे। लेकिन धीरे-धीरे वे सब बन्द हो गए । अब मात्र पांच-सात स्कूल ही रह गए हैं। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि सिन्धी समाज के पास ज्यों-ज्यों पैसा आता गया उनका सिन्धी भाषा से प्रेम ख़त्म होता गया और उन्होंने अपने बच्चों को सिन्धी स्कूलों से निकालना प्रारम्भ कर दिया। हालत यह हो गई है कि अब सिन्धी पढ़ाने के लिए सिन्धी स्कूल वालों को छात्रों को ढूंढना पड़ता है। गरीब तबके के लोग सिन्धी स्कूलों में पढ़ रहे हैं और वे ही सिन्धी भाषा व संस्कृति को जीवित रखने के लिए अहम् भूमिका निभा रहे हैं। बाकी लोग तो केवल मंचों तक ही सिन्धी भाषा की बड़ी-बड़ी बातें करते दिखाई देते हैं। उनका कहना है कि कई सिन्धी समारोहों , सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में सिन्धी समुदाय के बड़े-बड़े नेता सिन्धी के उत्थान के लिए हिन्दी या अंग्रेजी में भाषण देते हैं।

उन्होंने तत्कालीन सांसद आचार्य भगवान देव की तारीफ करते हुए कहा कि एक बार उन्होंने 'संसद' में अपना अभिभाषण सिंधी भाषा में दिया था, जब आचार्य भगवानदेव को कहा गया कि सिन्धी में भाषण क्यों दे रहे हो तो उन्होंने उत्तर देते हुए कहा कि तमिल, तेलुगु आदि के सांसद जब अंग्रेजी में बोल सकते हैं तो वे अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं बोल सकते, जबकि सिंधी भाषा भी भारत के संविधान में मान्यता हासिल कर चुकी है।

भारतीय सिंधु संगठन के संस्थापक एवं सनातन कला मंदिर के संस्थापक भगवान 'बेबस' का कहना है कि सिंधी समुदाय का पढ़ा-लिखा तबका अपने को अपनी मातृभाषा

से भी बड़ा मानता है। सिंधी समुदाय को स्वार्थी कौम बताते हुए बेबस ने कहा कि दुकानदार असिंधी भाषी ग्राहकों के सामने अपने कर्मचारी, भाई अथवा साथी से सिंधी में बात करके कहते हे कि इतने पैसा लेना। यानी कि छुपाने की बात तो वे सिंधी मे करते हैं, फिर ग्राहक के जाते ही आपस मे ही हिंदी या दूसरी भाषा में बोलने लगते हैं। सिंधी माताएं अपने बच्चों से सिधी मे बात न करके अंग्रेजी में 'हेलो हाऊ आर यू स्वीटी या 'हाऊ डी' (हाऊ डू यू डू) कहा करती हैं। जबकि शिक्षा माता के चरणों से आरम्भ होती है और शैशवकाल मे शिशुओं से मां का कहा गया प्रत्येक शब्द उनके चरित्र निर्माण मे सहयोगी होता है। बेबस ने सिंधी सम्पन्न व्यवसाई वर्ग पर आक्रमण करते हुए बताया कि सिंधी धनी लोग अपने ग्राहको को 45 रुपए वाली डायरी या 20 रुपए वाला कैलेण्डर या 100 रुपए वाली अलार्म घड़ी नववर्ष या दीपावली पर उपहार में देता है, लेकिन वे अपने सिंधी भाषा ग्राहकों को सिंधी भाषा के उत्थान के लिए ऑडियो कैसेट या कोई सिंधी भाषी पुस्तक कभी नहीं देते । यदि वे अन्तर्मन से सिंधी भाषा का उत्थान चाहते हैं तो उन्हें ऑडियो' कैसेटों या पुस्तकों पर वार्षिक कैलेण्डर आदि छपवाकर अपने सिंधी ग्राहकों को सादे कैलेण्डर, अलार्म घड़ी या डायरी के स्थान पर दे सकते हैं। सादे या चित्रयुक्त कैलेण्डर वगैरा तो उनके ग्राहकों के पास एक वर्ष तक ही रहता है, जबकि यदि वे पुस्तकें वगैरा देंगे तो वह उनके ग्राहकों के पास अनन्तकाल तक सुरक्षित ही नहीं रहेगी, बल्कि उनके बच्चे व भावी पीढ़ी उन पुस्तकों को पढ़-पढ़कर सिंधी भाषा को जीवित रखने में भागीदार बनेगे।

सिंधी भाषी व्यवसाई टीकमदास दातवानी ने सिंधी भाषा के बारे में कहा है कि सिंधी भाषा का इतिहास 'मोहन-जो-दड़ो' से लेकर है। हजारों वर्ष पुरानी इस सिंधी भाषा को सिंध से अरबी लिपी का प्रयोग किया जाता रहा है। अब हम भारत देश का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं तथा अब हम हर हाल में 'देवनागरी लिपि' का प्रयोग करके ही सिंधी भाषा को बचा सकते हैं, क्योंकि देवनागरी लिपि को आज हर बच्चा तथा नई पीढी पढ़ने-लिखने में सक्षम है। उन्हें सिंधी भाषा के लिए विशेष रूप से अलग पढ़ने की जरूरत नहीं है। यदि उनकी जुबान सिंधी की है तो वे सिंधी साहित्य आदि को पढ़-लिख व समझकर सिंधी भाषा की डूबती नैया को देवनागरी लिपि रूपी पतवार से खेंचकर उसे वापिस बाहर ला सकते हैं। हालांकि विगत 50 वर्षों मे सिंधी भाषा निर्धनों के घरों को छोड़कर बाकी धरों में जर्जर स्थिति में पहुंच चुकी है। लेकिन फिर भी यदि प्रयास किया जाए तो सिंधी भाषा अनन्तकाल तक जीवत रह सकती है।

अखिल भारत सिंधी बोली व साहित्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राजस्थान सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष सुंदर अगनानी का मानना है कि सिंधी भाषा सचमुच गरीबी के दौर से गुजर रही है, इसके लिए उनकी संस्था पुरजोर पर कोशिश कर रही है कि भाषा की जीवंतता को वापिस लाया जाए। इसके लिए उन्होंने अक्टूबर 1997 में जयपुर

में साहित्यकारों का राष्ट्रीय सम्मेलन करवाया था । उसमें देश से कोई 150 साहित्यकारों ने जयपुर आकर अपने-अपने विचार व्यक्त किए कि आखिर किस तरह हम अपनी भाषा को दरिद्रता से उठाएं। उन्होंने बताया कि बंबई के कीरत बाबाणी के साथ इंदौर, उज्जैन, भोपाल, अहमदाबाद, बड़ौदा, हैदराबाद आदि नगरों का दौरा कर उन्होंने सिंधी साहित्यकारों, पत्रकारों व लेखकों आदि से विचार-विमर्श किया। लेकिन मूल बात यह है कि बातें तो सभी करते हैं, अपनी राय देते हैं, परन्तु व्यवहारिक रूप से कोई भी सकारात्मक कार्य नहीं कर रहा है। इसलिए सिंधी भाषा पतन की ओर जा रही है। देश की सभी सिंधी अकादमियां ही नहीं बल्कि केंद्र सरकार की राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद भी भाषा के उत्थान में कम, राजनीति में ज्यादा विश्वास करने लगी है। ये संस्थाएं सरकार से करोड़ों रुपया पाकर सिंधी भाषा के विकास के नाम पर साहित्यकारों आदि को अलग-अलग नगरों में पर्यटन कराने पर ज्यादा पैसा खर्च कर दिया करती है। गोष्ठियों सम्मेलनों आदि में निर्णय तो सकारात्मक होते हैं, लेकिन अपने-अपने घरों में पहुंचने के उपरांत सिंधी लेखक भाषा के विकास को तो भूल जाते हैं और व्यस्त हो जाते हैं अपने-अपने काम धंधों में और धरी रह जाती है सिंधी भाषा उनके बस्तों में । जो कि सिंधी भाषा व सिन्धी पत्रकारिता के अस्तित्व के लिए खतरा है ।